सत्ती बोदी
डॉ. अमरेन्द्र

सत्ती बोदी

अंगिका उपन्यास

सत्ती बोदी

अंगिका उपन्यास

लिखनियार

डॉ. अमरेन्द्र

प्रथम संस्करण
२०२१

सर्वाधिकार ©
लेखकाधीन

प्रकाशक
समीक्षा प्रकाशन
जे. के. मार्केट, छोटी कल्याणी
मुजफ्फरपुर (बिहार)-८४२ ००१
फोन : ०६३३४२७६६५७, ०६६०५२६२८०१
E-mail : samikshaprakashan@yahoo.com
www. samikshaprakashan.blogspot.com

दिल्ली कार्यालय
आर-२७, रीता ब्लॉक
विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-९२
फोन : ०६६११४७८६६८

शब्द-संयोजन
सतीश कुमार

आवरण-चित्र
unsplash.com/@dhilip2000 से साभार

मुद्रक
बी.के. ऑफसेट,
शाहदरा, दिल्ली।

मूल्य
एक सौ पचास रूपये मात्र

SATTI BODI (Angika Novel) By Dr.Amrendra Rs.150/-

जे हिन्दी कथा-साहित्य के
आकाशदीप बनी गेलों छै
शिव कुमार शिव
लेली!

—अमरेन्द्र

सत्ती बोदी

''सुन, तोरा सिनी कें एक ठो कहानी सुनाय छियौ'' माधो मिसिर नें आपनों दायाँ तर्जनी सें दायाँ आँख मुनी लेलें छेलै, जेना कहानी के कोय बात याद करै के कोशिश करतें रहें, आरो फेनु मूंडी कें एक झटका दै, आँख खोलतें कहनें छेलै, ''गाँव के तें नाम नै याद आवी रहलों छै, मतरकि है खिस्सा छेकै आसे-पासे गाँव के; चाहे पँचपुरा के रहौ, आकि बहबलपुर के आकि आपने गाँव के। मतरकि है आपनों गाँव के खिस्सा नै हुएँ पारें। ई छोटों गाँव आरो सबटा पंडिते के घोंर; तीन घोंर खाली तोरों कैथों के, की अमर—ठीक छै की नै? ई कहानी खाली हमरों गाँव कें बदनाम करै लेली उड़ाय देलों गेलों छै—बाबू साहब सिनी के करतूत होतै। अभियो सुनवे नी करै छैं—कहै छै, महापातर कहिया के पंडित भै गेलै। पंडित के मतलब होय छै—पुजारी, जे मंदिर में पूजा करावें। महापातर समसानी में पूजा करावै छै, ऊ पंडित कहिया के! आबें तोंही बताव अमर, पंडित पँचपुरा दुर्गा मंदिर के रहें कि चीर के मुर्दघट्टी में पुराण पढ़ैवाला—पंडित नी भेलै।''

''माधो, तोंय कोय कहानी बताय लें जाय रहलों छेलैं, है कोंन पुराण लै कें बैठी रहलैं?'' अमर नें ओकरा टोकलें छेलै। वैं माधो कें खूब जानै छै, जोंन बात कें लैकें ऊ उठै छै, ओकरा पर कभियो टिक्है नै पारें। कहतें-कहतें ऊ वहाँ पहुँची जाय छै, जहाँ पहिलकों बात ओकरा कुछुवे नै याद रहै छै आरो फेनु ऊ खिस्सा छोड़ी कें कोय दोसरों-तेसरों गप्प उठाय लै छै।

अमरजीत के टोकला पर माधों कहना शुरू करलकै, ''हों, तोहें ठीक टोकलैं, कहानी कोय्यो गाँवों के रहें, मजकि छेकै एकदम सच्च— चार

दोस्त, चारो पकिया यार, पूजा सें लै कें चोरी तांय साथें रहैवाला। वैमें पंडित के बिचलका बेटा संतोषो एक मित्र.....एक दिन चारहौं प्लान बनैलकै कि आयकों रात डगरा धोबी के पाठा कें जब्हें करलों जाय। फेनु की छेलै—चारो ओकरों घरों में घुसलै आरो ऊ टापे-टुप अन्हरिया राती में ऐंगनोंवाला टटिया कल्हें-कल्हें हटाय कें पाठा उठाय लै आनलकै आरो हसिया-कचिया सें ओकरा दकची-हुकची, छीली-छीली कें रान्ही लेलकै। फेनु की छेलै, राते भर में चार सेरों के माँस चारो के पेटों में अँटी गेलै। विहान होलै, तें डगरा धोबी के कनियैन गाँव भरी में काननाा-बाजना शुरू करलकी—'हमरों गदहा बच्चा कें राती टटिया खोली कें कौनें चोराय लेलकै। लौटाय दौ, नै तें यशपुरा जाय कें काली माय कें कबूलती कबूली ऐवै, हों.....' आबें तें चारो मित्र खाली एक दूसरा के मुँ टुकटुक देखै—पाठा के बदला गदहा-बच्चा के माँस रात भर चिबैतें रहलों छेलै। जीहा के सवाद बदलना शुरू भै गेलों छेलै।''

एतना सुनीकें अजनसिया, कल्लर, सकीचन आरो अमरजीत तें हँसतें-हँसतें जेना लोटपोट। मतरकि माधो के मुँहों पर कटियो टा हँसी नै छेलै, जेना वैं कोय बड़का गंभीर बात बताय रहलों रहें। केकरो हँसी पर बिना ध्यान देल्हें वैं आगू कहलकै, ''आबें तें चारो कें ई शंका सतावें लागलै कि है जे पाठा के जग्घा में गदहा खाय लेलें छै, ओकरों छूत सें ऊ सब केना बचतै? तबें पंडित के बेटा छोड़ी कें तीनो साथीं विचारलकै कि है बात पंडिये जी कें कही देलों जाय, हुनिये है पापों के निवारण करें पारै, कैन्हें कि है कामों में हुनकों बेटाहौ शरीक छै।

''फेनु की बात छेलै, चारो दोस्त पंडित जी के पास पहुँची गेलै। सब बात सुनी कें पंडी जी माथों ठोकी लेलकै, मतरकि बात तें हुनकों बेटाहौ के छेलै। से हुनी बोललै, 'अच्छा घबड़ाय के कोय बात नै छै। एक मंतर छै, जे ई पापों सें मुक्ति दिलावें पारें। फेनु की छेलै—तड़ातड़ ऐंगनों गोबर सें जेना-तेना निपैलों गेलै। आसन बिछैलों गेलै। धूपो-धुमनों जलैलों गेलै। पोथी-पतरा खोललों गेलों। पंडित जी आसन पर बैठला आरो जनेऊ पर तीन-चार लम्बा हाथ फेरतें मंतर पढ़लकात, 'चार चोर, एक संतोष, गदहा खैलें कुछु नै दोष।' आरो कहलकै—जो, आबें चारो गदहा खाय के पापों सें मुक्ति पावी गेलों छैं।''

अबकी तें सकीचन, बलजीत साथें माधो भी आपनों हँसी नै रोकें पारलकै आरो ठठाय कें हाँसी पड़लै। कि तखनिये अजनसिया गंभीर होय गेलै, आरो आपनों निचलका ठोरों कें दबैतें कहलकै, ''मतरकि है कहानी कहै के की मतलब? माधो तोहें बिना मतलब के कोय कहानी तें कहें नै पारें।''

''ठीक पकड़लैं तोहें, अजनसिया; बिना मतलब के तें आँखी के पिपनियो नै हिलै छै। देख, सिंधनाथ पंडी जी तें लम्बा-लम्बा हाँकी गेलै कि देवघर के बाबा पर सुलतानगंज के गंगा-जल चढ़ें—तभिये पुन्न, नै तें सौ कोस के जतरा बेरथ। देख अजनसिया, जबें पंडी जी के मंतर पढ़ला सें पेटों के गदहा पाठा होय जावें पारें, तें है चीर के पानी काँवर में जग्घों पैत्हैं गंगाजल कैन्हैं नी बनें पारें। यहाँ सें लैकें देवघर तांय जबें बोलबम के मंत्र जाप होतै, तें चीर के जलो जरूरे गंगाजल बनी जैतै, की है बात तोरासिनी कें समझै में नै आवै छौ।''

माधो के बात सुनत्हैं सब गंभीर होय उठलों छेलै। सकीचन ठोरों सें अंगुली हटैतें कहलकै, ''माधो गलत की बोली रहलों छै। सुल्तानगंज सें गंगाजल भरों कि चीर-चानन सें, बात सब बराबरे छै। मोंन पवित्र होना चाहियों। फेनु सुल्तानगंज के बदला जों हमरा सिनी मसूदन बाबा के दुआरिये सें काँवर उठाय छियै, तें सोची लें आधा जतरा के थकान तें हेन्हैं बाबा भोलेनाथ कम करी देलकै। की अमरजीत, जरा बातों पर गौर करैं।''

''लें, कपिलदेवो आवी रहलों छै, आबें ओकरों की मत बनै छै, यहू जानी लेना चाहियों, हमरा सिनी लें तें माधों के मत ही फिट बुझावै छै।'' अमरजीतें आपनों कोकड़ी सहलैतें बोललै।

ओकरों बोलना छेलै कि सब के नजर कपिल मिश्र के दिस गेलै, जे हाथों में एकटा लम्बा बेंत घुमैलें-घुमैलें आवी रहलों छेलै। कपिल मिश्र के नगीच ऐत्हैं सकीचन बोललै, ''की कपिल, आय बेमौसम हाथों में बेंत देखै छियौ। घरों में कुछ होलौ की?''

''अरे घरों में की होतै, मुहल्लावाला सें होलै। घरों के पिछुवाड़ी में हौ जे बड़का नाला छै नी, नै जानौं कहाँ सें वैमें पाँच हाथों के साँप छत्तर काढ़ी रहलों छेलै। देखवैय्या के ठसमठस भीड़। सब के मुँहों सें एक्के बोली—धन्य हमरों भाग, जे भोले बाबा आपनों दर्शन करैलकै। की कहियौ,

सँपवा, एत्तें-एत्तें आदमी देखी कें हमरों घरों के पिछलका भीती पर चढ़ना शुरू करी देलकै। कि आव नै देखलियै ताव, हम्में कुल्हड़िया के पान-दुकानी के ई बेंत खिंचलियै आरो साँपों दिस बढ़ैलियै। हमरों हाथों में बेंत देखी कें सब बोलें लागलै, 'हे हे, कपिल, है की करै छों, सावन में साँप मारै छौ। है की साँप छेकै, भोलेनाथ ही छेकै।' आबें सोचें सकीचन, हम्में देखी रहलों छियै कि साँप हमरों दिवाली पर चढ़ी रहलों छै, आरो धूरी घोष हमरा बताय रहलों छेलै कि भोलेनाथ छेकै। अरे, जों भोलेनाथ छेलै, तें उठाय कें आपनों घोंर लै जैतियै। से तें नै। हौ तें विरिज काका के मंझलका बेटा छेलै, नै तें तखनिये जवाब दै देतियै।''

''तबें होलै की?''

''अरे होतियै की? हम्में दूरे सें साँप कें ई लम्बा बेंत सें हटैलियै। आबें तें साँप उलटी कें चेतु मिसिर के दुआरी दिस सरपट मुड़लै। फेनु की छेलै, अभी तांय जे चेतु मिसिर जय भोले नाथ करी रहलों छेलै, ऊ सीधे आपनों दरवाजा बंद करै लें दौड़लै। केवाड़ बंद होय के फटाक सना आवाज होलै, तें सँपवों वहा तेजी सें फेनु मुड़लै आरो हौ जे कापरी काका के फुलवारी छै नी, साँप ओकरहै में फुँफकारलें ढुकी गेलै...कापरीका के फुलवारी में साँप ढुकै के मतलब छै, साँप केकरो घरों में कखनियो घुसें पारें। से सब फुलवारी कें चारो दिस सें घेरी लेलें छै। हम्में देखी लेलें छियै, आबें केकरो मुँहों पर सावन में साँप-दर्शन के महिमा नै छेलै आरो हमरा यहू मालूम छै कि हौ खोखन काका रहें कि कापरी काका आकि चेतु मिसिर ही कैन्हें नी रहौ; सब साँप के साथ कौन व्यवहार करैवाला छोंत। वही सें हम्में हिन्नें चल्लों ऐलियौ, नै तें आब्हौ पारतियै की। तें की बात भेलौ, से सुनाव!''

''है बात तें तैय्ये छै कि काँवर लैकें देवघर जाना छै, बस नया बात एतन्है टा जुड़लै कि सुल्तानगंज सें गंगाजल भरै के बदला चीर नद्दी के ही जोंल काँवर में भरलों जाय आरो मसूदन बाबा के दुआरिये सें बोल बम के नारा देलें सीधे देवघर।''

''एकदम फिट सोचलें छैं। हम्में तें पहिलो कहलें छेलियौ कि सुल्तानगंज के गंगा आरो मंदार के चीर में फरक करना मुरखौआ बात छेकै। वहाँ अजगैवीनाथ के मंदिर छै, तें यहाँ सीधे भोला बाबा के घोंर, मंदार। वहाँ

जह्नुऋषि तप करै छेलै, तें ई चीर नदी पर परशुराम धनवंतरी ऋषि तप करै छेलै। है हम्में नै कहै छियौ, पुराण कहै छै, पुराण। तोरा सिनी के निर्णय एकदम फिट छौ, आरो आबें हम्में फेनु हुन्नें कापरीका के फुलवारी दिस जाय छियौ। आदमी के सोभाव जानवे करै छैं, ओकरा पर चेतों मिसिर, अरे कहीं हमरों घरों दिस नै ऊ साँपों कें सिधियाय दै आरो सब हर-हर भोले बाबा करलें आपनों घोंर दिस चलै छियौ सकीचन, आबें साँझै भेंट, बोल बम।''

आरो सब्भैं एक्के साथें नारा देलकै, ''बोल बम !''

(२)

सावन बीती गेलों छेलै, भादो भी, आसिन भी आरो फेनु कातिको। सत्ती आपनों ऐंगन के औसरा पर बैठली-बैठली सोचै छै, ''आरो के बात तें आरो छै, मतरकि हमरों कोखी के जनमलों है अमर, की रं आपनों पेटों में है बात कें गुड़मुड़ियैलें रही गेलै ! हे भगवान, जों कजायत हेनों-हेनों होय जैतियै, तें ई अभागिन के दसों दिशाहै नी बंद होय जैतियै।'' आरो फेनु ऊ आपनों अँचरा आपनों हथेली में राखी दोनों हाथ भगवान दिस उठैतें कहलकै, ''देखियों देव, माँगों के सिनूर नै राखें पारलें, तें कोय बात नै, कोखी के सिंगार बचैलें राखियों।''

सत्ती के ठीक उतरवारीवाला ऐंगनों में घमासान मचलों होलों छेलै। उतरवारीवाला ऐंगनों ओकरों भैसूर आशु बाबू के छेलै। पहिले तें दोनों ऐंगनों एक्के छेलै, आठ-दस कट्ठा के ऐंगन, जेकरों दक्खिन दिशा में लम्बा-लम्बी दू कट्ठा में बनलों एक्के कोठरी में बीचों सें दीवार दैकें दू बड़ों-बड़ों कोठरी बनाय देलों गेलों छेलै, आरो कोठरी के ठीक बीचवाला दीवार के सोझे-सोझी ऐंगना में एक मोटों रँ माँटी के दीवार दै देलों गेलों छेलै, जेकरा सें दू परिवार के अलगे-अलग रहै के साफ-साफ बोध होय छेलै। दीवार के सिरा पर छोटों-छोटों बाँसों पर परछत्ती बनलों होलों छेलै आरो दीवारिये सें सटलों-सटलों देहरी, जेकरा पर एक आदमी तें आराम सें

करवट-उरवट लिऐ पारें, सुतै पारें; चौड़ाई एतन्है छेलै आरो लम्बाई तें एतन्है कि पाँचो-छों आदमी लम्बा-लम्बी सुती रहें, तहियो जग्घों खालिये बची रहें। आँगन सें लागलों औसरा बच्चा के पढ़ै-लिखै सें लैकें मोॅर-मरदाना के खाना-पीना तक में काम आवी जाय छेलै।

आय वहें औसरा पर सिमरन, भदेवा, मंगलिया, बदरी साथें सकीचन, कपिल, गुलगुलिया आरनी जमलों होलों छेलै, आपनों-आपनों पक्षों में सफाई देतें। बीचों में अमरजीत के बड़का बाबू आशुतोष घोष चुपचाप सबके बात सुनी रहलों छेलै, बोलै कुछ नै छेलै। भदेवा आरनी में से जेकरा भी जे कुछ कहना रहै, झट सना देहरी सें उठी कें हुनकों सामना में आवी आपनों हाथ हिलाय-हिलाय कहें लागै। जबें पारी बदरी के ऐलै, तें वैं एक दाफी देहरी पर बैठलों सिमरन सें लैकें गुलगुलिया तक कें देखलकै। फेनु कहें लागलै, ''बड़का दा, यै सबमें जे भी जे कुछ बोललौं, एकदम झूठ बोललौं। अमरजीत कें हमरै में सें कोय सनकैलें छेलै कि जों हियाव छौ, तें ई शिवगंगा पार करी दिखाव। सौन-भादों में चीर नदी पार करवों आसान छै, मतरकि शिवगंगा कें हेली पार करवों; समुद्र कें लाँघबों छेकै। ई आपनों गाँव के तालापुल नै छेकै कि हिन्नें सें कुदलौं आरो हुन्नें सें निकललौं।''

''आबें की कहियौं, अमरा नें आव नै देखलकै ताव, धौंस दइये तें देलकै, धोतिये पिन्हलें आरो पच्चीस-तीस शेरवाला रेहू मछली नाँखी शिवगंगा में छप-छप करतें बीच लाट तांय बिना पलक मारत्हैं पहुँची गेलै। मतरकि छप-छप करै में ही धोती ठो ढील पड़ी गेलै आरो अमरजीत के गोड़ों सें लतफनाय गेलै। पहिलें तें हमरासिनी यहें बुझलियै कि बीच में पहुँची कें शिव गंगा कें थाहै के कोशिश करी रहलों छै; जबें ओकरों हाथ-गोड़ ढीला पड़ें लागलै; नै हौ छप-छप, नै हौ गति, तबें हमरासिनी कें शंका भेलै आरो बातो ठो समझै में आवी गेलै। मतरकि हमरासिनी में हेलवैय्या कोय रहें तबें नी। चीख-पुकार मचैबों शुरू करी देलियै। दुर्भाग देखों, कि वहाँ कोय हेलवैय्या बम भी नै छेलै, जे कूदी जैतियै। हौ तें भोलाहे बाबा रों किरपा कहों कि तखनिये लतफनैलों धोती सोझराय गेलै आरो अमरजीत पानी पर लेटी झब सना धोती सड़यैलें छेलै आरो पट सना पलटी कें एक्के साँसे शिवगंगा हेली गेलै। नै तें बड़का दा, जे अपयश हमरासिनी के माथों पर लगैतियै, ओकरा सें तें ई जिनगी भर उबरना मुश्किले छेलै। गोबध के पाप

कहीं छूटै छै की? अमरजीत कें कुछ होय जैतियै, तें हमरासिनी में कोय्यो पाप सें निवृत्त नै हुऍ पारतियै। सबसें बड़ों गलती तें यहें छेलै कि एकरा बम में शामिले नै करना छेलै।''

''हमरों दिस ताकी कें बात खतम नै करें बदरी। हम्में अमरजीत कें नै उकसैलें छेलियै, बम बनै लें। जे उकसैलें छेलै, आकरों माथा पर तें बम फोड़ै के साहस नै होतौं।'' गुलगुलिया नें देहरी सें नीचें पसरतें हुऍ आगुवो कहलें छेलै, ''मक्खी उड़ाय कें भनभन दूर करै लें चाहै छैं, बदरी! है भनभन विरनी सिनी के कारनें छेकै, आरो ओकरा में हाथ दै कें तोहरों साहस तें होतौ नै।''

''देख गुलगुलिया, मुँह-कमर सेती कें राखें। बहुत छुट्टा होय गेलों छैं। हमरा सिनी विरनी आरो मधुमाँछी। अरे, मधुमांछियो काटै छै। बाभन होय कें बाभनसिनी पर दोषारोपण रे।'' बदरी नें बैठले-बैठले हाथ चमकैतें कहलें छेलै।

''देख बदरी, यैमें बाभन, बभनौटीवाला बात नै छै। बात कें विषाक्त नै करें। यैमें दोषारोपण के की बात छै। कहैं कि गलती बाभनों सें नै भै छै की ! अरे, गलती तें ब्रह्मौं सें होय छै, फेनु आदमी तें आदमिये छेकै। बदरी, खाली तोंही बाभन नै छेकैं, हम्मू छेकियै, मतरकि पाप के दोष सब्भे पर बराबरे लागै छै आरो ओकरों परछालन एक्के नाँखी सबकें करै लें लागै छै। है नै कि एक जात मूँ सें खाय छै, नाक सों सांस लै, आँख सें देखै छै, गोड़ सें चलै छै, आरो दूसरों जात नाँकी सें खाय छै, मुँहों सें देखै छै, आँखी सें साँस लै छै आरो गोड़ों सें चन्दन लगावै छै। गलती होलों छै, गलती मानी लेलाहै में फायदा छै—गलथोथरी करला सें कुछ हासिल नै होय वाला छै। दोष तें सबके माथा पर जाय छै, जत्तें बाभन टोला के माधो, बदरी, कपिल, ओतन्है कोयरी टोला के मंगलिया, सिमरन आरो सकीचनों पर; हौं।''

बदरीं अभी आरो कुछ कहै लें हाथ उठैले छेलै कि आशुतोष बाबू नें ओकरों उठतें हाथों कें नीचें करते हुऍ कहना शुरू करलकै, ''यैमें उटका-पैंची के कोय बात नै छै, नै ढेंसा-ढेंसी के। हम्में आय बभन-टोली के चाँद मिसिर, कश्मीरी झा, किरपा मिसिर आरो कोयरी टोलों के धन्नू, महतो, कानू महतो आरो सुग्गी मरड़ कें बुलावै छियै, फेनु पूछै छियै कि गाँव आबें हेन्है चलतै कि आरो रस्ता सें।''

कि तखनियै आपनों माथों पर अँचरा लेलें आपनों ऐंगना सें सत्ती बाहर निकललै आरो दुआरी के चौखटी सें सट्टी कें खाड़ों होय गेलै। घूँघटा सें कुछ देखलकै आरो आपनों दायाँ हाथ कें थोड़ों आगू बढ़ैतें हुएँ कहलकै, ''आबें कोय पोंर-पंचैती करै के जरूरत नै छै। हम्में ई सोची लेतियै कि आबें अमर कें ई गाँव में नै रखना छै। अमर के बाबू सरंग सिधारी गेला, मतरकि अभियो विपत वक्ती हुनी हमरों साथ नै छोड़ै छोंत। आबें हुनके आदेश मानी हम्में ई तय करी लेलें छियै कि अमर कें तगेपुर पहुँचाय ऐवै, अमूलदा कन। वहीं रहतै, तें दादा के आशीर्वाद सें दू अच्छर पढ़ी भी लेतै; नै तें यहाँ लभारे रँ करतै जिनगी काटी लेतै। गाँव भरी हमरा सुक्खों-दुक्खों में साथ देनें ऐलों छै, आबें अमरजीत कें लैकें हम्में आपनों गोतिया-लोय्या नाँखी टोला-पड़ोसा सें मनमुटाव नै लिएँ पारौं। विधाता विपरीत होतियै, तें अमर घुरी कें घोंर नै ऐतियै। हिनी खाली गुलगुलीजी के बाबू सें एतनाहै पता करवाय दियै कि पंचक कहिया सें कहिया तक पड़ै छै। बस।'' आरो एतना कही कें वैं अँचरा कें खोपों तक लै आनलें छेलै; सीधे आपनों ऐंगनों दिस मुड़ी गेलों छेलै। एक घनघोर चुप्पी कें पीछू छोड़तें होलें। जे जहाँ छेलै, होन्है कें रही गेलों छेलै, जेना देखतैं-देखतैं सब माँटी आरो पत्थल रों मुरुत।

(३)

''बस, आय सें अमरजीत कें ई मंडली सें छुट्टी'' बदरी नें दायाँ मुट्ठी उठाय कें कसलों ओंगरी सिनी कें ई तरह झटका सें खोली देलें छेलै, जेना सामन्है में बैठलों कोय चिड़िया कें उड़ैतें रहें।

''तोहें तें हेनों आपनों निर्णय सुनाय देल्हैं, जेना तोहीं मुंशी-मुंसफ रहैं।'' सिमरन कें गुस्सा आवी गेलों छेलै।

''एकरा में मुंशी-मुंसफ के कोय बाते नै छै। हम्में अमर कें मंडली में नै राखै लें चाहै छियै, यहू बात नै छै, मतरकि जानी ले, जों ओकरा कुछ होतौ, तें एकरा में एक नै फँसवे, सत्ती बोदी मंडली भर पर ढेंस लगैतौ, जानी

ले, आरो ओकरों बाद सोचें कि अमर कें मंडली में राखै लें चाहै छैं, की नैं?'' बदरी नें ई बात शान्तिये भाव सें कहलें छेलै।

बात सचमुचे में चिन्तित करैवाला छेलै। कमरथुआ बम में अमर कें शामिल करै के नाम पर जोन रँ बवंडर महीना भरी पहिले गाँव में उठी चुकलों छेलै, ओकरा देखतें आबें केकरौ हियाव नै रहलों छेलै कि अमरजीत कें मंडली में शामिल करलों जाय। के मुसीबत मोल लें।

''एतन्है नै, एक बात तें हम्में कहै लें भूलिये गेलां। कल सत्ती बोदी कन गेलों छेलियै; साफ कहियौ, सेर भरी चौंर देतें नैकी बोदी की कहलकै? कहलकै, 'सकीचन जी, आरो एक बात कि अमरजीत कें तोरासिनी उड़ारी-पुड़ारी कें नै लै गेलों करों। तोरा सिनी कें जे नाटक-नौटंकी करना छौं, करों; अमर वैमें पाट-ऊट नै लेतौं; नै तें ओकरा उकसैलों करों। हों।''

''सब बात ठीक छै, नै बदरी कें हम्में गलत कहें पारौं, आरो नै तें बोदी कें ही। बमवाला घटना लै कें हुनकों मोंन एतन्है नी दहली गेलों छै कि हुनी कुछुवो नै सोचें पारें। मतरकि बात एकरों नै छै, बात तें यहाँ एकरों छै कि मानी लें अमर कें मंडली में नै राखै छियै, नै सत्ती बोदिये ओकरा यहाँ आवें दै छै, तें राम के पाठ के करतै। मंगलिया? की गुलगुलियां?'' कपिल नें बड़का विपद दिस संकेत करतें, हाथों पर गाल धरी चुप होय गेलों छेलै।

''फिकिर नै करें कपिल, सिद्धीनाथ कें शामिल करी लेना छै। कम नै बूझैं, ओकरा। बस उन्नीस-बीस के अन्तर पड़तै, मतरकि रामलीला तें नै रुकतै।'' निदान के मुद्रा में सकीचन नें मुड़ी हिलैनें छेलै।

''सिधियाँ राम रों पाठ करतै, ही, ही, ही, ही....'' कपिल कें जना गुदगुदी लगी गेलों रहें, ''ई तें यहें भेलौ, कि जन्मे सें भुसगोल साधुनाथ सें संस्कृत-पाठ करैवों। हा, हा, हा, हा,''

सिद्धिनाथ साधुनाथ के बड़का भाय छेकै, जों साधुनाथ केकरो माल पचैयो कें साधुवे बनलों रहला में माहिर छै, तें सिद्धिनाथ कें केकरौ उल्लू बनाय में सिद्धि हासिल छै। पता नै, ई नाम के धरनें छेलै। ओकरों माय-बाबू सें पूछला पर यहें पता चलले कि दोनों के नाम चमरू, जमरू छेलै। जामों बच्चा छेकै, बस मिनिट के अन्तर लैकें जनमलों छेलै दोनो भाय। रंग-रूप सें दोनो के एक्के रंग-रूप, बोली-चाली में जरियो टा फरक नै। यही सें गाँव में कोय सिद्धि कें बुलावै, तें साधुवे जाय कें काम कराय आवै,

लोगें समझै सिद्धिये ऐलों छै, होने कें जे साधू कें बोलावें आरो साधू घरों में नै रहें, तें सिद्धिये श्राद्ध आरनी के काम कराय आवै छेलै। ई एक्के रंग-रूप के कारणे माय-बापों कें कभी काल परेशानियो होय जाय छेलै, यही सें माय-बाबू के कहला पर सिद्धि कमीजो के भीतर कारों गंजी पहनना शुरू करी देलें छेलै, जे बात खाली घरे भरी कें मालूम छेलै। घरों के बाहर तें हवौ कें मालूम नै छै।

अमरजीत गाँव में सबसें बेसी जों केकरौ सें चिढ़े छेलै, तें सिद्धिनाथ आरो साधुनाथ सें। जों कन्हौं दोनों कें वैं देखी लै, तें आपनों बनैलों कविता ई रं दुहरावें लागै कि जेना इस्कूली के पाठ सिहारतें रहें।

हेना कें तें सिद्धि आरो साधु भी संस्कृत-पाठ करै छै, मतरकि ओतने टा, जतना ओकरा दोनों कें ओकरे बाबूं सिखैनें छेलै, ओकरा सें एक शब्द आगू बोलै के कोय सवाले नै छेलै। फेनु जे बोलै छेलै, ओकरों मानै भी नै जानै छेलै। ई तें सिखायवाला के दोष छेलै कि ओकरों अर्थ नै बतैलें छेलै। हिन्नें अमरजीत गाँव भरी में सब में ज्यादा पढ़लों-लिखलों गिनलों जाय छेलै। जेकरों बापे खुद संस्कृत के मास्टर, भला ओकरों बेटा केना नै संस्कृत बोलतियै, मंडन मिश्र के तें सुगवो संस्कृत बोलै छेलै। से आपनों विद्या के बलों पर अमरजीत नें संस्कृत के एक श्लोक में हेर-फेर करी कें एक नया श्लोक बनाय लेलें छेलै आरो जहाँ सिद्धि साथें साधु कें देखै कि बोलना शुरू करी दै,

सिद्धि साध्ये सध्वामस्त
मधुवा चधुर्जटे
तालापुलेन गृहं अस्ति
हरमुनियम जानसि कला

ई श्लोक सुनि, सिद्धि आरो साधु कें कुछ-कुछ हेनों बुझावै कि ई कविता हुऍं-नें-हुऍं ओकरे लेली अमर नें बनैलें छै, से एक दिन दोनो पंचपुरा इस्कूल पहुँची गेलों छेलै आरो कें हू-ब-हू श्लोक गन्हौरी गुरुजी कें सुनाय कें पूछलें छेलै, "की हेनों श्लोक संस्कृत के किताब में छै, गुरुजी?" आरो गन्हौरी गुरुजी के है कहला पर कि पंचतंत्र के संस्कृत किताब यहें श्लोक से शुरू होय छै, दोनों निचिन्त होय गेलों छेलै। दरअस्ल गुरुजी नें श्लोक के एकाधे शब्द सुनी कें आपनों निर्णय दै देलें छेलै। बाकी सुनै कें हुनी जरूरते

नै बुझलें छेलै, नै तें हुनियो मामला के खोज करतियै। ऊ दिनों सें अमरजीत के श्लोक के कोय असर दोनों भाय पर नै हुऐ, भले अमर श्लोक पढ़तें-पढ़तें दोनों भाय के बगले सें गुजरी जाव।

आय वहें सिद्धि कें, नाटक में, राम के पाठ दै के बात सोचलों जाय रहलों छेलै। सिद्धि कें राम के पाठ दै में एक फायदा तें सबकें ई बुझाय रहलों छेलै कि ओकरों मुँहो-देहों पर कोय मुर्दाशंख लगाय के जरूरत नै छेलै, नै कोय रंग-रोगन चढ़ाय के जरूरत। ओकरों देहे के रंगे छेलै राम हेनों। मतुर सबसे बड़ों दिक्कत ई छेलै कि कोय बात के आगू ऊ बिना छिनरी सांय लगैनें बोलै नै पारै। मंचों पर राम जबें परशुराम कें छिनरी सांय कहतै, तें परशुरामो की आपनों कुल्हाड़ी रोकें पारतै? वहू में जबें अजनसिया परशुराम के पाठ करी रहलों छै, अच्छो बातों पर मार करै वास्तें सद्धोखिन तैयार। नै, सिद्धि कें राम के पाठ नै देलों जावें सकै छै। बहुत मंथन बादे ई तय होलै कि साधुनाथ सें ही राम के अभिनय करैलों जाय।

यहू तय होलै कि सिद्धि विश्वामित्र बनतै आरो जेन्हैं छिनरी सांय बोलै पर होतै, तखनिये दूसरों पात्र आपनों गोड़ों के बुढ़वा औंगुरी सें ओकरों कोय अंगुरी दबाय देतै, जैसें सिद्धि कें आपनों गलती बुझाय जाय। आरो वहा होलै। नाटक के रिहर्सल शुरू भै गेलों छेलै, नद्दी कछारी पर खड़ा झबरलों बोंर गाछी नीचें।

अमरजीत सें कुछुवो बात छिपलों नै छेलै। छिपलों की रहतियै, सिद्धि आरो अजनसिया तें आपनों संवाद एत्तें जोरों-जोरों सें बोलै कि तहखाना में बैठलों आदमियो कें सुनाय पड़ें, आरो ठोठों फाड़ी कें ई रं संवाद बोलै के पीछू एक्के मकसद रहै—अमरजीत कें ई बतैबों कि देख, तोरों बिनाहौ नाटक हुएँ पारें। मुर्गा नै बोलतै, तें विहान नै होतै की?

आरो हिन्नें आपनों खटिया पर पड़लों-पड़लों अमरजीत फदकतें रहै, भला राम हेन्है कें बोलै छै, कत्तें रुक्खों, कत्तें उस्सट वचन। केला गाछी में टिकोला झूलतें रहें, आरो अजनसिया के ठोठों देखों, जेना बरसाती में सौढ़ा गरजतें रहें। कौआ कें भण्डारी बनैतै, तें पत्ता पर गूए-गू नै होतै, तें होतै की? आरो अमरजीत भीतरे-भीतर ई सोची कें कि नाटक की रं होयवाला छै, रही-रही खिलखिलावें लागै छेलै।

जे रहें, रिहर्सल पूरा होय गेलों छेलै। सौंसे गाँव नाटक देखै लेली

बेमत्त, जना बौंसी के संकराती में जाय लें सौंसे इलाकाहै उथल-पुथल। सत्ती के कड़ा पहरा छेलै कि अमर नाटक देखै लें नै जैतै, उतरवारी कोठरी में आवी कें झाँकलकै; नै, ऊ तें होन्है करवट मारी सुतलों छै, जेना सुतलों छेलै। अमरजीत कें मालूम छेलै कि एकरों बाद माय आवैवाली नै छै, से ऊ हौले-हौले उठलै आरो पूवारी दीवारी सें निकललों बाँसों पर गोड़ राखी, परछत्ती पार करी गेलै; पीछू छौरों के ढेर छेलै, से कूदै सें कोय आवाजे नै होयवाला छेलै।

हों, कूदै में देह-हाथ राख में लपटाय गेलों छेलै, मतर ओकरों फिकिर करले बिना ऊ सीधे नद्दी दिस सोझियाय गेलै। सब तें निकली गेलों छेलै, चेतु मिसिर के बैलगाड़िये बची गेलों छेलै, जे हिन्नें लटकलों होलों छेलै। असल में बैलगाड़ी के एक बैल केन्हों कें बालू में गिरी पड़लों छेलै, आरो गिरलै तें उठै के नामे नै लै छेलै। आबें चेतु के नजर अमरजीत पर पड़लै, तें आरो सब बात सोचवों छोड़ी कें सीधे बोली पड़लै, ''अरे अमरू, तोहें यहाँ, तोरों माय तें नाटक में जाय लें मना करलें छेलौ। अच्छा, इच्छे छौ, तें चल एक काम करें, गाड़ी सें उतरी कें सब तें चल्लों गेलै, बाकी बची ऐलों छी हम्में, आरो नाटक देखै लें हमरौ तें जान्है छै। एक काम करें, जबें ई बैलें धोखाहै दै देलकै, तें तोहीं जुआ उठाय ले। खींचवैं तोहें थोड़े, खीचतै तें ई जुआ सें लागलों बैलें, तोहें खाली साहलें रखियैं, आरो तोहें निचिंत रहें, हम्में ई बात तोरों माय सें कभियो नै कहभौ कि तोहें नाटक देखै लें भागी कें ऐलों छैं, जे तोरों धराने बताय रहलों छौ।''

चेतु मिसिरें भले नै बतैलें रहें, मतरकि यहू सब बात दबैला सें दबैवाला छेलै? छिपलै, तें बस दुए दिन। तेसरे दिन तें बात खुली गेलै, जखनी नीनों में अमरजीतें कुहरवों शुरू करलें छेलै। सत्ती कें शुरू-शुरू में तें कुछ समझै में नै ऐलै, मतर वैं अमर कें बिना जगैनें ओकरों देह-हाथ पर नजर दौड़ाना शुरू करलकै, कमीज उघारी कें छाती-गर्दन देखलकै, कांहीं कोय चोट-घांट तें नै लागलों छै। काँही कोय-चोट के निशानो नै छेलै, तें कुरैहै छै कैन्हें? वैं फेनु सें कमीज उठाय कें पीठ देखलकै, तें ओकरों छाती फटी कें रही गेलै, पीठी पर बित्ता भरी के चमड़ी फूली कें कारों भै गेलों छेलै, जेना चमड़ी के भीतर कोय खरीस साँप के बच्चा घुसी गेलों रहें।

वैं पासी पर सें गोड़ उतारलें छेलै आरों अँचरा कें दोनो तरत्थी सें

समेटी आपनों स्वामी के तस्वीर देखतें एतन्हैं भर बोललै, ''आरो कर्त्तें परीक्छा लैलें चाहै छौ, स्वामी ! एतन्हौ तें सोचों, जनानी जात छेकै, विपत्ति एक सीमाहै तक सहें पारें, जों परीक्छाहै लैलें चाहै छौ, तें पुरखे नाँखी कोनो पत्थर के करी दा, आरो की कहियौं।'' ऐतना कही ऊ झट सना हुड़का हटाय कें एंगनों आवी गेलै। एंगनों के टटिया हटैलकै, आरो भैंसुर के द्वारी पर आवी गेलै, माथा पर घूंघट लेलें। जौत के नाम लैकें पुकारलकै, ''टुनु, बाहर निकलियों।''

रात के बारह बजतें होतै, ओकरा सें कम नै, घोंर भरी एक्के दाफी हड़बड़ाय कें उठी गेलै। सब बाहर निकललै, तें सत्ती सीधे आपनों ऐंगना चली पड़लै। सब बुझी गेलै, जरूर कोय बात होय गेलों छै। ऊ आपनों कोठरी पहुँचतियै, एकरों पहिले गोतनी, जयधि, जौत, सब ऊ कोठरी दिस दौड़ी पड़लों छेलै, कोय भारी अनिष्ट के आशंका सें धड़धड़ैलों। अमरजीत अभियो वहा रं खटिया पर कुर्रही रहलों छेलै, तब तांय आशु बाबुओ आवी गेलों छेलै। कोठरी में हुनकों ढुकतैं सब हटी गेलै, सत्ती तें बाहरे मोखा लगी खाड़ों रहलों, एकदम पत्थल बनलों। अमरजीत के पीठ होन्हे उघारों छेलै, जेना वैं छोड़ी कें गेलों छेलै, से सबसे पहले आशु बाबू के वहीं ठां नजर पड़लै। अनुभवी आँख, जानै में कटियो टा देर नै लागलै, ई तें चाबुक के मार के चेन्हों छेकै—के मारलें होतै, कैन्हें मारलें होतै, ई सब सोचले बिना, हुनी बाहर निकललै आरो ऐंगना में रखलों लालटेन के रास उसकाय कें नद्दी दिस के झबरलों झाड़ी ओर चली देलकै, बिना एकरों खयाल करल्हैं, कि रातकों पहलों पहर बीती चुकलों छै।

ऐलै, तें बायां हाथ में लालटेन आरो दायां में कुछ लोंत-पतार लटकी रहलों छेलै, जेकरै सें हुनी घावों पर रस चुवैतें रहलै, आरो फेनु साफ कपड़ा के पट्टी बनाय घावों सें बान्ही देलें छेलै। बाहर निकलें लागलै, ते बोललै, ''घबड़ाय के बात नै छै, नींद तें कुछुवे देरी में आवी जैतै आरो भोरे सें घावो चोखाबें लागतै।''

आशु बाबू ई बात ओतने टा तेज आवाज में बोललों छेलै कि बाहर मोखा सें सट्टी कें खाड़ी सत्ती सुनी लें, आरो हुनी कोठरी सें बाहर निकली, लालटेन ऐंगनै में राखलें छेलै; फेनु टटिया सटाय कें आपनों ऐंगनों आवी गेलै, अपनी कनियैनी कें वहीं रहै के इशारा करतें। आशु बाबू के बड़की

बेटी प्रातियो रुकी गेलों छेलै।

कुहराम तें पहिलें नै होलों छेलै, नै आशु बाबू के निकलला के बादे होलै, अमरजीत के कुहरवों कुछ कम होलों छेलै, तें एकेक करी कें आरो-आरो भी कोठरी सें बाहर निकली ऐलों छेलै, बस बची गेलों छेलै, सत्ती, जे आपनों दोनों ठोरी कें एक दूसरा सें कसले खटिया के पासी पर बैठी गेलों छेलै, दोनों गोड़ कें धरतिये सें टिकैलें।

अमरजीत कें कखनी नीन आवी गेलै, ई तें सत्तियो कें नै पता चललै, आरो नै पता चललै, तें एकरों कारण छेलै; ऊ एक बहुत बड़ों निर्णय लैमें डुबलों होलों छेलै, आपनों छाती पर चलतें जाँतों राखी कें। एक हेनों निर्णय, जे ओकरा अमर सें अलग करी देतियै, मतर कोय किसिम सें आपनों मनों कें डिगै दै लें ऊ तैयार नै छेलै।

वै फेनु सें ऊ तस्वीर दिस देखलकै, जे ठीक पनरों साल पहिलें अमर कें सत्ती के गोदी में छोड़ीं कें आपनों देह छोड़ी देलें छेलै। ओकरा लागलै, जेना शीशा के भीतर के फोटो ओकरा सें बात करतें रहें, ''घबड़ाय छौ केन्हें, अमर के माय, ई बात तें तहूं जानै छौ कि हमरों बीहा यही शरतों पर होलों छेलै कि ससुर जीं हमरो पढ़ाय गछलें छेलै, यानी जहाँ तक हमरों इच्छा होतै, हुनी वहाँ तक पढ़ैतें। मतुर होलै की? अनठियावों शुरू करी देलकै। वहाँ पढ़ाय लेली हमरा तीन दिन आमी गाछी पर बैठी कें हुनका सिनी कें परेशान करैलें पड़लै, जबें तोरों लालदां पढ़ाय गछलकौं, तें नीचू उतरलों छेलियै। छोड़ों आबें ऊ सब बातों कें, की याद करवों। आबें तें तोरों तीनो भाय मास्टर छौं। अमरजीत कें कोय भाय के यहाँ छोड़ी आवों। हमरा नै पढ़ैलकौं, तें नै, भैगने कें पढ़ाय दौ, गछलों बात पूरा समझवै।''

सत्ती के दोनों ठोर हठासिये ढील पड़ी गेलों छेलै। वैं तस्वीर कें बड़ी निरियासी कें देखलें छेलै, आरो अंचरा दोनों तरत्थी बीच राखी कें मूड़ी नवाय लेलें छेलै। रात केना कें कबें कटी गेलों छेलै, ओकरा कुछ पतो नै चललै; पता चललै तबें, जबें आपनों ऐंगना में आशु बाबू के खकसवों सुनलकै। सत्तीं लम्बा घोघों खिंचलकै, आरो सीधे बाहर निकली ऐलै।

बाहर ऐलै, तें ओकरा लागलै; जना ओकरों मनों के सब भार बाहर आवी गेलों रहें, शायत आशु बाबू कें देखी कें। आरो जबें-जबें हुनका देखी कें सत्ती कें हेनों कुछ बुझावै, तें कखनू-नै-कखनू ऊ पूजाघरों में देर-देर तांय

कपसतें रहै, फूलमती के बाबू कें याद करी। बस एक्के वहा बात घुरी-फिरी कें बोलतें चल्लों जाय, ''फूल के बाबू, आय तोहें होतियौ, तें ई पहाड़ नाँखि दुख हमरा उठाय लें लागतियै? गोदी मेंं तीन-तीन बच्चा। तीनों हमरों रहत्हौं टूअर। जे बच्चा सिनी के माथों सें बाबू के हाथ उठी जाय, तें फेनु बचवे करलै की ! तोहें देखै नैं छौ, कि दू शाम के कौर जुटाय लेली, हमरा की-की नै करै लें लागी रहलों छै। स्वाति सें सत्ती होय के मतलब नै समझै छौ की। बस केकरो दुआरी पर नौड़पनों नै करी रहलों छियै, तोरों इज्जत, मान-प्रतिष्ठा कें याद करी। कुटौनों-पिसोनों करन्है छेलै, नै तें तीन-तीन बच्चा के मुँहों में दाना कहाँ सें राखतियै, हम्में तें पानियो पीवी कें उपास करी लेतियै, मतर फूल हेनों बुतरु सिनी कें उपासे केना करैतियै। तोहीं बोलों, जों हबीब के बाबू सें बीड़ी बनाय के हुनर नै सिखतियै, तें आय ई घरों में की कलरव सुनाय पड़तियै? दादाहौ आखिर मुँह कैन्हें चाँपी कें रही गेलै, हुनियो जानी रहलों छेलै, एकरों सिवा आरो चाराहै की छै। टोलावाला के कत्तें मुँह सीलें फुरतियै। दस-पाँच रोज कुकआरों चलतै, फेनु अपने सब शांत होय जैतै, आरो वहा होलै। उरेफ बोलवैय्या हमरों पच्छों में बोलें लागलै, 'कोनो मसूद्दी जी घोंर ढुकी कें बीड़ी बनाय के हुनर थोड़े सिखाय छै; दुआरी पर बैठीकें पत्ता काटे के, बीड़ी में पत्ती भरै के तरीका, सूतों लपेटै के हुनर, सब तें बाहरे-बाहरे सें बताय छै, आरो अमरजीत के माय ऐंगनाहै सें टटिया पीछू बैठी कें देखतें रहै छै, यैमें दोषे की छै।' सोचै छियै, जो हबीब के बाबू नै होतियै, तें सब बच्चा बिलटी जैतियै। घरों में बीड़ी बनाना शुरू करलियै, तें दू शाम के कौर के ठिकानों बनी गेलै। कहै छै नी, पैसा आवै छै, तें जीयै के हूवो बढ़ै छै। सोचलियै, घरों में आवी कें बीड़ी कत्तें आदमी लै जैतै। टोला-परोस सें तें हेन्है कें लोग आवै आरो एक बीड़ी सुलगाय कें चली दै। आबें एक बीड़ी के पैसो की मांगतियै लोगों सें; मुँहे नै खुलै। ऊ तें हबीबे के बाबुएं बतैलें छेलै, 'बोदी हेना कें होथौं की? बलजीत आरो अमरजीत कें हटियावाला रास्ता पर बिहनकी बेरा भेजी देलें करों, दुपहरियौ जैतै, तें कोय बात नै, नीमी गाछी के नीचें बोरा बिछाय कें बैठी रहतै, आरो वहीं पर दस मुट्ठा बीड़ियो रहतै। देखियौ, जिनगी बितैवों कत्तें आसान हुएँ लागथौं। आरो हम्में वही करलें छेलियै। आय तें पैसा हाथों में छौं, फूल के बीहो के बात सोचै छियौं, तें वही बल्लों पर। हबीब के बाबू के लम्बा औरदा हुएँ,

तोरों तीनों बच्चा के शादिये-बीहा नै, सब्भे के भरलों-भरलों गोदो देखी कें जाय।''

नै जानें कत्तें-कत्तें बात सोचत्हैं चल्लों गेलों छेलै, सत्ती। ध्यान टुटलै तबें—जबें आशु बाबू के खकसै के आवाज बड़का ऐंगन में होलै। ऊ झट सना देह-हाथ संभालतें हुएँ ठाढ़ी भै गेलै। खड़ाऊँ के चट्-चट् के आवाजे साथें हुनी ऐंगना में, फेनु ऊ कोठरी में गेलों छेलै, जैमें अमरजीत छेलै। देखलकै, अमर उठी कें बैठी चुकलों छेलै, फूलमती घाव पर जड़ी-बूटी सें बनैलों लेप कें धीरें-धीरें अमरजीत के पीठी पर ससारी रहलों छेलै। सत्तीं चाहतौं कुछ नै पूछलकै, कि ई सब केना होलै, जेना वैं सब कुछ जानी लेलकै कोय अन्तरयामी रं। आशुओ बाबूं केकरौ सें बेसी कुछ नै पूछलें छेलै, खाली एतनै कहलकै, ''आबें दरद केन्हों छौ बेटा?'' आरो जबें अमर नें दरद नै होय के बात हौले सें बतैलकै, तें सत्ती कें लागलै; जेना ओकरों सबटा दरद हठासिये फुर्र होय गेलों छेलै।

(४)

ई घटना कें लैकें सत्ती जत्तहै मौन होलों गेलों छेलै, ओत्हैं टोला सिनी में कानाफूसी बढ़लों गेलों छेलै। आखिर के मारलें होतै, हेनों क्रूर बनी कें? केकरों मोंन हेनों कसाय हुएँ पारें? आचरज तें ई छेलै कि आशु बाबुओ कुछ जानै के कोशिश नै करी रहलों छेलै। वृजनारायण घोष के बाते तबें कहाँ उठै छै। हेनों बात तें नहिये होतै कि वृज बाबू कें एकरों बारे में कुछ मालूमे नै होतै, एत्तें बड़ों बात होय गेलै, कोय छोटों-मोटों बात छेकै की? मतुर आशु दादा कैन्हें चुप छै ! शायत हुनका विश्वास रहें कि एक-नै-एक दिन पाप आपनों मुँह आपने खोली कें बोलतै।

आरो होवो करलै वही। चेतु मिसिर कें आय कै दिनों सें यही लागी रहलों छेलै, कि आशु बाबू साथें बड़की बोदी कें सब मालूम होय चुकलों छै, खाली हमरा सें बोली नै रहलों छै। वैं मनेमन सोचलकै, ''जबें जानिये लेलें

छै, तें छिपैलै सें की? हेना कें तें हम्में आरो घुटतें रहवों। एक दाफी बोली कें ई बोझों सें फारिगे होवों अच्छा, फेनु हम्में जानी कें थोड़े मारलें छियै। जुआ में बैल नै, अमरजीत छै, एकरों चेते नै रहलै, बस एतन्है टा तें भूल होलों छै, हमरा सें।''

आरो एक दिन जखनी आशु बाबू पंचपुरा हटिया दिस जाय रहलों छेलै, चेतु पिछुऐतें-पिछुऐतें ऐलै आरो बाते-बाते में सब खोली कें बताय देलकै, ई कहतें कि, ''आबें बड़की बोदी जे सजा दौ, सब स्वीकार।''

आशु बाबूं सब सुनी लेलें छेलै, एकदम चुपचाप, मतर बोललों छेलै कुछुओ नै। हटिया आवै के पहले हुनी एक गल्ली दिस मुड़ी गेलों छेलै; चेतु कें वही ठां छोड़ी कें। चेतु कें लागलै, ओकरों अपराध कें माफी नै मिललै, अच्छा होतै कि सत्ती बोदी कें सब सुनाय दियै, आरो यही सोची कें ऊ झब-झब पुबारी टोला दिस बढ़ें लागलै, मतर बीचे में डेग कुछु हौल्कों करी लेलकै, ई सोची कें कि जबें घरों के मुखिया कें कहिये देलियै, तबें आबें आगू बात बढ़ैला सें की फायदा। गढ़ैया के पानी ज्यादा साफ करै के मतलबे छेकै, पानी कें आरो कदोड़ करबों। अच्छा होतै कि सत्ती बोदी वैद्यदा के मारफते जानी लै, फेनु जे कहना होतै, कहतै; गुम्मी साधी कें सुनी लेना छै, आरो की।

कि तखनिये चेतु के मनों में एकटा नया शंका भेड़ियाय उठलै, ''हुएँ सकै छै, वैद्यदा सत्ती बोदी कें नहियो कहें। भीतरिया तें भेद-दुराव छेवै नी करै। भेद की चुल्हा-चौका कें लैकें थोड़े छै, ऊ तें एक घंटा में सलटी जायवाला छेकै। ई तें अलगे बात छेकै, जे हड़िया-पतलिये नै, एक्के ऐंगना में दू-दू घोंर करी देलें छै, बस सवा बीघा जमीन के चलतें। वैद्य दां ऊ जमीनों पर आपनों दाँत गड़ैलें होलों छै, आरो हिन्नें सत्ती बोदियो। आबें सही-सही केकरों हक बनै छै, ई के बतावें पारें। मतर हक-हूक सें अलग हटी कें देखलों जाय, तें वैद्य कें की चाहियों ! अरे, आबें फूलदा तें नहिये छै, बची गेली बेचारी विधवा बोदी। मानी लेलियै, ई जमीन फूल दां आपनों छोटों भाय वैद्य दा के नामे सें खरीदलें रहें, तखिनकों बात अलग छेलै, आरो इखिनकों बात अलग छै। तखनी लाल दा इस्कूली के मास्टर छेलै, जेहे टाका आवै छेलै, आवै तें छेलै, आबें तें नैकी बोदी के पास कुछुवो नै। एकटा ऐंगनों आरो दू कोठरी, यैमें पछियारी कोठरी तें जमीन्दारों के भुसखारी

बराबर। वहू में कोन-जमाना के बचलों खुचलों बांस-कोरों एत्तें ठूंसलों कि एक खटिया बिछाय मान जग्घों मुश्किल सें बनै पारें। आबें जों सत्ती बोदी सवा बीघा जमीन पर दावा करवे करै छै, तें अनुचिते की छै। भला वैद्यदां दाँत कथी लें गड़ैलें होलों छै। मानलियै कि वैद्य कें खाय-पीयै के कोय आरो जरिया नै छै, एक वैदगिरी छोड़ी कें; मतुर आपनों परिवार पर छाया नाँखी तें छै नी, सत्ती बोदी पर तें कुछुवो नै; गाछी के तें की, लत्तियो के नै। हुनका तें देखिये कें करैजों मूँ तक आवी जाय छै, मतुर तभियो देखों, ई जनानी के हियाव, भादो के बोहों के बीचों सें फाड़तें भांसलों जाय रहलों छै। नै, हमरा सें बड़का गलती भै गैलै कि अमर कें जुआ सें लगाय देलियै। अकीलें काम नै करलकै। मतुर आबें जे होय गेलै, से होय गेलै। हुनकों गोड़ पकड़ी लेवै। हरजे की छै, अरे बोदियो तें मैय्ये दाखिल नी, फेनु बड़ी तें छेवे करै। माय कभी बेटा कें शापित करै छै! सब बात बताय देवै, तें सब पाप साफ।'' यही सोची कें चेतु आपनों डेग फेनु तेज करैवाला ही छेलै कि ओकरों नजर ओकरे दिस ऐतें सत्ती पर पड़ी गेलै। अभी ऊ कुछ बोलतियै कि एकरों पहिलें सत्तिये टोकी देलकै, ''की दियोर, गाँव सें बाहर छेलौ की? नजर नै आवै छेलौ। कोय कामों सें बाँका आकि भागलपुर गेलों होलों छेल्हौ की?''

चेतूं एक दाफी ओकरों चेहरा कें बड़ी गौर सें देखलकै, कहीं मनों में कोय भाव छुपाय कें आरो बात तें नै करी रहलों छै, आरो ई देखी कि कहीं कोय दूसरों बात नै छेलै, निश्चिन्त होय बोललै, ''नै, नै बोदी, घरे पर छेलियै। मोंन-मिजाज ठीक नै बुझावै छेलै, देह-हाथ छकछकैलों हेनों लागै, बस यही लें बाहर नै निकलै छेलियै।

''अरे, तें केकरों हाथ खबर करी देतियौ।''

''नै करलियै, तनी-मनी बातों वास्तें वैद्य कें की परेशान करतियै।''

''तें, हिन्नें कन्नें? कोय काम छौं की?''

''बस, तोरे सें मिलै वास्तें हिन्नें आवी गेलों छेलियै।''

''से की? बोलों।''

''बोदी, आबें अमर के पीठी परकों घाव? असल में...'' अभी चेतु कुछ आगू आरो बोलतियै कि सत्तीं पाँचो अंगुली के इशारा सें मना करतें कहलकै, ''आबें ई सब बातों कें उठैवों कोय मतलबे नै राखै छै, दियोर। कोय केकरो बारे में बतैवो करतै, तें हम्में विश्वास नै करें पारौं। जों हमरा

शांत करै वास्तें यहू कहतै, कि काम हम्मी करलें छियै, तहियो नै! हम्में जानै छियै, एत्तें बड़ों पाप गाँव-टोला के लोगें तें की, आरो गाँव भरी के लोगो नै करें पारें। कुछु हमरों भागे के दोख होतै। दोख नै होतियै, तें अमर के बाबू ई दुनियाँ में हमरा असकल्लें छोड़ी कें भगवानो लुग जाय पहुँचतियै, दियोर। जों तोहें केकरो नाम बतैय्ये दैलें ऐलों छौ, तें एकरा सें की होतै, जिनगी भर वास्तें ऊ आदमी सें घृणा पालतें रहवै, आरो ई घृणा-वैर सें हासिले की होयवाला छै।'' फेनु कटी टा मुस्कैतें वैं बातों कें बदलतें कहलें छेलै, ''ठिक्के, जोंर होथौं, चेहरा कुम्हलैलों हेनों लागै छै...अच्छा चलियौं, दियोर; बलजीत अकेले बाँधों पर गेलों छै, जों बीड़ी ओराय गेलों रहै, यही लें पाँच-छों मुट्ठा आरो पहुँचाय दियै।''

''कैन्हें? अमरजीत?''

''ओकरा तें, कल्हे तगेपुर पहुँचाय ऐलियौं। यहाँ रहतियै, तें मार करतियै, मार खैतियै, आरो की। मंझला मामा कन रहतै, तें आरो कुछ हुएँ-नै-हुएँ, पढ़ी-लिखी तें लेतै जरूरे। से कल विहानिये कामेसर दियोर सें कहैलियै, बैलगाड़ी तैयार करों आरो हमरा जगदीशपुर लै चलों। कटियो टा ना-नुकूर नै करलकै, दियोर। दुपहरिया तांय वहाँ पहुँचलियै, अमर कें फूल दा कन छोड़लियै, आरो बेरा डुबतें-डुबतें गाँव आवी गेलियौं। अच्छा, फुर्सत सें आरो बात करवौं, इखनी चलै छियौ, दियोर। बेर होलों जाय रहलों छै, वहू सोचतें होतै, माय केन्हैं नी ऐली छै।'' आरो सत्ती खेत के एकपैरिया रास्ता पकड़ी कें बाँधों पर चढ़ी ऐलों छेलै, फेनु झब-झब बोंर गाछ तांय पहुँची बाँधों सें नीचें उतरी ऐलों छेलै।

चेतु के आँख सत्ती कें तब तांय पिछुऐतें रहतै, जब तांय कि ऊ आँख सें ओझल नै होय गेलों छेलै। ओकरों मोंन होय रहलों छेलै, कि ऊ भागलों-भागलों ओकरों लुग पहुँचै आरो गोड़ पकड़ी, भोक्कार पारी कें कानी पड़ै।

जबें चेतु आपनों घोंर दिस घुमलै, तें ठिक्के ओकरों देह-हाथ जोंर सें तपें लागलों छेलै।

(५)

'एकठो अमरजीत की गामों सें निकललों छै, सौंसे पाँच घरों के कैथटोलिये हवांख लागै छै।'' सिद्धीं बायां तरहत्थी के खैनी कें चुटकी सें चाँपतें कहलकै, आरो निचलका ठोरों कें आगू बढ़ैतें ओकरों जड़ी में राखी लेलकै।

''की बोललैं, कैथ-टोली।'' बदरी कें ई बात अजीबे लगै छै, कि पाँच घरों सें भला टोलों केना बनें पारें, मतर ई शंका कें दबैतें एतन्हैं बोललै, ''घोंर कहै नी, तीन गोतिया, पाँच घोंर बनाय लै, तें टोलों केना बनी जैतै। टोला के मतलब छेकै, कम-सें-कम दस घोंर।''

''यहा नी बूझैं रे, बदरी, की रं चलती छेलै, अमर के परबाबा केरों। जखनी नदिया सें आवी कें यहाँ बसी गेलै, तहिये सें ई कैथटोली कहावै छै, आदमी की, सौ-पचास? बस दस-पाँच ठो। वहू की यहाँ रहै हुनी? कभी बाँका, कभियो कहूँ, तें कभियो कहूँ। हमरों बाबा बोलै छेलै कि हुनी बड़ी दबदबावाला छेलै। चम्पा नगर के महाशय ड्योढ़ी सें सीधे संबंध छेलै, ई कहैं कि हुनिये हिनका यहाँ मालगुजारी उगाहै लें राखलें छेलै। ई सब महाशय जी के इलाकाहै में पड़ै छेलै, जमीन-जायदाद अफरात छेलै। जे जहाँ बसी गेलों, तें बसी गेलों। के पूछै छेलै, जमीनों कें। है नी कहैं कि पकड़ी-पकड़ी कें बसाय छेलै। हिनी जबें यहाँ ऐलों छेलै, तें एक घोंर नै छेलै। कोय यहाँ बसै लें नै चाहै छेलै, वहू में जहाँ विरिज काका हेनों आदमी बसें। कहै छै नी कि कैथों के मरलों हड्डी विसाय छै। कखनी कोन फेर में फाँसी दें।'' बदरी एक अंगुरी सें निचलका ठोरी कें दाबतें जोरों सें हाँसी पड़लै कि खैनी ठो बाहर नै छिलकी आवें।

''आरो बसलै, तें हमरोंसिनी के पूर्वज के टोला में, जेकरो डरों सें अच्छा-अच्छा ब्राह्मणों काँपै छै।'' बदरी ठोर बन्द करलें हाँसलै।

''उल्टाहै सोचलैं, बदरी। एकरा में महापात्र के कोय रौब-दाव नै दिखै छै, एकरा सें तें घोषे परिवार के महानता दिखै छै। जे महापात्र के बारे में केन्हों-केन्हों बात अभियो तांय प्रचलित छै, हुनी आपनों घरों के दक्खिन में नै, पश्चिम में जमीन दै कें बसैलकै, आरो आपनों घरों के ऐंगन तांय हमरा सिनी वास्तें खोली देलें छेलै। बदरी, तोरे नी गोतिया छेकौ, विसुआ;

साकलदीपी ब्राह्मण बनी कें रही रहलों छेलै, भागलपुर के छात्रावास में। आरो जबें पता चललै कि साकलदीपी नै, महापात्र छेकै, तें की-की नै दुर्दशा...।''

''अरे, ई तें तीस-चालीस बछर के बात भै गेलै। आय ई सब थोड़े होय छै?''

''अरे होय कें तें गामों में हिन्दु-मुसलमान के घोंर सटले-सटले होय छै, तें की मनो ठो की? दूर के बात छोड़ी दैं, सत्ती बोदी मसूद्दी काका के यहाँ जनानी होय कें जाय छेलै, तें की मसूद्दी का हिन्दू बनी गेलै कि बोदिये मियैन होय गेलै। होनै कें ब्राह्मण-ब्राह्मण में भेद बुझें। पकड़ी कें कोय राखलें छै की, मतुर है बात केन्हौ कें नै भूलें पारै छियै कि श्राद्धी के बाद जबें पूजा-पाठ कराय कें विसुनवां द्वारी सें उठलों छेलियै, तें विसुनवां एकटा कनखों उठाय कें हमरों दिस करतें गिराय देलें छेलै। वैं की समझै छेलै, हम्में ई बात नै जानी रहलों छेलियै। कोन्हराय कें तहीं सें तें देखी लेलें छेलियै।''

''धुर, छोड़ें ई सब बातों कें।''

''छुटले छै, कौंने पकड़ी कें रखलें छै। मतर कनकटलों घैलों आगिन पर चढ़ले रहै के बात....।''

''माथों लें धरलें छै। ऊ सब बात कभी सोचलें छेलैं कि सत्ती बोदी के घरों में बिना रोक-टोक घुसना छै आरो बदरी हुनके बिछौना पर टाँग पसारी कें सुती रहतै, आय छोटका ऐंगन के बिछौना पर की रं पहुनों नाँखी जमी जाय छैं। की रं भनसो घरों में ढुकी कें खाना परोसी लै छै। देख, आदमी बानर के विकास छेकै, तें की आदमी दोनो हाथों सें अभियो चूतड़ के नीचे आपनों नगेट्ठी खोजलें फिरै छै। खोजवो करतै, तें मिलतै की? बुड़बक, ऊपर उठी गेलों छैं, तें सरंग के बात करें। की लै दै कें नगेठी पकड़ी लै छैं।

''अरे बुड़वक, हौ बुच्चों बाभन, है बुच्चों बाभन है सब कथी लें घोकतें रहै छैं। की समझै छैं, कि है सब कहला सें नौकरी में आरक्षण मिली जैत्हौ की। आखिर तखनी बाभने घोषित होय जैवे, भले आरो बाभन तोरो बाभन बूझौ-नै-बूझौ। की बूझै छैं, सब कैथो की एक्के समान होय छै। वाहूँ सीढ़ी बनलों छै। एक, दू, तीन, चार। बलजीत के बड़का बाबू अपना कें

भले सौकालीन कैथ बतैतें रहें, मतर देशला की बूझै छै, सब्भे कें मालूम छै। आरो जों देखें, तें देशला कोय्यो नै। कोय राजस्थान सें ऐलों, तें कोय मध्यप्रदेश सें, तें कोय बंगाल सें।'' ई कही कें माधो दिल खोली कें हाँसी पड़लों छेलै—ही, ही, ही, हा, हा, हा, हा।

''हाँसै छैं माधो आरो तोरों हँसी कैठां बैठी रहलों छै, हम्मू जानै छियै।'' बदरी के आँख कुछ कड़ा होय गेलों छेलै, ''अरे भाग मनावें भाग कि यहा सौकालीन कैथ छेकै, जेकरों कारण अइयो ठिठियाय रहलों छैं, नै तें पाँच घोंर जेलों के पाँच कोठरी होतियै। बहू बेचारी तें आपने जात के नी छेलै, रे ! हाय, बेचारी के की दोख छेलै। कहिया बीहा होलै, कहिया सांय छोड़ी देलकै, ओकरा ठीक सें मालूमो नै होलै, जुवान होलै, तें के आपनों पाप ओकरी कोखी में छोड़ी देलकै, आरो कखनी कौनें ओकरा जीत्ते जी मारी देलकै, हेकरों पतो नै चललै। रातो-रात नद्दी में लकड़ी सुलगलै आरो दुर्गंध उठलै, तें गाँववाला के माथों ठनकलों छेलै। पटवारी नदी दिस बढ़लै, तें अधजरले लाश छोड़ी कें सब भागी गेलै। के छेलै जरायवाला, पतो नै चललै, खाली लहाश के पता चललै, बेचारी पुनिया के लहाश, पचीस-तीस बछर सें बेसी के नै होती, बेचारी। तोरहौ याद होतौ, भिहाने बौंसी थाना के पुलिस की रं दनदनैलों पहुँची गेलों छेलै। हौ तें बुद्धिमानी समझें कि लहाश रातोरात खाक होय गेलों छेलै आरो विहानै केना कें लक्ष्मीदा कहाँ सें आवी गेलों छेलै। एक तें मास्टर, दूसरों जे रं अंग्रेजी में बोलें लागलों छेलै कि अंग्रेजी पुलिस के होशे उड़ी गेलै। पुलिस अफसर हाथ मिलैलें छेलै आरो बौंसी लौटी गेलों छेलै। नै तें आय तांय ई गाँव पुनिया के देही में लागलों आगिन में झुलसतें होतियै। आरो सौकालीन कैथों के नामों पर ठिठियाय रहलों छैं। ई संस्कारो रखवे आरो वाभनों कहैवे, भला ई कहीं होलों छै।'' वही पर अब तांय चुपचाप बैठलों आरो टुकुर-टुकुर एक दूसरा कें देखतें बल्लो सें नै रहलों गेलै तें कुछ बुदबुदैलै आरो फेनु इसपिरिंग लागलों पुतला नांखी झट सें ठाढ़ों होय गेलै, ई कहतें, ''चललियौं, तोरा सिनी के जे पुराण पढ़ना छौ, पढ़ें।''

''रुकें, रुकें, बल्लो, ढोढ़वा के काटलें बिक्खे कत्तें? आरो एकरासिनी अमरजीत कुलों के मान-प्रतिष्ठा के बारे में जानवे करै छै कत्तें?'' अब तांय चुप्प कल्लर बोललै, जे सुनी कें आपनों उस्सट आवाजों में माधो नें कल्लर

सें पुछलें छेलै, ''कल्लर, एक बात पूछियौ?''

''पूछ, की पूछै लें चाहै छैं?'' कल्लरो लगले बोललें छैलै ।

''अच्छा कल्लर, देहों सें भले तोहें कल्लर रहें, दिमागों सें तें बरियों छेवे करैं; ओकर्‌हौ पर तोहें गनौरी गुरुजी रों फेटलों चटिया रहलों छैं; की तोहें है बतावें पारें कि पुरानों जमाना में, राजा-रजवाड़ा के गुनगान करैवाला के कै किसिम होय छेलै, आरो ऊ सिनी कोंन-कोंन नामों सें जानलों जाय छेलै?''

एक दाफी तें कल्लर कें लागलै कि इखनी है पूछै के की मतलब, तहियो वैं माधो मिसिर के सवाल के लगले जवाब देलकै, ''है कोंन बड़का सवाल छेकै, आपनों आश्रयदाता रों उच्चा कुलों में जन्मैवाला प्रशंसक सूत कहावै छेलै, जेनाकि राजा रों वंश रों प्रशंसा करैवाला मागध कहावै; प्रसंग के अनुकूल सुदर-सुंदर पंक्तिसिनी रची कें राजा के प्रशंसा करैवाला वंदीजन जानलों जाय, तें राजा के प्रशंसा करी हुनका भोरिया जगावैवाला वैतालिक नाम सें जानलों जाय; जेनाकि हर प्रमुख कार्य, यहाँ तांय कि युद्धो में साथ रही कें राजा रों शौर्य के वर्णन करैवाला चारण कहावै। आखरी में भांट आवै छै—आपनों जजमानों के प्रशंसा करी कुछ पावैवाला प्रशंसक भांट कहावै छै।''

''एकदम ठीक बोलल्हैं, कल्लर'', माधो आपनों बायां हथेली सें दायां हथेली पर घूसा मारतें कहलकै, ''आबें ई बताव कि जे किसिम सें तोहें अमरजीत के कुल-खनदानो के प्रशंसा करतें रहै छैं, तें तोहें ई सब के कोंन कोटि में आवै छैं—वंदी, की वैतालिक, की चारण, की भांट?''

अबकी है सवाल सुनत्हैं कल्लर एकदम सें तिलमिलाय गेलों छेलै, मतर बोललै कुछुवे नै, जेनाकि आरो सिनी दोस्तो ई बातों पर एकदम चुप्पी लगाय गेलों छेलै। माधो ई चुप्पी के मानी समझी गेलों छेलै, तें बात कें थोड़ों बदलै के कोशिश में बोललै, ''बुरा तें नै मानी लेलैं, कल्लर? ठिक्के कहै छियौ, हम्में तें तोरों ज्ञान सबके सामना में राखै के खयाले सें तोरा है पूछी लेलें छेलियौ। आखरी बात तें खाली हँसी-मजाके वास्तें कही देलें छेलियौ। बुरा नै मानियैं।''

मतर ई कहलौ के बादो माहौल नरमैलों कहाँ छेलै! कल्लर आपना कें रोकें नै पारलें छेलै, तें कहिये बैठलै, 'मसानी के पूजा करैतें-करैतें दिमागो मसान होय गेलों छौ, बीहा के मंत्र नै नी सुहैतै।'' मतर माधो के चेहरा पर

है सुनला के बादो कोय फरक नै पड़लों छेलै, जेना वैं कल्लर के है बात सुनले नै रहें। कुछ गमिये कें बोललें छेलै, ''अच्छा, आयकों सभा यहीं खतम। आगू के बात आबें कल।''

(६)

आशुतोष बाबू यानी कि बलजीत के बड़का बाबू, हिनका गाँव भरी में आधों लोग तें वैद्यबाबा आकि वैद्यदादाहै कहै छै या तें फेनु बड़का बाबुए कही कें काम चलाय छै, गाँव में हिनी वैद्यगिरी बीस-पचीस सालों सें करी रहलों छै।

पहिलें तें हिनी हिन्नें-हुन्नें के कामे करी आपनों घोंर चलाय रहलों छेलै, मतर केकरौ कन हिनका सरल आयुर्वेद चिकित्सा नाम के कोय पुरनकट्ठी किताब की मिललै कि ओकरहै पढ़ी कें गाँव-टोला के इलाज करें लागलों छेलै। पहिले तें मंगनिये में जड़ी-बूटी दै दै, फेनु एक आना लिएँ लागलै आरो एक आनाहै अभियो तांय फीस छै। बीमारी कोय किसिम के रहै, गुरीच के काढ़ा हुनी पीयै लें जरूरे बतावै छै, आगू कहुआ के सेवन करै लें।

दवाखाना की हुनको दवाखाना छेलै, ओसरा कें पाँच हाथ के टटिया सें घेरी लेलें छेलै आरो वही में एकटा कुर्सी आरो टेबुल आपनों लेली राखी लेलें छेलै। टेबुले पर चार अंगुरी के लंबा-चौड़ावाला कागज के ढेर सिनी गोछियैलों टुकड़ा, जे अखबार के काटलों कतरन छेलै। रोगी के बैठै के स्थान ओसारै पर छेलै।

पहलें जे रं हिनी मुफ्ते में जड़ी-बूटी दै देलें छै, आयकल वही रं स्वस्थ रहै के विधियो भी बतैवों शुरू करी देलें छै। यै लेली हिनी अलग-अलग गत्ता पर स्याही सें दू-दू, चार-चार पंक्ति के कविता लिखी कें टांगी देलें छै। है बात कोय चार-पाँच रोज के नै, रातिये सें हिनी है बदलाव करलें छै। से जखनी विसुनदेव महतो पेटचल्ली के शिकायत लैकें हुनकों पास ऐलै, तें रोग

की बोलतियै, टटिया पर टांगलों कविताहै पढ़ें लागलै। सबसें पहलें तें सामन्हैवाला दीवारी पर नजर गेलै, जै पर दू तखती टंगलों रहै, एक पर लिखलों छेलै,

नमक महीन मिलाय कें वैमें करवों तेल
रोजे मलै, तें दर्द मिटै, छुटियो जाय सब मैल

आरो दोसरा में,

नीमी दतमन जे करै भुनलों हर्रों चबाय
दूर वियारी नित करै ऊ घर वैद्य नै जाय।

अभी विसुनदेव महतो बायांवाला दीवारी दिस घुरवे करतियै कि आशुतोष बाबू आवी गेलै। कहलकै, "की पढ़ै छै, विसुनदेव? पढ़ी ला, पढ़ी ला ! बाद में जे पूछना-कहना होतौं, कहियों। पहिले दायांवाला दीवारी पर लिखलों देखें, की लिखलों छै। तोरा सिनी वास्तें किताबे लिखी कें रखी देलें छियौ।

हुनी इशारा करलकै, तें विशुनदेव पाँच गत्ता कें जोड़ी कें बनैलों तखती पर लिखलों पढ़ना शुरू करलकै,

फागुन शक्कर जों कोय खाय
चैते औरा आरो चबाय,
बैशाखों में खाय करेला
जेठें दाख, आषाढ़ केला
सावन हर्रों, भादों चीत
आसिन मास गूड़ खाय मीत
कातिक मूली, अगहन तेल
पूसमास में दूध सें मेल
माघों में घी-खिचड़ी खाय
फागुन में जे भोरे नहाय
ओकरों घर पर वैद्य नै जाय।

आखरी पंक्ति पढ़ी कें मुस्कैतें हुएँ विसुनदेव नें वैद्य आशुतोष बाबू कें देखलकै, तें हुनी कुर्सी पर दोनों टांग चढ़ाय चुकुमुकु बैठतें पुछलकै, "तें आबें बतावों, कथी लें ऐलों छों?"

"की कहियौ वैद्यबाबा, उदसिया के खुजली तें छुटवे नै करै छै,

कोय दवाय देतियौ।''

वैद्यबाबा कें मालूम छै कि दवाय तें लेतै, दाम दै के नाम पर महीनो भरी झुलैतै, सें हुनी कहलकै, ''विसुनदेव, दवाय लेवा, तें एक टाका लागी जैतौं, हम्में तोरा दवाय बनाय के तरीके बताय दै छियौं, एक्को आना नै खरच होथौं, आरो दूसरो के इलाज करें पारों।''

'ई तें आरो बढ़िया, बाबा।''

''तें सुनों,

लटजीरा रों पात कें
टिकिया लिऐं बनाय
करूवो तेल में भूनी दें
बँधै कि खुजली जाय।

या नै तें फेरू एक आरो तरीका छै,

अरहर दाल जलाय कें
दही में दिहैं मिलाय
पकलों खाज पर लेपथैं
देथौ रोग भगाय।

''ठीक छै, वैद्यबाबा। आजे ई सब करै छियै।'' ई कही कें विसुनदेव जेन्हें दायां हाथों के बल्लों पर उठै के कोशिश करलकै, कि आशुतोष बाबू बोललै, ''बैठों विसुनदेव, बैठों। हड़बड़ाय के की जरूरत छै। जबें दवाय के किताबे बताय देलियौं तें जिनगी भर बनैतें नी रहियौ। ऐलों छों, तें थोड़े थिराय ला नी। जरा गाँवों के हाल-चाल सुनाय लें।''

आरो विसुनदेव जबें दीवारी सें टिकी ठेहुना मोड़ी कें बैठी रहलै, तें आशु बाबूं पुछलकै, ''की विसुनदेव, तोरों तें अमरजीत कन खूब आना-जाना होय छौं। आयकल अमरा के माय के कोय खोज-खबर ठीक सें नै मिली रहलों छै, तोरा तें मालूम होथौं। हेनों की बात छै, जे तोरा नै मालूम हुवें।''

''से तें ठिक्के कहलौ, वैद्य दादा मतर हौ घटना के बाद हमरौ कुछ ढेर पता नै लागलों छै कि नैकी बोदी कहाँ छै।''

''आंय, कोन घटना?'' आशु बाबू कुर्सी पर होने बैठलों-बैठलों विसुनदेव दिस थोड़ों आरो टा झुकी गेलों छेलै।

''तें, तोहें नै जानै छौ की? अरे बाप।''

''कैन्हें, की भेलै?'' आशु बाबू अबकी आँखी पर सें गोल फ्रेमवाला चश्मा उतारी कें टेबुलों पर राखी देलें छै, आरो जखनी हुनी चश्मा उतारी दै छै, तें आँख बड़ी छोटों दिखावें लागै छै, तखनी हुनी आँख फाड़िये-फाड़िये कें सामना के चीज देखै के कोशिश करै छै। ई कोशिश में हुनकों कपारों पर रेखा सिनी के ढेरे धनुष बनी जाय छै।

बात कें समझतें हुएँ विसुनदेव बिना आरो देर करल्है कहना शुरू करी देलकै, 'वैद्यबाबा, नैकी यानी सत्ती बोदी के कोय आपनों भाय तगेपुर में रही छै की?''

''हों, रहै छै।''

''हुनी शायत वांही जगदीशपुर इस्कूल में गुरुओ जी छेकै।''

''हों छेकै।''

''तें, हुनकै कन नी अमरजीत कें छोड़ी ऐलों छै, पढ़ै लें। सुनै छियै, हुनकों डांट-डपट आरो मरखन्नों स्वभाव के कारण एक दिन भोरे-भोर अमर यहाँ आवै लें मोटर गाड़ी पकड़ी लेलकै। टिकट के पैसा छेलै कि नै छेलै, के कहें पारें। जबें मामा के घरों सें भागलों छेलै, तें नहिये होतै, आरो की समझी गाड़ी के भीतर नै बैठी के ओकरों छत्तो पर बैठी रहलै। यहूं सोचलें रहें कि इस्कूली बच्चा समझी कें पैसा नै माँगतै।''

''आगू की होलै, से नी बतावों।''

''वही तें बताय रहलों छियौं, बाबा। ठिक्के टिकिटवालां बच्चा-बुतरु समझी कें नै टोकलें छेलै, मतुर संयोग देखों। वही गाड़ी में हुनकों तगेपुर वाला मामाओ सवार छेलै। सवार छेलै, तें छेलै, मतुर देखों संयोग कि अमरजीत के नजर मामा पर पड़ी गेलै। केना पड़ी गेलै, है तें नै बतावें पारौं। हुवें सकै छै, गाड़ी के भीतर में हुनी केकरौ सें बात करतें रहें, जे अमर सुनी लेलें रहें; सुनी लेलें रहें तें शंका मिटाय लें झाँकलें रहें। मामा खिड़किये लुग बैठलों रहै। जे भी हुएँ, अमर जेन्है जानलकै, कि गाड़ी में मामा बैठलों छै, ओकरों देहों में तें थरथरी घुसी गेलै। सोचलें होतै आबें करौं की? शायत मामा के नजर ओकरा पर पड़िये गेलों होतै। है बात कै ठियां के छेकै, ई बताय दियौं, बाबा?''

''कै ठियां के छेकै?''

''जगदीशपुर सें जेन्है टेकानी दिस बढ़ै छौं नी। दसे कदम के बाद

जोरिया नै बहै छै। देखोॅ नी ओकरोॅ की नाम छेकै। हों याद ऐलौं....कोकरा नदी. .सावन-भादो के दिन। भले चानन नदी के धार काटी कें लानलोॅ गेलोॅ रहै, तखनी तें ऊ चानने रं खौली रहलोॅ छेलै। आरो गाड़ी वहें कोकरा नदी के पुलोॅ पर आवी कें खाड़ोॅ छेलै, टिकिट के पैसा वसूली वास्तें। फेनु की छेलै, अमरजीतें आव नै देखलकै ताव, मोटरगाड़ी के छत्तोॅ सें सीधे कोकरा नद्दी में धौंस दैये नी देलकै। सुनै छियै, जोरिया किनारी पर रहैवाला एक दू आदमी तैरी कें ओकरा बचैय्यो के कोशिश करलकै, मतर हौ खलखलैतें धारोॅ में भला पकड़ें पारतियै !''

''अरे, ई नी बतावोॅ, कि अमरजीत के की होलै?'' आशु बाबू एकदम बेचैन होय उठलोॅ छेलै आरो गोड़ नीचें करै के जल्दीबाजी में हुनी खुद्दे कुर्सी समेत डोली गेलोॅ छेलै।

''देखियोॅ बाबा, संभली कें।'' हुनका इस्थिर देखी कें विसुनदेवैं बिना देर करल्हें कहलें छेलै, ''अमर कें की होना छेलै, बाबा। ऊ तें हेन्है के तालापुल में है पारोॅ सें हौ पार हेलैवाला लड़का छेकै। वहू कि सौनोॅ-भादोॅ धारोॅ में, जे ताला पुल के धार कोकरा सें तनिये-मनिये कम बूझोॅ।''

विसुनदेव के बात सुनी कें आशु बाबू के मुँह ऊपर दिस उठी गेलोॅ छेलै, आँख बंद होय गेलोॅ छेलै, आरो दोनोॅ हाथोॅ के औंगुरी सिनी टेबुलोॅ पर अपने-आप जुड़ी गेलोॅ छेलै; जेना भगवान के प्रति आपनोॅ श्रद्धा निवेदित करतें रहें। कुछ देर वास्तें हुनी वही अवस्था में रहलै, शायत बेसिये।

किशुनदेव घोॅर जाय के हड़बड़ी में कहलें छेलै, ''तें जैय्यौं, दादा?''

''हों, जा।'' आशु बाबूं सचेत होतें कहलें छेलै, आरो वहा रँ चेहरा ऊपर दिस करी कें आँख मुनी लेलें छेलै। हुनकोॅ दोनों हाथ के अंगुरी होन्है कें आपस में अपने आप फेनु जुड़ी गेलोॅ छेलै।

(७)

आशुतोष बाबूं हफ्ता भरी तें जरूरे ई घटना कें छुपैलें राखलकै।

घरों में केकरौ नै जानकारी देलकै, शायत ई सोची कें कि आरो कोय हुएँ-नै-हुएँ प्राती के माय जरूरे परेशान होय जैतै।

प्राती आशु बाबू के एकलौती बेटी छेकै; जेकरों शादी आशु बाबू किशोरेवस्था में करी देलें छेलै, ई सोची, कि माथों के भार जत्तें जल्दी हौल्कों हुएँ, ओत्ते अच्छा; एक बेटा छै, वहू कौन बेटी के भार सें कम छै, आरो ई भार तें हुनका जिनगिये भर ढोना छै, जेना हुएँ। यहा सोची कें आशु बाबू नें प्राती कें धान-पान दै कें खोचों भरी देलें छेलै।

बड़को बेटा घरों में रहवो कहाँ करै छै। दिन भर बाहरे-बाहर। हुनी जाय कें देखलें तें नै छै, मतर लोगों सें सुनलें छै, आरो जेकरा सें सुनलें छै, हौ झूठो केना हुएँ पारें। बेटा सुलेमान दरजी के यहाँ दरजीगिरी सीखी रहलों छै। पहिलों दाफी सुनलें छेलै, तें बात जी हदमदावैवाला लागलों छेलै, मतुर जल्दिये आपना कें संभाली लेलें छेलै, मनेमन ई कही कें—जबें बोमाँये मसूद्दी मियां सें बीड़ी बनाय लें सीखें पारें, तें जों टुन्नू सुलेमान सें दरजीगिरी सीखी रहलों छै, तें कोन अपजसवाला बात ! टुन्नू तें आखिर लड़के छेकै। लड़का जात कहीं छुतावै छै की, छूत-छात तें जनानी वास्तें होय छै?

''सुनै छों, गाड़ी आवै के बेरा होय चललौं, गोड्डा नै जैवौ की?'' प्राती के माय के आवाज ऐंगना सें ऐलै, तें आशु बाबू भी औसरा सें ऐंगना दिस बढ़ी गेलै। ऐंगना के देहरी पर बैठतें हुएँ कहलकै, ''नै, गोड्डा नै जैवै। पता नै अमरजीत के बात सोची कें मोंन केन्हों नी लागै छै, यहू तें पता नै, कि बोमाँ कहाँ छै, महीना भरी सें ऊपरे होय रहलों छै।''

प्राती माय गेहूम डोकवों छोड़ी कें आशु बाबू के नगीच आवी गेलै। मचिया खींचलकै आरो वहीं पर आपनों देह के भार राखी देलकै। कुछ आराम बुझैलै, तें कहना शुरू करलकै, ''आखिर की करतै, बेचारी! दियोर के नुकसान होल्हैं, जे दुख ऊ भोगी रहलों छै, केकरो नजरी सें छुपलों छै की ! हमरौ सिनी की करें पारौं। कहै छै, टुन्नू के बाबा महाशय जी के मुंशी छेलात। बस आपने वास्तें मुंशी। आपने जिनगी भर सुख-मौज भोगी कें चल्लों गेलात। पाँच बीघा जमीन बनाय कें भी राखी लेतियात, तें है दिन देखै लें नै मिलतियै। आबें मुँह खोललै सें की, हुनी जे करलकात—से करलकात, आबें हमरासिनी कें जे भोगना छै, भोगै छी। है भोगवे नी छेकै

कि छोटकी कें आपनों बेटा-बेटी लें भाय-भाय के दुआरी पर माथों टेकै लें लागै छै। फेनु सबकें तें आपनों-आपनों दुख छै। के केकरों दुख बेसी दिन तांय ढोवें पारें। हौ तें उपरामा वाला मास्टर भाय छै कि बेटा कें पढ़ाय वास्तें आपन्है कन राखी लेलें छै। हुनके माथों पर फूलमती के शादियो के भार बूझों। सुनै छियै, एक दिन हमरा बतैलें छेलै, कि उपरामाहै के लड़का छेकै, पढ़लों-लिखलों तें छेवे करै, सुनै छियै सरकारी नौकरियो में छै। जों है बात सही छै, तें आबें आरो की चाहियों, मतर बीहा होन्है कें तें नहिये नी होय जायवाला छै। मानी लें, गाँव भरी कें नहिंये बोलाय छै, तहियो गोतिये-टोला भर ! यहू में तें पाँच हजार सें कम नहिंये, बूझों। फेनु लड़कावाला सिनी की हेनै मानी लेतै? कम्मो-सें-कम पाँच हजार दहेजों में बूझों, जों लड़की कें खाली एक्के साड़ी पिन्हाय कें भेजी दै छौ, तें। फेनु एक्के साड़ी पिन्हाय कें केना भेजवौ ! खानदानो के इज्जतो तें देखना छै। सब पुराय वास्तें एक्के रास्ता बची जाय छै कि सम्पत्ति के नामों पर धरलों आगू के जमीनों कें बेची देलों जाय। भले ओकरा सें आधों साल के खाय-पीयै के कुछ निकली जैतें रहें।'' टुन्नू-माय नें ई सब बात एक्के सांस में कही देलें छेलै।

''है तोहें बोली रहलों छौ, टुन्नू के माय कि...?''

''बोलौं कि नै बोलौं, आबें तोंही बोलों कि पेटों लेली की बेटी कें कुमारिये घरों में राखलों जैतै, आरो फेनु यही लें कल आपने लोग, जे-जे रं बोलतौं नी कि लागथौं कानों में गलैलों शीशा कोय ढारतें रहें। बस मौका पावै के देर बुझों, रोइयां तांय भालों नाँखी गड़ें लागथौं।''

''से तें ठिक्के बोलै छों, प्राती के माय। मतर मानी लें, ई बीहा होय्ये गेलै, खेत-पतार बिकियो गेलै, तें बाद में की होतै। अमर के बड़का मामा ओकरा जिनगी भर नहिये नी राखी लेतै। तबें बोमाँ के पास खाय-पीयै के साधन की रही जैतै? बीड़ी बनैला सें कहीं जिनगी कटैवाला छै? एखनी ई जमीन छै, तें कुछ आशाहौ छै, कुछ ओर-फेर करी कें काम चलैय्ये लै छै।''

आशु बाबू के बात सुनी कें टुन्नू-माय एकदम चुप होय गेलै। कुछ देर सोचत्है रहला के बाद हौले सें बोललै, ''आबें की होत्है, एकरों बारे में अभिये सें की सोचना छै। भगवाने एक मुँह देलें छै, तें दू हाथो देलें छै। फेनु ई दुनियाँ में के भुखलों रहलों छै। चिड़ियौ अपना लें दाना खोजी लै छै, वहूं घोसला के बच्चा पाली-पोसी लै छै। आदमी तें आदमिये छेकै। पहिले

फूलमती के बीहा तें तै होय जाय। की बूझै छौ, बेटी रों रिश्ता कादों में बीहन फेकवों छेकै कि हिन्नें सें बीया डालों आरो हुन्नें सें पत्ता लेलें गाछ बाहर निकली जाय। ई बीहा छेकै, आरो गरीबों के बेटी के बीहा; सौ तितम्बा, सौ झमेला; माय-बाप कें नांगटों करी कें छोड़ै छै, बेटी के बीहा। कोनो ड्योढ़ी परिवार के बेटी के तें बीहा छेकै नै।''

''तोरा है बात के बोललकौं, कि अमर के मामा फूलमती के बीहा उपरामा में लगाय रहलों छै?''

''बोमाँए एक दिन बोली रहलों छेलै।''

''तोरा बोलै के मतलब?''

''आबें है बात जनानी जनानी कें नै बोलतै, तें की तोरा सें बोलतौं। होना कें ई बात तोरहौ सें बोलें पारें छेलै, आबें नै बोललकै, तें कुछ सोचल्है होतै।'' कि तखनिये टुन्नू-माय के नजर पछियारी दिवारी पर पड़लों छेलै, हड़बड़ैतें ऊ बोली उठलै, ''अगे माय, बेरा डूबै पर छै, एकरों तें पतो नै लगलै। फटकी कें पीसनौ छै। घरों में चुटकियो भर चिकसों नै छै। खाना की बनतै।'' आरो ऊ पहिलके जग्घा पर बैठी कें अन्न जल्दी-जल्दी डोकें लागलों छेलै, पटर, पटर, पटर, फट, पटर...

आशु बाबू चुपचाप औसारा पर लौटी ऐलों छेलै।

(८)

सकीचन कें आदमी रों मोंन के बड्डी पकड़ छै। के आदमी कत्तें दुखी छै कि नै छै, दुखी छै, तें कत्तें दुखी छै; खुशी छै, तें कत्तें भीतरिया छै, कत्तें बनावटी; सब बात वैं कोय्यो आदमी के चेहरा देखत्हैं भाँपी लै छै। तें आशु बाबू कें ओसरा पर गुमसुम बैठलों देखत्हैं, जैतें-जैतें रुकी गेलै, आरो आपनों गोड़ हुनके दुआर दिस बढ़ाय देलकै।

बरण्डा के नगीच ऐत्हैं रुकतें कहलकै, ''की बड़का दा, मनझमान देखै छियौं?''

''नै, मनझमान कथी वास्तें। कोय काम नै छै, तें हेन्है कें चुपचाप बैठलों छियै, आरो की।''

''नै दादा। होन्है कें बैठवों आरो कुछ चिंता में बैठवों, दोनों के तरीका अलग-अलग होय छै। खैर, कुछु पता लागलौं कि सत्ती बोदी कहाँ छै, कहै के मतलब कोंन भाय कन छै? भाइयो में बड़के भाय कन की? बेसी तें एकरे उम्मीद रहै छै। घरों में बताय कें तें नहिये गेलों होथौं।'' सकीचन कल्हें-कल्हें बरण्डा के एक कोना में पड़लों मचिया कें खीची कें वैपर बैठी रहलों छेलै, आरो आपनों बातों के राग कसतें आगू कहलें छेलै, ''दादा, तोहें तें ढोलक-ऊलक बजावै नहिये छौ, तें ढोलक बार्‌हौ में कुछ नहियें जानतें होभहौ। देखों दादा, ढोलक के दू मूँ होय छै, जे मुँहों सें संगीत फुटै छै नी, दिन-दिन धिन-धिन, ताक-ताक धिन्ना, ऊ मुँह नर कहाय छै। जानै छौ बड़का दा, नर एत्तें सुन्दर आरो साफ कैन्हें बोलें पारै छै, कैन्हें कि ओकरो मन तें ऊ मसालावाला मुँह नाँखी होय छै, जे खाल के भीतरी सें लगैलों जाय छै। नर के मन कें दूरे सें पहचानलों जावें सकै छै आरो मेदी के मोंन के पहचाननै मुश्किल, ढोलक के जे मुँह मेदी कहावै छै नी, वहाँ मसालावाला भीतरी मोंन नै, तें आवाजो होने गोल-मटोल। ओना कें सब्भे जनानी के मोंन आरो ढोलक के मेदीवाला मुँहों में कोय अंतर नै, मतर सत्ती बोदी तें ढोलक के मेदिये वाला मुँह ही बूझों। की आवाज निकलै छै, की अरथ भेलै, समझनै मुश्किल। की कहतौं, कहाँ जैथौ, ई तें समझवों आरो मुश्किल। की है बात झूठ छेकै, बड़का दा?'' सकीचन नें आँख कें एकोसी करते हुएँ आशु बाबू कें देखलें छेलै।

''ढोलक के तें बात नै कहें पारौं, मतर बलजीत-माय के सोभावों के बारे में कुछ पता लगाना बड़ा मुश्किल।'' ई कहतें हुएँ आशु बाबू आपनों दोनों टांग काठवाला कुर्सी पर चढ़ाय कें चुकुमुकू बैठी रहलों छेलै।

हेना बैठै के मतलबे छै कि हुनी सामनावाला के बातों पर गौर करलें छै। ई बातों कें सकीचन भी खूब बूझी रहलों छेलै, से बातों कें आगू बढ़ाय में वैं कटियो टा कसर नै करलें छेलै, ''खैर, ई बात तोहें कहों कि नै कहों, मतर है तें जानले बात छेकै कि बोदीं घरों में केकरो कुछ नै बतैलें होलें होथौं, मतर गाँवों में खिरनी धनुकायन छै नी, ओकरा सब मालूम छै। टाड्‌ढीवाली कें, वही कही रहलों छेलै कि....।''

''के टाड्ढीवाली?''

''हमरी कनियैन टाड्ढिये के नी छेकै, आबें तोहें भुलावें लागलों, बड़का दा। खैर छोड़ों, तें हम्में कही रहलों छेलियौं कि खिरनी धनुकायन नें टाड्ढीवाली कें बतैलें छै, कि फूल के बीहो ओकरों बड़के मामा ठीक करलें होलें छै उपरामा के कोय लड़का सें।''

''सकीचन के बात सुनी कें आशु बाबूं आपनों दोनों गोड़ कुर्सी सें उतारी, टेबुल के नीचें लगलों तखती पर राखी लेलकै, आरो सकीचन दिस कुछ झुकतें हुएँ बोललै, ''आरो की बोललों छै?''

''बाकी तें आरो नै बतावें पारभौं, बड़का दा। हों एतना जरूरे जानै छियै कि लड़का कोनो कैथ संस्कारों के नै छै, सेहे पता लगावै लें सत्ती बोदी भागलपुर पहुँची गेलों छै। फूलमती कें साथे लै जाय के मतलब बूझै पारै छौ। हुएँ पारें, देखा-सुनियो पक्की करल्है आवें।''

सकीचन के बात सुनी कें आशु बाबू एक बार कुर्सी पर एकदम सीधा होय गेलै, जेना हुनकों दिमाग में बात एकदम ठीक-ठीक बैठी गेलों रहें। आशु बाबू के ऊ स्थिति देखी सकीचनो नै रुकलों छेलै आरो आपनों बात में आखरी बात ठोकतें हुएँ कहलकै, ''आरो जों ई बात सहिये छेकै, तें है बूझों कि सामना के बारीवाला जमीन अबकी बिकन्है छै। कुशवाहा काका के नजर ऊ जमीनों पर लागले होलों छै। यही बूझों कि जखनी बोदी जे माँगतै, जेना माँगतै, जोंन वक्ती माँगतै, ऊ सब कुशवाहा काका कें मंजूर। खैर, चलै छियौं, बड़का दा।''

''से हेनों की हड़बड़ी छौं?'' आशु बाबू चाहै छेलै कि सकीचन कुछ देर लेली आरो बैठें, शायत आरो कुछ हुनी जानै लें चाहै छेलै, मतुर तखनिये कमर सीधा करतें सकीचनें कहलकै, ''छै नी हड़बड़ी, बड़का दा, ऊ पछियारी टोला में केशो दां लाल दा सें जे गाय खरीदलें छेलै नी, तें बेचै वक्तीं यही कही कें बेचलें छेलै कि गाय एकदम देशला छेकै, पिठाली रं दूध करथौं आरो दोनों शाम मिलाय कें दस सेर सें कम नै। तें बड़ी हुलासों सें केशो दां गाय खरीदी तें लेलकै, मतुर निकली गेलै जरसी। आबें जे गाय के टाँगे में दम नै हुएँ, ओकरों दूधों में की दम होतै, बड़का दा। पहिलें तें लाल दा सें केशो दा के खूब कहा-सुनी होलै, केन्हों के बात थमैलै, तें बूधो दा सें केशो दा के होय गेलै, बस यहा सोचों कि लाठी नै चललै, नै तें उटका-पैची में कोय्यों

कसर बाकी नै रहलै। बात होलै कि पनछेछरों दूध कें लैकें बूधो दां केशो दा के दुआरिये पर पहुंची कें जोरों-जोरों सें कहें लागलै, ''दूध दै रहलों छैं, कि पानी? एक गिलास दूध में दू गिलास पानी। एकदम छुर्र पानी।'' बस की छेलै, बमकिये नी गेलै केशोदा। बोलतें-बोलतें यहू कही देलकै, कि, देह केन्हों कि देशला गाय के पिठाली रं दूध पचाय लें ऐलों छों। एक दिन पीवे, तें दोनों कोठा चलें लागतौ। ऊ तें तोरों नसीबों सें ई जरसी गाय निकली गेलौ, नै तें देसला के दूध से अब तांय घाट पहुँची गेलों होतियैं।' बस यहें सब बात कें लैकें जे हूल-हुज्जत शुरू होलों छै, तें परसू सें नै रुकलों छै। चलियै, सलटाय दियै। तें, चलै छियौं बड़का दा। प्रणाम।'' ई कही कें सकीचन उठलों छेलै आरो सीधे सिधयाय गेलों छेलै।

ई बात हेनों छेलै कि केकरों हँसी आवी जैतियै, मतर आशु बाबू साथें हेनों नै होलों छेलै। हुनी आपनों आँखी पर सें गोल चश्मा हटैलें छेलै आरो दोनों गोड़ कुर्सी पर चढ़ाय कें वहा रं चुकुमुकू बैठी रहलों छेलै, आपनों माथा छपरी दिस करते हुएँ।

(६)

''हे बोदी, ऊ लड़का सें फूलमती के बीहा....नै जानौ कैन्हें मनों कें विचलित करै छै।'' सत्ती चूलों रों लट्टों आपनों कपाड़ों सें हटाय के पीछू करतें कहलकै।

''कैन्हें, की होलै? लड़का में कोन ऐव सुनी ऐलौ की, आरो केकरा सें?'' अनुकंपा रों चेहरा के चमक हठासिये फीका पड़ी गेलों छेलै।

''हम्में उपराम्है के एकटा सवासिन-मुँहों सें सुनलें छियै कि लड़का चोरी-चपाटी लै कें समाजों में कोय भला नजरी सें नै देखलों जाय छै।''

सत्ती सामना के बातों के बिना कुछ खयाल करले कहलें छेलै, जेकरा सुनत्हैं अनुकंपा मुँहों पर अंचरा राखी कें खिलखिलाय उठलों छेलै, ''तहूँ, ननद, कहाँकरों और कहैकरों बात उठाय कें लै आनलें छों। अरे, ई

बात की आयकों छेकै, आठ-दस बरिस पहिलकों बात कहों। हमरौ मालूम छै। यही नी कि लड़का गाँमे के एक हलवाय के सूनों घरों में पाँच छों छौड़ा के साथ ढुकी गेलों छेलै। तें होयवाला जमाय की असकल्ले छेलै, पाँच-पाँच ठो आरो वैमें तीन तें अपने घरों के निकलतौं। सुनवौ कथा ! सब जानवे करै छेलै कि साव जी हटिया गेलों छै, तें बेरा डुबला के बादे लौटेवाला छै, मतुर है के जानै छेलै कि कोय काम लैकें सांझ होय सें पहिले लौटी जैतै। आरो आरो छौड़ा सिनी तें दीवार फानी कें भागी गेलै, मतर ई जवान मिठखौकों होय के चक्कर में घरे में रही गेलै। केवड़ा रों ताला-झिंझरी खोलै के आवाज सुनलकै, तें भागै के कोय रास्ता नै देखी कें नंगधड़ंग होलें, चूल्हा के सबटा राख देहों पर ढारी लेलकै...'' कहतें कहतें अनुकंपा आकाश दिस मूँ करी कें खूब जोरों सें खिलखिलैलों छेलै, आरो फेनु बचलों बात कें जल्दी-जल्दी पूरा करलें छेलै, ''जबें देह, हाथ, मुँहों में करखी-राख पोती लेलकै, तें द्वारी पर आबी कें खाड़ों होय गेलै। साव जी के द्वार खोलना छेलै कि सामना के दृश्य देखी कें सोचलकै; प्रेते आवी के खाड़ों होय गेलों छै, से हुनी चिचियैलों लगें छड़पनिया भागलै। की घोंर-द्वार देखतियै....हिन्नें मौका मिलत्हैं, लड़कां कमीज-पैंट चढ़ैलें छेलै आरो फुर्र पार।'' ई बात कहतें-कहतें ओकरो हँसी फेनु फुटी पड़लों छेलै, अबकी तें सत्तियो आपनों हंसी नै रोकें पारलें छेलै।

''आबें गाँव में एत्तें बड़ों बात होय गेलों छेलै, तें छुपलों केना रहतियै'' अनुकंपा आपनों हँसी कें जबरदस्ती रोकतें हुएँ कहलें छेलै, ''जानै के तें सावो जी कें सब बात मालूम होय्ये गेलै, मतुर है सोची कें कि पटवारी जी के लड़का छेकै, नै कुछ बोलले। आबें यही बात लैकें जों तोहें माथों भारी करी रहलों छों, तें बूड़बकियेवाला बात नी।''

''देखों बोदी, हमरा की कुछ कहना छै। जहाँ लालदां आरो तोहें छौ, हम्में तें एकदम निश्चिन्त छी। जों कुछु चिन्ता छै, तें बस यही बात लैकें कि बीहा-शादी छेकै, मानी लें लड़कावाला कुछ नहिंये लेतै, तभियो घड़ी-साइकिल मांगवे नी करतै। साइकिलो में रेले। दोनों में दू हजार तें बुझवे करों। फेनु बारात दुआर ऐतै, तें की भुखलों लौटतै। वहू में हजार, दू हजार राखवे करों, जो लुलुवा डुबौन भोज नहियो करै छियै, तें मरजाद राखै के बात केना हटावें पारौं। एक बात तें दोनो में सें कर्हैलें पड़ें।'' सत्ती के चेहरा हठासिये

मनझमान पड़ी गेलों छेलै।

''सुनों ननद, मोंन नै गिरावों। दादा पीठी पर छौं नी। सब ठीक होय जैतै।''

''जों घरो के सामनावाला बारी बिकी जाय, तें सब समस्या के निदान छै। मतुर वहू की हेनै बिकी जैतै? सबकें मालूम छै कि ऊ जमीनों में कुछु पेंच छै, जेकरा सलटैलें बिना, कोय खरीददार तैयारो तें नै हुऍ पारें। एक कुशवाहा दियोर छोंत, मतुर हुनियो टाका के आठे आना दै लें तैयार। कहै छोंत, ''भैयारीवाला दाव-पेंच में हम्में एकरा सें बेसी टाका नै फँसावें पारौं। ई जमीनों पर केसा-केसी तें धरले छै, वहू में तें हमरै खरच करना छै। आबें तोंही बोलों बोदी, ऊ जमीनों सें टाका आवै के भरोसे कहाँ बचै छै।'' सत्तीं आपनों लट्टों कें फेनु सें कोकड़ी दिस करतें हुऍ कहलें छेलै।

''कहै छियौं नी, तोरों पीठी पर दादा छौं तें। जों कुशवाहा जी नै देतौं, तें कोय पाठक जी देतौं, नै पाठक जी, तें कोय यादव जी, मतर ऊ जमीनो बिकतै, आरो ठीक समय पर बिकतै, बाकी खर्च लें भाय सिनी कोन दिनों वास्तें छै।'' एतना कहीं कें अनुकंपा चुप होय गेलों छेलै। सत्ती तें चुप छेवे करलै।

''की कुछु मनों में आरो भाव छौं, कुछ छौं, तें खखसी कें वहू बोलों। कोय भांगटों बुझावै छौं, तें ओकरों निदान हुऍ पारें। कहीं तोरा है तें नै लागै छौ कि दौलतपुरों में शादी करना ठीक नै होतै, कहीं ठीक बीहे वक्ती कोई भांगटों नै लागी जाय। तें, सुनों ननद, फूलवती के बीहा भागलपुरे सें होतै। वहू लें हम्में तोरों दादा कें तैयार करी लेवौं?''

''है की बोलै छौ, बोदी !'' हठासिये सत्ती के बंद मुँह खुली पड़लों छेलै। हुनकों मनों के साध कें हम्में चोट केना पहुँचावें पारौं। हुनी जबें फूल कें गोदी में लै, तें एक्के बात बोलै, धूम-धाम सें हम्में आपनों बेटी के डोली विदा करवै, सौंसे गाँव के सवासिन कें जमा करी कें, सब सुहागिन के बीच। आबें तोंही कहों, बोदी, हुनी नै रहलै, तें की, हुनकों किंछा तें जीत्तों छै, भले हमरों मनों में बसी कें।'' कहतें-कहतें ओकरों आँख लोराय गेलों छेलै, जेकरा वैं आपनों अंचरा सें पोछी लेलें छेलै।

अनुकंपा कें की मालूम छेलै कि ओकरों बात संझलकी ननद कें हेना विचलित करी देतै। बात के गंभीरता कें समझतें हुऍ वैं फेनु सें कहलें

छेलै, ''ननद, ऊ तें हम्में हेन्है कही देलें छेलियौं, तोरों दादाहौ यही चाहै छै कि फूल के शादी तोरों ससुरारिये घरों सें होतै आरो काँही सें नै। जे गाँवों में फूल खेललै, कूदलै, तें ओकरों बीहा आन जग्घों सें भला केना हुएँ पारें। चलों उठों, तोरों दादा के लौटै के बेरो होय चललों छौं। गोड़-हाथ, कपड़ा बदली ला ! आय तोंही तुलसीचौरा पर साँझ दिखाय दौ। हम्में घरों में जरा झाड़ू लगाय दै छियौं।''

ई कही अनुकंपा जेन्है उठलों छेलै कि सत्तियो चटाय के गोल करी एक कोना सें खाड़ों करी देलें छेलै आरो ऐंगना कें उत्तरी कोना पर बनलों कुइयां दिस बढ़ी गेलै।

(१०)

बीस रोजों के बाद सत्ती आपनों गाँव लौटै वाली छै। कत्तें हुलास मनों में लेलें, ई बताना मुश्किल। ओकरों खुशी के कारण खाली यही नै छेलै कि फूल के बीहा एक किसिम सें पक्की होय गेलों छेलै, पक्किये नै, बीहा के महीना-तारीखो तक होय गेलों छेलै। आबें टाकाहै दै में जों देर-सबेर होला के कारण बीहा के दिन आगू बढ़ी जाय, तें ई अलग बात छै, नै तें बैशाख में जे दिन तारीख पड़लों छै, ओकरों टरै के कोय बाते नै छै।

ई तें खुशी के एक बात छेलै; दूसरों खुशी यैलें छेलै कि अमरजीत मैट्रिक पास करी गेलों छेलै। पासो की हेन्हों-तेन्हों, एकदम फस्ट क्लास सें। ऊ यही रिजल्ट जानै लें लाल दा के कहला पर वहाँ पाँच दिन बेसिये ठहरी गेलों छेलै, आरो जखनी अमरजीत के ई रं पास करै के बात ओकरा लाल दां सुनैलें छेलै, तें ओकरों आँखों सें लोर ढरकी ऐलों छेलै।

लाल दां कुछुवो नै कहलें छेलै। बस चुपचाप वहाँ सें हटी गेलों छेलै। लोर निकली आवै के कारण तें वैं अपनी लाल बोदी कें बतैनें छेलै कि आय अमरजीत के बाबू होतियै, तें कत्तें खुश होतियै। यहें पढ़ै के इच्छा लेली तें हुनी कै दिन गाछी पर चढ़ी कें बैठी रहलों छेलै। आय हुनी देखतियै

कि हुनकों बेटा फस्ट करलें छै, तें केन्हों गदगदाय जैतियै...है देखैलें हुनी नै रहलै...नै, हेनों कैन्हें हम्में बोली रहलों छियै, हुनी जीत्तों छै, जीत्ते रहतै, भले हमरों मने में रही कें। हुनी सब गमी रहलों छै, सब देखी रहलों छै।''

अनुकंपा कें लागलै, सत्ती कांही कानी नै भरें; से वैं कहलकै, ''अमर के पास करला पर तोरों भाय मिठाय लानलें छौं, उपरामै सें किनी कें। सब बच्चां तें आपनों-आपनों हिस्सा लैकें निगलियो चुकलकै। बची गेलों छी हमरा दोनो; ननद-भौजाय। चलों हमरो दोनों पूजी लौं।'' ई कही कें ऊ हाँसी पड़लों छेलै, तें सत्तियो के ठोरों पर मुस्कान उभरी ऐलों छेलै।

''बोदी,'' ऊ बिना वहाँ सें हिल्ले-हुल्ले कहलें छेलै, ''बीस रोज बीती रहलों छै; गाँव जाना जरूरी छै। बलजीत अकेले छै, हेना कें ओकरों बड़का बू के रहतें, चिंताहै कथी के छै। तहियो बच्चा तें बच्चे होय छै। माय बिना बस टुअरे बूझों। से आबें हम्में रुकें नै पारौं। सब बात मनो लायक होय्ये गेलै। फूल के बीहो पक्की होय गेलै, अमर पास करिये गेलै, आबें घोंर कें हवांक छोड़वों ठीक नै। कल भोरे-भोर मनारवाली टरैन पकड़ी लेवै, तें भगवान के उगतें-उगतें पंजवारा मोड़ पहुँची जेवै।''

''है की बोलै छों, ननद ! कल वृहस्पति छेकै आरो वृहस्पति के शेष में दक्खिन दिस यात्रा करवों एकदम ठीक नै। जानाहै छौ तें सोमवार कें निकली जय्यौ। एकदम नै रोकवौं। दादाहौ जानथौं, तें नै जावै लें देथौं।''

''नै बोदी, जाय लें पड़वे करतै। एत्तें दिन यहाँ रुकी गेलियै, यही बहुत छै, दादां कही देलकै कि अमर के रिजल्ट सुनी ले, तबें जय्यैं, तें रुकी गेलियै, आबें यहाँ रुकै के कोय मतलबे नै छै। परसुवे सें मोंन करी रहलों छै, घोंर लौटी जाय कें।''

''मतर वृहस्पति के शेषों में जैवौ?

''की होतै बोदी ! हम्में आपनों सामान आधों रात के पहिले घरों सें बाहर द्वारी पर राखी ऐवै, तबें तें जतरा के दोष कटी जैतै नी। आरो दोष सुहागिन, अयभाती वास्तें होय छै; विधवा वास्तें की !''

अभी सत्ती आरो कुछ बोलतियै कि अनुकंपा नें ओकरों मुँहों पर आपनों दायां हाथ राखी देलें छेलै, ई कहतें हुएँ, ''सब शुभ-शुभ होय रहलों छै, हेनों अशुभ कैन्हें बोलै छों। आबें जबें रुकहै लें नै चाहै छों, तें कोय बात नै; चलों सबटा सामान समेटी ला। हम्मू मदद करी दै छियौं।''

''सामाने की छै, बोदी। सब समेटवै, तें बस सुदामा जी के पोटरी। हम्में समेटी लै छियै, तोहें यहीं बैठोॅ। भोर सें घुरनी रं घरों के कामों पीछू घुरतें रहें छौ, आराम करोॅ।'' आरो ऊ लाल बोदी कें वाँही खटिया पर बैठैतें कोठरी दिस बढ़ी गेलोॅ छेलै।

सत्ती कोठरी में गेलै, तें अनुकंपा आपनोॅ दायां हाथोॅ के बीचलका अंगुरी सें दोनों आँखी के कोर पोछी लेलकै।

(११)

ई तें आशु बाबु कें पता नै चललोॅ छेलै कि सोगारथें कखनी आरो कहिया, देह के सब्भे रोगों के इलाज लेली 'आरोग्य-आसन-आश्रम' खोली देलें छै। कहीं हेनों तें नै कि आसन-वासन के आड़ों में वैद्यगिरी शुरू करी देलें छै। जों हेने बात छै, तें जेहो दू पैसा आवै छै, ओकरों में बखरा। पता तें लगैनै चाही कि आखिर बात कहाँ तांय पहुंची चुकलोॅ छै, मतर एकरों पता केना चलतै? के ई कामों लें एकदम फिट हुएँ पारें? हों, एक तें छै। अभी हुनी जोॅन आदमी के बारे में सोचवे करतियै कि देखै छै, वही आदमी हुनकोॅ दुआरी दिस आवी रहलोॅ छै।

''हेभें देखौ, जे अजनासी रों बारे में सोचिये रहलोॅ छेलियै, वही हिन्नें आवी रहलोॅ छै। ई तें चमत्कारे बूझोॅ'' आशु बाबू मनेमन सोचलें छेलै, ''लागै छै, काम होन्है छै, यही लें तें ई सब होय रहलोॅ छै।''

आरो हुनी एकदम सें इस्थिर होय कें बैठी रहलै। इस्थिर सें यै लेली कि आशुबाबुए कें नै, है बात सब्भे कें मालूम छै कि बाँस भरी चलै में अजनसिया कें पाँच मिनिट सें कम नै लगै छै, आरो अभी ऊ पाँच बांस के दूरी पर होतै, तें एकरों मतलब छेलै कि आशु बाबू के दुआरी तांय आवै में ओकरा कम-सें-कम बीस-बाइस मिनिट तें लगन्है लगना छेलै।

बात ई छेलै कि एक दाफी साँझे साँझ ऊ मोॅर मैदान लेली परसवन्नी खेतोॅ दिस निकली गेलोॅ छेलै। रास्ता घासोॅ सें भरलोॅ रहै, से

सीधे खरीस सें आमना-सामना होय गेलै। हौ पाँच-छों हाथों के खरीस देखत्है ओकरों जी तालू सें सट्टी कें रही गेलै। दू-चार गोड़ पीछू हटी कें हेनों छलांग मारतें घरों दिस भागलों छेलै, जेना लेरुआ कें बाव लगलों रहें। आबें वही दिनों सें ऊ, भले ही साफ-सुथरा रास्ता सें निकलै, दू-तीन कदम आगू बढ़ी कें रुकी जाय छै, आरो फेनु आगू बढ़ै सें पहिलें दू-चार बार चुटकी जरूरे बजावै छै, ताकि कोय आखरी-पिपनी हिन्नें-हुन्नें छिपलों रहें, तें भागी जाय।

आशु बाबू के ध्यान तभिये टूटलों छेलै, जबें अजनसिया देहरी के नीच्है सें आवाज देलें छेलै, ''गोड़ लागै छियौं, बड़का दा।''

''अरे अजनासी, आव, आव ! देहरी के नीचें में कैन्हें छैं, ऊपर आवी जो, हौ चटाय छै, बिछाय कें बैठी जो। तोरेसिनी वास्तें तें ई चटाय बनवैलें छियै, तीन हाथों के। मोंन हुएँ तें कोय गोड़ो पसारें पारें।''

अजनसिया देहरी पर बिना चटाय बिछैले बैठी रहलों छेलै, ई कहतें हुएँ, ''चटाय के की जरूरत छै, बड़का दा। गोबरों सें नीपलों-पोतलों जमीन, पक्का मकानों सें की कम छै, जे चटाय बिछाय के कष्ट करौं।''

''खैर, कोय बात नै। बोलें, कुछु खास बात की?''

''की हेन्है कें तोरा सें भेंट-मुलाकात करै वास्तें नै आवें पारौं, खाली कामे लैकें?

''अरे नै-नै, कैन्हें नी आवें पारें। हमरों घोंर हेकरा लेली कबें बंद रहलों छै, आरो गाँव वाला वास्तें तें रातो भर खुल्ला।''

''से बात तें छेवे करै, बड़का दा। यही कारण छै कि सौंसे गाँववाला के दिलो तोर्हों वास्तें खुल्ले रहै छौं, तनी-मनी केकरो बंद रहै छै, तें सोगारथ दा के।'' ई कही अजनसियां आशु बाबू कें कनखियाय कें देखलें छेलै, कि आखिर ई बातों के हुनकों ऊपर की असर होय छै। अजनसियो कें ई बात मालूम छै कि आयकल आशु बाबू दखनाहा टोलों नहिये के बराबर जाय छै, कैन्हें कि सोगारथ वही टोलों में आपनों 'आरोग्य-आसन-आश्रम' खोललें होलों छै।

आबें आशु बाबू के मनों में भले जे कुछ रहें, मतुर हुनी है भाव कें कभियो केकरो सामना में परगट नै हुएँ देलकै। जबें अजनसिया के मुँहे सें ई बात सुनलकै, तें पहलें यही पुछलकै, ''अच्छा अजनासी, ई तें बोल, वैं

भला हमरा सें कथी लें कटियो टा दुराव राखतै। ओकरों बाबू हमरों पकिया दोस्त छेलै, दोस्त होला के बावजूदो हेनों कभियो नै होलै कि कविराज सें कम हमरा आदर देलें रहें, आबें ओकरों बेटा आसन सें रोगी के इलाज करै छै, तें बढ़ियें बात नी, कोय जड़ी-बूटी सें तें नहिये नी करै छै, कि हमरा सें दुकानदारी दुराव राखें।'' आशु बाबू जानी कें निचलका बात जोड़लें छेलै, ताकि जों सोगारथ जड़ी-बूटी सें इलाज करतें होतै, तें अजनासी वहूं कहवे करतै।

''हे तें नै कहें पारौ बड़का दा, कि आसन साथें, जड़ी-बूटियो सें इलाज करै छै कि नै, बोलै तें छेलै कि जड़ी-बूटी के साथ जों आसन करलों जाय, तें मकरध्वज रं आसन काम करै छै। आबें हुनी जड़ी-बूटी के प्रयोग करै छै कि नै करै छै, ई जानना कोनो बड़का बात थोड़े छेकै, गेलियौं आरो पता लगैले ऐलियौं। जों पता लगाय ऐलियौं, तें मोदक के गुल्ली देवौ नी।''

''ऊ तें तोहें नहियो लगैवैं, तहियों तोरों वास्तें एक गुल्ली बचैय्ये कें राखै छियै। कभियो नै बेचें पारौं।''

आशु बाबू कें मालूम छै कि मोदक पावै लें अजनसिया लंका तक पार करें पारें, ओकरा जारें पारें। बस एक मोदक पर ओकरा सें कोय्यो काम करैलों जावें सकै छें। यै लेली बात दूसरों दिस नै हुएँ, हुनी तुरत कहलकै ''तें लौटी कें आव अजनासी, हम्में तोरों वास्तें गोली निकाली कें राखवौ।''

''ठीक छै बड़का दा। देरो लगौं, तें बाहर नै निकलियौ। ऐबौं तें पता लगैनें।'' ई कही कें अजनसिया दुआरी सें नीचें उतरथें चुटकी बजैलें छेलै आरो कोनियासी होलें दखिन टोलों दिस निकली गेलै।

अजनसिया के जैथैं, आशु बाबू के मनों में ई बात उठलों छेलै ''ओकरा भेजी कें शायत हम्में ठीक नै करलियै, जों कजायत सोगारथ कें केन्हौं ई मालूम होय गेलै...मतुर अजनसिया कें हम्में कहाँ भेजलें छियै, ऊ तें आपन्हें लबर-लबर बोली रहलों छेलै, आरो गेल्है, तें आपन्है मनों सें।''

कि तभिये मनों में यहू उठलै, ''हम्में अजनसिया कें बोलियौं कि नै बोलियौं, मनों में तें ई बात छेवे करलै। बस होय गेलै। मनों में जे रहै छै, ऊ केन्हौं-नै-केन्हों घटिये जाय छै, आबें हम्में बोलियौं आकि नै बोलियौं, मनों में ई तें छेवे करै कि फूल के बीहा-शादी के बात अमर के बड़काहै मामा सोचै छै, तें अच्छा। हम्में कहाँ-कहाँ जैबै आरो करौं की पारौं....आरो आबें

जबें फूलमती के बड़काहै मामा फूलमती के बीहा लें तै-तमन्ना करी रहलों छै, तें हमरा कैन्हें ई लागी रहलों छै कि बोमाँ फूल के शादी-बीहा लें हमराहै सें बातचीत करतियै। ई हमरों घरों के मामला छेकै, हम्में सोचतियै, जों फूल के मामा कें सहयोग करना छेलै, तें ऊपरों सें करतियै....मतुर बोमाँ कें हमरा पर नै, अपनों लालदा पर बेसी भरोसों छै, यही लें... रहौ, मतुर कोय हेन्है कें एत्तें झंझट माथा पर उठाय लै छै की? कोय-नै-कोय लाभों के बात तें होवे करतै। नै आरो कुछु, तें एतना तें जरूरे कि अमर मैट्रिक पास करिये गेलै, एक-दू क्लास आगू पढ़ें-नै-पढ़ें, कोय-नै-कोय सरकारी नौकरी धरले छै. ..आरो फेनु ओकरों गार्जन तें हुनिये नी, हमरा कन कोय उतरवे नै करतै; जे भी संबंध लें उतरतै, तें अमर के मामाहै कन। तखनी बोमाँओ के कुछ नै चलतै, केना चलतै। आखिर अमर कें सब किसिम सें लायक बनैलें छै, तें ओकरों बड़के मामा नी। तखनी लक्ष्मीकांत के वचन कहाँ सें रहतै, जे आपनों समाज में हाथ उठाय कें कहलें छेलै....''

आशु बाबू कें लागलै, हुनकों सिर कुछु भारी हेनों लागें लागलों छै। हुनी अजनसिया के आरो प्रतीक्षा नै करी कें चुपचाप बड़का औसारा सें नीचें उतरलै आरो पछियारी टोलों दिस निकली गेलै, मणि बाबू के घोंर दिस।

(१२)

बेरा डूबै-डूबै पर होतै, जखनी आशु बाबू आपनों दुआरी पर लौटलों छेलै। देखै छै, अजनसिया बरांडा पर बैठलों अकेले में हाँसी रहलों छै। ओकरों गुदगुदी के तें एकराहै सें पता चली रहलों छेलै कि हाँसै वक्ती ओकरों ठोर तें कुछुवे फैलै, मतुर रही-रही कें पेट ऊपर-नीचें खूब हुएँ लागै।

''की बात छै, अजनासी? कथी वास्तें ई हँसी छेकै?'' आशु बाबू के आवाज सुनलकै, तें सीधा होतें कहलकै, ''आबें बैठवौं, बड़ों दा, तबें नी सुनैभौं। ऊ रोगी-आसरम केरों लीला।''

आशु बाबुओ के मनों में वहाँकरों बात सुनै के उत्सुकता तें छेवे

करलै, से ऐंगना नै जाय कें सीधे आपनों कुर्सी पर जमी गेलै आरो बोललै, ''तें पहिले सुनैये लें, की लीला सुनाय लें चाहै छैं।''

अजनसिया कुछ सुनैतियै, एकरों पहलें ऊ एक दाफी फेनु जोरों सें हाँसलों छेलै, तबें आपना पर नियंत्रण पावी कें कहना शुरू करलकै, ''की कहियौं बड़ों दा, हम्में सीधे नै जाय कें पिछुवाड़ी दिसों सें गेलियौं, कि सोगारथ दा देखी नै लै। डमोलों के चटाय सें घेरी कें बनैलों आश्रम, जैमें छेदे-छेद। से एक छेद सें हम्में भीतर देखना शुरू करलियै। देखै छियै कि सोगारथ दा चेथरी सें बोली रहलों छै—रीढ़ सीधा रखी कें साँस खींचना छै। पहिलें नाँकी सें, हों; आरो खूब तेजी सें।''

चेथरी साँस खीचै आरो सोगारथ दा हर दाफी बोलै—आरो जोरों सें।' आबें की कहियौं दादा, चेथरी के मूँ में भरलों हवा भड़ाक सें बाहर आवी गेलै, जेना भरलों बैलून के मुँह खुली गेलों रहें आरो सूँऽऽऽ करी कें हवा बाहर। हवा निकलतियै तें निकलतियै, ओकरों साथें चेथरी के थूक के फुहारों बाहर निकलें लागलों छेलै। सोगारथ दा पर थूक पड़ले होतै, तभिये नी हुनी गनगनाय उठलों छेलै—कहै छेलियौ, आसन-वासन करवों तोरों बूता के बात नै छौ, दारू-ताड़ी पीवी कें देह गलाय लेलें छैं, साँस भला फेफड़ा में कोंन कोण्टा में ठहरतौ—है सुनी कें चेथरियो के मूँ गरमैय्ये तें गेलों छेलै—है नै बोलों सोगारथ भाय, टीन भरी साँस के गैस की हमरों फेफड़ा में आवें पारें। आबें हम्में की करियौं, जखनी तोहें बार-बार साँस खींची कें छाती फुलाय लें कहीं रहलों छेलों तें हमरा ऊ बेंगवा के बात याद आवी गेलै, जे हाथी के आकार बनावै लेली आपनों देह फुलैलें जाय रहलों छै, आरो आखिर में बेलुन नाँखी फटाक सें फुटी गेलै—सुनी कें हमरों हँसी फूटैवालाहै छेलै, मतर समय-स्थान कें देखतें हुएँ सीधे सरपट बान्ही पर आवी कें खूब हाँसलियै। बस यहीं सें आवै में लेट होय गेलै।''

''ऊ तें हम्मू जानै छेलियै, कि आसन सें वहाँ इलाज नै होय छै, तोहें बेकारे परेशान होले।'' आशु बाबू अपना कें ऊ सब बातों सें अलग करतें कहलें छेलै, ''तहियो चल्लों गेलै, तें एतना तें जानवे करले नी कि आसन सें रोग केना भगैलों जाय छै।'' हुनी आपनों ठोरों पर दायां हाथ के अंगुली सिनी फिरैतें मुस्कैतें हुएँ कहलकै।

''एतनै नै जानलियै, बड़ों दा। आरो कुछ जानलियै।''

''ऊ की?''

''सत्ती बोदी, एक दिन पहले गाँव ऐलों छेलै। चतुरानन काकी सें मिली गेलों छै।''

''की बोलै छै, अजनासी?'' आशुतोष बाबू हठासिये चौकस होय उठलों छेलै, जेना हुनकों सामन्है में बिजली रों तार गिरी गेलों रहें।

'' तें, झूठ बोली रहलों छियौं की, बड़ों दा? विश्वास नै होय छौ, तें धनुकायन चाची सें पूछी ला। हुनकों बातों पर तें पतियैवौ। हम्में आपनों दिसों सें थोड़े लगाय कें बोली रहलों छियौं। धनुकायन चाची, विरनी दादी साथे बान्हों दैकें जाय रहलों छेलै, बतियैतै। ऊ दोनों कें देखी हमरों हँस्सी सटकी गेल्हौं। जानवे करै छौ, जों हमरों हँस्सी पर ओकरों सिनी के नजर पड़ी जैतियै, तें हमरों कोय करम बाकी नै रहतियै। हम्में सच्चे बात कैन्हें नी बतैतियै, मानैवाली छेलै की—बस यही कहतियै? निपुतरा, हमरा तोंहे पढ़ावै छै, हमरों नेंगचाय कें बुलै पर हाँसै छै...।

अजनसिया ऊ सब बोललों चल्लों गेलों छेलै, जे ओकरा बिरनी के दादी के बारे में बोलना छेलै, आरो आशु बाबू...हुनी तें कुछुवो नै सुनी रहलों छेलै, जेटा हुनी सुनी लेलें छेलै, वही हुनकों चित्त कें बेकल करै लेली काफी छेलै।

हुनका है रं चुप होलों देखी कें अजनसियां देहरी सें दोनों गोड़ नीचें ससारतें कहलकै, ''तें दादा, हम्में चलियौं?''

चलियौं कहै के मतलब आशु बाबू कें समझै में देर नै लागलों छेलै आरो हुनी आपनों बरामदे के दिवालिये में बनैलों आलमारी कें चाभी सें खोललें छेलै आरो एक बड़ों रं शीशी में राखलों मोदक के एक गोली निकाली, ओकरों हाथों में राखतें कहलें छेलै, ''अजनासी, खिरनी धनुकायन सें तोंही मिलियैं, हम्में नै मिलवै आरो पता लगावें कि आखिर चतुरानन मिसिर सें की बात होलै? बेसी कुछ पूछै के जरूरत नै छै। बुझलैं? कल संझकी वक्ती अय्यें ! कल, विरकोदर बाबू के मुंशी के खास मोदक बनैवै, तें एक गोली तोरो वास्तें तैयार रखवौ। हमरा यैमें कोय खर्चो नै पड़तै। ऐभैं तें?''

''की बोलै छौ, बड़ों दा। कहों, तें विहानिये सें आवी कें बैठी रहियौं। मतुर नै, हमरा धनुकायन चाचियो सें तें एक-एक भीतरिया बात

जानी कें आना छै'' ई कहीं वैं दू दाफी चुटकी बजैलें छेलै आरो आगू बढ़ी गेलों छेलै।

आशु बाबू के आँख परछत्ती दिस उठी गेलों छेलै। मतुर हुनी परछत्ती नै देखी रहलों छेलै, देखी रहलों छेलै—चतुरानन मिसिर आरो अमरजीत के माय कें बबुआन टोला के शिवाला वाला चबूतरा पर बतियैतें।

(१३)

''प्राती के माय, तोहें कुछ सुनलौ? बोमाँ गाँव ऐलों छेलै। चतुरानन मिसिर सें मिली कें लौटी गेलै। घरो आवै के जरूरत नै बुझलकै, जेना गाँव-घरों सें कोय रिस्ते नै रही गेलों रहें। जों है सहिये बात छेकै, तें एकरा के अच्छा कहतै?''

''सुनलें तें हम्मू छियै, मतुर कुछ सोचिये कें हम्में तोरा नै कहलियौं। हेन्है कें तोरों तबीअत कोन अच्छा रहै छौं, ऊपर सें बोमाँ के हेनों सब बातों सें दुक्खे मिलैवाला छै, कोन खुशखबरी छेकै, जे तोरा कहतियौं। पता नै, हेनों कैन्हें होलों जाय रहली छै, दिन प्रतिदिन?''

''तबीअत तें ठिक्के में अच्छा नै रहै छै। हमरे दवाय हमराहै धोखा दै रहलों छै। मतुर ठीक होय जैवै, देर-सवेर लागें भले। एक गिलास पानी दीयों तें, गोली निगली लियै।'' ई कही आशु बाबू ऐंगनाहै के देहरी पर बैठी रहलै।

प्राती-माय उठी कें घैलसरों तांय गेलों छेलै आरो एक गिलास पानी लानी कें हुनकों हाथों में थमाय कें नगीचे देहरी पर बैठी रहलों छेलै।

आशु बाबूं आपनों छोटों रं झोली सें, जे हुनको बायां कान्हा सें लै कें दायां डाँड़ों तांय नीचें लटकले रहै छेलै, सें गोली के शीशी निकाललें छेलै आरो एक गोली कें मुँह में राखी, मुँह कें कुछ ऊपर करलें छेलै, फेनु गिलास कें बिना मुँह सें लगैनें पानी मुँहों में हौले-हौले गिरैतें गेलों छेलै, गोली निगलला के बादो। प्राती-माय रों आँख आशु बाबू के कंठों पर तब तांय

लगले रहलै, तब तांय पानी घोटै के कारण ऊ ऊपर-नीचे होतें रहलै।

''आऽऽऽह'' आशु बाबूं एक संतोष के साँस लेलें छेलै, आरो गिलास कें देहरी के नीचें राखी देलें छेलै।

''मतुर तोरा है बात के कहलकौं?'' प्राती-माय गिलास कें आपनों हाथों में उठैतें पूछलें छेलै।

''अजनासी। वैं खिरनी धनुकायन सें—जे विरनी-माय सें बोली रहलों छेलै।''

''हमरा तें पूर्णमासी मिसिर के कनियैनी बतैलें छै।''

''तबें तें झूठ नै हुएँ पारें। चतुरानन आरो पूर्णमासी के बीच मनमुटाव नहियो होला के बादो मनमुटावे समझों। आबें तोंही समझों, प्राती-माय, हम्में तें बोमाँ के मने मुताबिक करी रहलों छियै। के नै जानै छै, कि लक्ष्मी ऊ जमीन हमरों नामों सें खरीदलें छेलै, तखनी एत्तें कागज-पत्तर के बात होय छेलै की? मुँह सें बोली देलकों, तें—प्राण जाई पर वचन न जाई। यही नी होतें रहलों छै। आबें बोमाँ एकरा नै मानै छै, तें नै मानों; लैलौक सबटा जमीन, मतुर जमीनों के कारण रिस्ता मिघाड़वों तें ठीक नै। हम्में तें लक्ष्मी कें तभियो कैहलें छेलियै कि तोहें आपनों पैसा सें जमीन खरीदी रहलों छैं, तें बोमाँ के नामे सें कीनें; हमरा दै के जरूरत की। के जानै छै कि यही जमीन कल खना खानदानों लेली बारह मूँ वाला बर्रो बनी जाय आरो वही होलै। घाव चोखावै लेलियै तें हम्में जमीन तुरत बोमाँ कें दै देलियै।''

''शायत हमरा सिनी देर करी देलियै।''

''नै, कुछुवो देर नै करलें छियै। अमरजीत के बड़का मामां जेन्हैं चिल्लर के हाथों सें खबर करलकै कि फूल के शादी पक्की होय गेलों छै, बस दहेज के टाका केन्हों कें होय जाय, तें बॉर-बराती के इन्तजाम हमरासिनी करी लेवै, तें की एक्को दिन विलम्ब करलियै? बोमाँ कें बुलाय कें कही देलियै, बारीवाला जमीन तोरे छेकौं। दहेज के रकम चुकाय दौ। आबें बात रहलै, केकरों हाथें बेचतै; तें, हम्में यही नी कहलें छेलियै कि पूर्णमासी मिसिर कें जमीन बेची दौ, यही में भला छै। आबें तोहीं सोचौ, प्राती-माय, पूर्णमासी ओत्ते टाका दै रहलों छेलै, जत्तें दहेजों लेली जरूरत छै, यानी कि पन्द्रह सौ टाका। पूर्णमासी कें एत्तें टाका दैके जरूरते की छेलै, यही लें नी कि हुनको

जमीन सुखनिया नदी के किनारी में छै, आरो हर दाफी फसल दही जाय छै। से ऊ जमीन बेची कें बारीवाला जमीन खरीदी लैलें चाहै छेलै, नै तें पूर्णमासी कें बौंसी छोड़ी कें यहाँकरों खेत खरीदै के की जरूरत छेलै, मतुर यहुमें बोमाँ कें लागलै कि हम्में कोय चाल चली रहलों छियै। यहू सोचें पारें कि जबें हम्में खुद सक्षम छी, तें हम्में ई परिवारों के केकर्हौ सें कोय मदद कैन्हें लौं। पूर्णमासी मिसिर के पक्षों में हम्में छियै, है बात तें बोमाँओ कें मालूमे छेलै, हमरा घुमाय-फिराय कें कहियो देलें छेलै, कि हुनी चुतरानन मिसिर कें वचन देलें छै, तें आबें है सोची कें कि वचन में भांगटों नै पड़ें, बोमाँ नें चतुरानन मिसिर कें दौलतपुर बोलैलें रहें आरो वांही सें मिसिर के साथें बांका कचहरी चललों गेलै।''

''मानी लें, ई बात सच्चे रहें, ई बात होय्ये गेलों रहें, तें यैमें हमरा सिनी कें की सोचना छै, जमीन हुनकों, कीमत हुनी लेतै, हमरा सिनी कें की लेना-देना?'' प्राती-मांय गिलास कें देहरी सें सटाय कें नीचें राखलें हुएँ कहलें छेलै।

''लेना-देना तें नहिये छै। मतर यही सोचौ, पूर्णमासी तें पक्का ओतनौ टाका दै रहलों छेलै, जत्तें दहेजों में दै लें लागतियै, आरो चतुरानन दू सौ कम्में दै रहलों छेलै, बाकी टाका वास्तें तें आबें हाथ केकरो-नै-केकरो सामना फैलावें लें नी लागतै। हम्मी नै, अमरजीत के बड़को मामा, बोमाँ कें समझैलें छेलै कि जे हम्में कही रहलों छियै, ठिक्के कही रहलों छियै, मतुर बोमाँ मानैवाली छेलै। आपनों लाल बोदी के माध्यम सें लालदा कें कहवाय देलकै, हम्में चतुरानन मिसिर कें वचन देलें छियै। प्राती-माय, आबें तोहीं सोचों, हेनों वचन के की, जे हुनके लें कसाय बनी जाय!''

''कुछुवे तें सोची कें राखले होतै नी। इखनी सें कथी लें एतना चिंतित होवों। हों, बोमाँ कें एतना जरूरे सोचना चाही कि बीहा होला के बाद जनानी के नया जन्म होय छै, आपनों ससुरारी परिवारों के साथ। आरो जे संबंध मरण तांय जुड़लों रहै छै। ससुराल परिवारों के सुख-दुख ओकरों सुख-दुख। नैहर तें खाली कहै के। जिनगी तें नहिये नी कटें पारें, नैहरा में। कटवो करतें, तें भौजाय, भाय के नौड़िये बनी कें। यही सें बीहा के बाद, लौटी कें ससुराल में बास करी कें, आपनों भाग्य कें बनाना चाही। आय दियोर जीत्तों होतियै, तें एत्तें ई सब नै होतियै।'' प्राती-माय आपनों लोराय

ऐलों आँखी कें अँचरा सें पोछी लेलें छेलै।

''अच्छा, छोड़ों ई सब बातों कें'' आशु बाबूं अपनी जनानी के ऊ स्थिति देखी कें कहलकै, ''हम्मू कहाँकरों-कहाँकरों बात लैकें तोरों लुग बैठी जाय छियै। मतुर एतना तें छेवे नी करै कि बोमाँ के है सब कामों सें कुल-खानदान के माथों झुकवे नी करै छै। कोय कामों सें जों ससुराल आकि नैहरों परिवार के कान-नाक कटें, तें हौ काम की करना चाही?''

''एकरा सें बेसी चिंता के बात छै कि इखनी अमर के माय छै कहाँ। भागलपुरों में, की बौंसी के कोय धर्मशाला में? कथू सें बेसी यहा बातों के खयाल करना जरूरी छै।''

''ओकरे चिंता में गाँव निकली रहलों छियै। नै होलै तें चतुरानन सें भी मिलवै। नहियो सबटा सच बतैतै, एतना तें बतैतै नी कि बोमाँ आखिर छै कहाँ?''

''बहुत जरूरी छै। जा ! हम्मू हिन्नें-हुन्नें सें टोह लैके कोशिश करै छियै। नै होलै तें सीधे खिरनी धनुकायन सें पूछवै। हमरा सें तें कुछु नहिये नी छिपावें पारें।''

''बड्डी बढ़ियाँ। तें, हम्में निकलै छियौं। कुछ बेरो होय जाय, तें अंदेशा नै करियों आरो हों, जों यही बीचों में अजनासी आवी जाय, तें बैठाय कें राखियौ!'' एतना कही आशु बाबू ऐंगना सें निकली, केवड़ा भिड़काय देलें छेलै, आरो प्राती-माय नै जानौं कत्तें देर कोंन बातों के सोचों में डुबलों, वहीं, होन्है कें बैठले रही गेलों छेलै।

(१४)

''केकरों हँकारों लैकें ऐलों छों, तोहें तें कोय-नै-कोय केकरो हँकारे लैकें आवै छों।'' खिरनी धनुकायनें खटिया पर बैठले-बैठले अजनसिया सें कहलें छेलै।

''बस, हँकारे समझों, चाची। होना कें जाना छेलै पहिलें विन्देसर

माय कन, आबें रास्ता में तोरे घरों पर पहिलें नजर पड़ी गेलै, वहू में द्वारी पर ताला नै, तें समझी गेलियै, तोहें घरों पर होवे करवौ।''

''आबें बात की छै, वहू बतावों नी।''

खिरनी धनुकायन नें खटिया पर बैठै के इशारा करतें हुएँ कहलकै, तें अजनसिया आपनों गोड़ खटिया पर नीचें लटकैलें बैठी रहलै आरो कहना शुरू करलकै, ''तोरा तें मालूमे होथौं कि रूपसावाली सत्ती बोदी गाँव ऐलों छेलै, गाँव ऐलै, मतुर दू चार दिन पहिलें घोंर नै ऐलै। ई बात के गाँव वालाहौ कें मालूम छै, मतुर पेटों में पचाय लें चाहै छै, से विरिज काकां चिरियारी चौर खिलाय कें फैसला लेलें छै। तें, एकरों मतलबे छेकै कि, बात तें सबटा खुली कें आन्है छै।'' अजनसियां ई बात हेनों मुँह बनाय कें कहलें छेलै, जेना विरिज नारायण घोष के फैसला बहुत गलत छै, आरो अजनसिया ओकरों पक्ष में नै रहें।

''तें, ई चिरियारी चौर केकरा-केकरा खिलाय के बात छै? कुछु तें तोर्हौ मालूमे होथौं?'' धनुकायन चाची नें दायां हाथ के तर्जनी आपनों गालों में धंसैतें पूछलें छेलै।

''जे-जे, रूपसापुरवाली बोदी कें देखलें छै, आरो बात कें छुपाय रहलों छै...। बुरा नै मानियों, चाची; पहिलों शंका तें तोरे पर बिरिज काका रों छौं।'' एतना कही कें अजनसिया एकदम चुप होय गेलों छेलै।

चिरियारी चौर के बात सुनत्हैं खिरनी धनुकायन एकदम चुप होय गेलै। ओकरा खूब मालूम छै कि चिरियारी चौर कें वही चबावें पारें, जे निर्दोष छै, नै तें निगलै के सिवा कोय चारा नै, आरो निगलै के मतलबे छै—अलगट्टे चोरी धरैवों। वैं मनेमन सोचलकै—यहू बात नै कि चिरियारी चौर खाय सें इन्कार करी लौ। इनकार करै के मतलब तें सीधे-सीधे दोष स्वीकारवों छेकै।

''मतर जे कहों चाची, है चिरियारी बोरियारीवाला खेल अच्छा नै। खा-म-खा एकरा में निर्दोषो चक्कर में आवी जाय छै। तोरा याद होथौं, धौलिया के बात। जे रं बेचारां मुंशी काका सें धौल खैलकै कि ओकरों नामे बटेसरा सें बदली कें धौलिया पड़ी गेलै। हाँसियो आवै छै, बेचारा पर.....मुंशी जी चाँदीवाला माला टूटै के डरों सें इनारा के पाटों पर राखी कें नहावें लागलै कि हुन्नें मालाहै गायब होय गेलै। आबें के लेलकै, नै लेलकै, के कहें

पारों। इनाराहै छेकै, पाँच टोला के पचास किसिम के लोग। सबके जेबी सें लैकें इनारा के भीतरी तांय खोजलों गेलै, चिरियारी चोंर खिलाय के नौबत आवी गेलै, आरो बटेसरां खाय सें इनकार करी देलकै, तें मतलबे छेलै कि माला वहीं चोरैलें छै। के नै कहलें होतै कि जों माला नै लेलें छै, तें चौर चिबाय सें मुकरै छैं केन्हें? मतर बटेसर खाय लें तैयार नै। बस की छेलै, मुंशी जी के गोस्सा जानवे करै छौ, वहू में जमींदार बाबू के मुंशी। दियै नी लागलै, ओकरा। आखिर कानतें-कानतें सबकें बोललकै, ''केना खैतियै, चौर; हमरा दाँत छै कि चबाबौं। मसूड़ा में चौर गड़तियै नै?'' आरो हा करी कें मुँह खोली देलें छेलै। हाय रे बाप, एक्को ठो दाँत नै छेलै। बेलुन रं मुँहों में खाली हवा भरलों छेलै। सबकें हँसी आवी गेलै, मुंशियो जी कें, मतुर मार तें खैय्ये लेलकै नी बटेसरां—भले ओकरा छोड़ी देलों गेलै। यही लें कहै छियौ, धनुकायन चाची, कि चिरियारी-बिरियारीवाला खेल ठीक नै—वहू में विरिज काका के गोस्सा तें जगजाहिर छै। हेना कें तें हुनी गोस्सावै नै छै, आरो जों हुनका गोस्सा ऐलों, तें जम्मो थरथरावै। यही सें देखै छौ नी, खाली हुनिये गाँव भरी सें अलग-थलग नै रहै छै, गाँवो भरी होने। गोतियै परहेज करै छै, आरो चिरियारी चौंरवाला बात हुनिये कहलें छै।'' अजनसियां जानी कें विरिज बाबू के नाम कहलें छेलै कि हुनका सें कोय कुछ पूछै के साहस करो नै पारें।

शायत ई कहानी सुनी कें खिरनी धनुकैनो खूब हँसतियै, मतुर ओकरों ध्यान तें काँही आरो ठियां चललों गेलों छेलै। वैं मने मन सोचलें छेलै, ''हमरा की लेना-देना छै कि सत्ती बोदी के बात छिपावौं आरो फेनु बोदीं हमरा केकरो कहै सें थोड़े मना करलें छै, कि नहिये कहियौं। जों लौटला पर पूछतै, तें कही देवै, कि तोहें है कहाँ कहलें छेलौ—है बात केकरो सें नै कहना छै, फेनु बिरनी काकी कें तें हम्में कहिये चुकलों छियै, आबें बड़की बोदी सें कहिये दै छियै, तें की होय जाय छै, आरो है बात छिपैलो सें ठीक नै, कहीं कोय आरो बात होय जाय, तें बदनामी हमरे माथों पर ऐतै।''

''की सोचें लागलौ चाची? जे भी कहों, चाची, ई रूपसावाली, बड़ों दा कें नाको दम करी देलें छै। आरो हुनका कुछ बोलथै नै बनै छै, छोटका भाय के विधवा कनियैन लें बोलवो करतै तें की? नै निगलत्हैं बनै छै, नै उगलत्हैं। हम्में तें कहै छियै बड़ों दा कें, पंचायत बिठाय कें झंझटे पार करी

ला। हदमदैला सें तें ओछरवे अच्छा। ई डेढ़ बीघा जमीन की होलों छै, पोखरी में बोचों आवी गेलों छै, कखनी के जबड़ा में फँसी जाय, कोय्यो नै जानै छै।''

''नै बेटा, हमरा जबड़ा में नै फँसना छै। हमरा की लेना, जोंर-जमीन सें। ऊ समस्या हुनकासिनी के गोतियारी झमेला छेकै, हम्में कथी लें फँसै लें जैवों। जानें जों आरो जानें जाँतों। हम्में इखनिये जाय कें बड़की बोदी कें बताय दै छियै कि सत्ती बोदी ऐली छेलै, आरो दू दिन बौंसी में रहलों छेलै, कैथटोली में हिनका सिनी के कोय लोंर-जोंर छै, हुनकै कन। वाहीं सें चतुरानन जी कें लैकें बाँका चल्लों गेलों छेलै, हमरा बौंसिये में छोड़ी कें, मसूदन मंदिर के बाहरे हम्में गोधूली बेरा तांय बैठलों रही गेलों छेलियै। जबें बोदी लौटलै, तें हुनकों चेहरा पर चमक छेलै, एतना तें हम्में गमिये लेलें छेलियै, एकरों मतलब साफ छेलै कि जे काम वास्तें हुनी बाँका गेलों छेलै, ऊ काम होय गेलों छेलै, आकि अड़चन दूर होय गेलों होतै। एकरों बाद बोदीं हमरा चतुरानन जी के साथ गाँव लौटी जाय के बात कहलें छेलै, ई कही कें कि हम्में भागलपुरवाली टरेन पकड़ी लेवै। एकरों बाद हम्में कुछुवे नै जानै छियै, कैन्हें कि हम्में तें चतुरानन मिसिर जी साथैं लौटी ऐलों छेलियै, बस, बीस कदम आगू-पीछू।''

''जों, है बात तोहें बड़ों दा आकि बड़की बोदी सें बोली दौ, तें चिरियारी-बरियारी वाला बाते न हुऐ, आरो कोय बटेसरा हेनों आदमी मारो खाय लें बची जाय।'' अजनसियां आपनों बात तरत्थी पर तरत्थी रगड़तें हुऍ कहलें छेलै।

''कल नै, हम्में इखनिये जाय कें बड़की बोदी सें बताय दै छियै। तोहें निकलों, हम्में घोंर समेटी कें आवै छियौं।''

जखनी अजनसिया खिरनी धनुकायन के यहाँ सें निकललों छेलै, तखनी सूरज तीन बाँस ऊपर चढ़ी ऐलों होतै।

(१५)

गोधूली बेरा डूबै पर छेलै, जखनी अजनसिया, आशु बाबू के दुआरी पर पहुँचलै। दुआरी पर कोय नै छेलै, एकदम सून-सपाटों। हों, ऐंगना सें टुनटुनी के साथें प्राती-माय के एकलौता भजन रुकी-रुकी कें उठी रहलों छेलै,

निमिया के डाली मैया लागल हिंडोलवा
कि झूली-झूली
मैया गावें लागलै गीत कि झूली झूली
झूलतें-झूलतें माय कें लागलै पियास कि चली गेलै
मलहारिन के पास कि चली गेलै
सुतलों छैं किएँ गे जागें आबें तें मालिन बेटी गे
चुरू एक पनिया पिलावें नी गे चुरु एक

अजनसिया समझें नै पारै छै कि आय, बड़की बोदी भजन गैतें-गैतें रुकी कैन्हें जाय छै, टुनटुनी रुकी-रुकी कैन्हें बाजै छै? ऊ जबें भी हेनों वक्त ऐलों छै, नै तें भजन टुटलों छै, नै घंटी के टुनटुनी; एक सुरों में दोनों चलतें रहै छै।

"हुएँ सकें छै, बीचों-बीचों में तुलसीचौरा पर राखलों दीया के रास उकसैतें रहें।....मतर ई केना हुएँ पारें, बड़की बोदी के दीया में तेल के कभियो कमी नै रहै छै।" वैं मनेमन सोचलें छेलै, आरो बिना कोय आवाज देलें बाहरी औसरा पर बैठी रहलै, जैठां आशु बाबू के बैठकखानाहौ छेलै।

कि तखनिये आशु बाबू छोटका घरों के ऐंगना सें निकललों छेलै। केबड़ा के झिंझिर बाहर से चढ़ाय कें आपनों दुआरी दिस आवी गेलों छेलै।

"के अजनासी?"

"हों, बड़ों दा, हम्मी छेकियै।"

आशु बाबू कें आबें कम दिखावें लागलों छै, यै लेली गोधूली बेरा होथैं, होथैं, हुनी घोंर लौटी आवै छै।

"बैठ, बैठ ! तोरे इन्तजार करी रहलों छेलियौ" ई कहीकें हुनी आपनों काठवाला कुर्सी पर जमी गेलों छेलै, आरो बैठला के साथे हुनी कहलें छेलै, "आखिर की कही देलैं तोहें आपनों धनुकायन काकी कें, बिना कोय

बात पूछल्हैं....''

''कुछ तें दिमाग लड़ैय्ये लें नी लागै छै, बड़का दा। कही देलियै, कि विरिज काका चोरियारी चौर खिलायवाला छै, पंचायत बुलाय कें। की मरद आरो की जनानी, जेकरा-जेकरा पर शंका छै, ओकरै-ओकरै खिलैतै। बस ई सुनत्हैं, सब उगलै लें तैयारे नी होय गेलै। कहलकै—चोरियारी चौंर खिलाय के की जरूरत छै, जाय कें बड़की बोदी कें सब हम्मी कही दै छियै।''

''तें ई बात छेलै, बेरा डूबै में दू बाँस बचले होतै कि हम्में घोंर लौटलों छेलियै, आरो यहाँ बड़की बोदी सें मालूम होलौ कि खिरनी धनुकायन सब बात बोली कें अभिये-अभी घोंर गेलों छै। ई सब बात सुनी कें प्राती-माय तें बड़ी दुखित छै। बड़ी समझैला-बुझैला पर शांत होलों छै।

''मतर बड़की बोदी के शांत होलै सें की होय छै, बड़का दा। जे आग सुलगी गेलों छै नी, ऊ तें, भूसाहै तरों के आगिन बूझों, हों। हमरा नै लागै छौं, ई बुझैवाला, कत्तो पानी ढारो, सब ऊपरे-ऊपर टघरी जैथौं।'' अजनसियां आपनों दायां हथेली कें हवा में एक दिसों सें दूसरों दिस ससारतें कहलें छेलै।

''तोरों बात नै बुझलियौं।''

''बात तें साफे छै, बड़ों दा, कैन्हें नी बूझें पारी रहलों छै। हों, यै वास्तें नै बूझें पारी रहलों छौं कि धनुकायन चाची तें ओतनै टा बतैलें होथौं, जतना टा जानै छै, बेसी तें नहिये नी।'' अजनसिया नें फेनु दायां हाथों से बायां हाथों के एकेक अंगुरी कें पुटकैतें हुएँ बोललों छेलै।

''बाकी बात की?''

''अहो बड़ों दा, यही तें बताय वास्तें हम्में आवी गेलियै, नै तें ई बेरा जानवे करै छों, हम्में कम्मे निकलै छियै'' पालथी मारी कें बैठतें हुएँ अजनसियां कहना शुरू करलें छेलै, ''हमरा कंकड़िया के दोसरी कनियैनी सें नी माालूम होलै। घोंर लौटी रहलों छेलियै, तें लखपुरा के कालीथानों में मिली गेलै; हमरा देखलकै, तें बोले लागलै, 'रुकों-रुकों दियोर' आरो हम्में रुकलियै, तें नगीच आवी बोललै—''है पूछै छियौं, जबें सत्ती बोदीं आपनों जमीन बेचियै देलकै, आरो तोरों दोस्त, कहै के मतलब हमरों मालिक सें, है तीन सौ टाका पैंचों कथी लें मांगी रहलों छेलै, वहू ई कही कें कि फसल पकत्हैं तोरों रिन उतारी देवौं, या तें टाका लै लियों, आकि टाका के बदला

फसल।''

''की बोललकै कंकड़िया के कनियैनी, जरा दोहरावैं तें !''

अजनसिया कें समझै में देर नै लागलों छेलै कि फसलवाला बात सुनत्हैं आशु बाबू कें हेनों लागलों छेलै, जेना हुनका कोय बिरनी काटी लेलें रहें। मतुर वैं कुछ आरो नै पूछी कें कंकड़िया-कैनयैनी के बात दोहराय देलें छेलै, आरो एक क्षण चुप रहला के बाद आशु बाबू सें पूछलें छेलै, ''है पैंचों लेवों-लौटैवोंवाला बात हम्में नै समझें पारलियै, दादा, आबें जबें कि सत्ती बोदी चतुरानन चाचा के हाथ आपनों खेत बेचिये देलें छै, जेन्हों कि धनुकायन चाची के बातों सें बूझें पारलियै, तें हुनी कोन खेत के कोंन फसल दै के बात करी रहलों छेलै?''

आशु बाबूं, अजनसिया के एक-एक बात कें बड़ी धियानों सें सुनलें छेलै, मतुर बोललों छेलै कुछुवे नै। सबकुछ सुनला के बाद कुछ देरी लें एकदम सीधा होय कें बैठी गेलों छेलै, आँख मूंदी कें। ई देखी कें अजनसियौं हुनका नै टोकलें छेलै। कि तखनिये वैं देखलकै कि आशु बाबूं झोली कें—जे अभी तांय हुनकों कंधे से लटकी रहलों छेलै—उतारी कें टेबुल पर राखी देलकै, आरो वैसें एक पुड़िया में लपटैलों, एक अंगुरी के बराबर कोय चीज अजनसिया कें थमाय देलकै, जेकरा पैथैं, वैं कहलें छेलै, ''तें चलियौं, बड़ों दा, बेरा डुबला सें हमरों परेशानी बुझवे करै छों।'' आरो ई कही ऊ सीधे देहरी सें नीचें ससरी गेलों छेलै।

मतुर आशु बाबूं उत्तर में कुछुवों नै कहलें छेलै, जेकरा पर अजनसियां ध्यानो नै देलें छेलै, जेना ओकरा आशु बाबू के उत्तर के कोय जरूरतों नै रहें। देहरी सें उतरला के बाद ऊ दू-तीन दाफी चुटकी बजैतें हुएँ पछियारी टोलों दिस बढ़ी गेलों छेलै।

(१६)

''सुनें स्वाति, आबें सब कुछ तै तमन्ना होय गेलों छै। दुआर पर

बराती लागथैं, बचलों टाका लड़कावाला कें देन्है छै, व्यवस्था छौ नी?'' पंचामृत बाबू कहलें छेलै।

''हों, दादा, सब वेवस्था करी रहलों छियै।'' सत्तियों लगले उत्तर देलें छेलै।

''तें, तोरा बाकी के चिन्ता नै करना छै। हौ हम्में देखी लेवै। आरो बौआवें के समय्यो कहाँ रहलै, बस महीना भरी तोरों हाथों में रही गेलों छौ। घरों में आरो सब इंतजामो तें करना छौ; से आबें तोहें गाँव लौटी जो ! साथों में अमर कें भी राखी लें ! वहाँ गामों में असकल्ले सब इन्तजाम करवों तें मुश्किले छौ। फेनु अमर यहाँ रहिये कें की करतै। नामो लिखैतै, तें वैमें महीना भरी देर तें बुझवे करें। आरो हों, फूल यहीं रहतै, ऊ तोरों बोदिये साथें, पाँच रोज पहलें गाँव पहुँचतौ। बुझलैं? बोदी लुग जिद नै करियैं। सुनै छियै, तोहें लाल बोदी सें कही रहलों छेलैं—फूलों कें साथ लै जाय के बात। ई बात दिमागों सें हटाय दैं, आरो अमर कें लैकें तोहें दौलतपुर लौटी जो।''

सत्ती कुछुओ जवाब नै देलें छेलै। लालदा के हर बात जेना देवता के आदेश रहें, जे कुछ, केन्हों कें टारलों नै जावें सकै छेलै। ऊ होन्हौ कें कुछ नै बोलें पारै छै, जखनी वैं बड़ों दा सें आपनों लेली स्वाति नाम सुनै छै। एक लाल दा ही कभियो ओकरा सत्ती कहीकें नै पुकारलें छै, बाबुए नाँखी स्वाति कहलें ऐलों छै, नै तें नैहर के सब्भै तें बस वहा सत्तिये, जे नाम ओकरों ससुराल वालाहौं जानी लेलें छै।

सत्ती कें मालूम छै कि पंचामृत बाबू कोंन सोभाव के आदमी छै। आपनों तें आपने छेकै, दोसरों लें हुनकों मोंन होने छलछलैतें रहै छै। हौ दिन नै जानौं कोंन बातों कें लैकें सत्ती के आँख, हुनकों सम्मुख लोराय गेलै, तें पंचामृत बाबूं कहलें छेलै, ''स्वाति, जबें घोर दुक्खों के दिन छेलौ, तखनी तें आँख आरो मोंन कें बांधलें राखलैं, आरो आबें, जबें सुख तोरों दुआरी पर खाड़ों होय कें झिंझरी ढकढकाय रहलों छौ, तें हौ आवाज नै सुनी, आँखी के दुआर खोलै लें बैठी गेले। इखनी तें कुछ निश्चिन्त होय कें नै बोलें पारौं, मतुर खुशखबरी जल्दिये सुनें पारें कि अमरजीत कें सरकारी नौकरी मिली गेलों छै—रेल के नौकरी, वहू में एकरा कोय हेन्हों-तेन्हों पद नै मिलै वाला छै। परीक्षा में लिखवो करलें छै बढ़िया, बोलवो करलें छै बढ़िया। तबें, जब

तांय नियुक्ति के पत्र नै मिली जाय, तें इखनी की कहें पारौं।''

पंचामृत बाबू के बात सुनी कें सत्ती के आँखी के लोर, मनों में उठलों खुशी के झोकों सें तखनिये सूखी गेलों रहें। जिनगी में पहिले दाफी वैं शायत लाल दा कें आँख उठाय कें देखलें छेलै, जेना पूछतें रहें, ''की ठिक्के कहै छों, लाल दा?'' जे पंचामृत बाबू कें समझै में देर नै लागलों छेलै। कहलकै, ''तोरा विश्वास नै नी होलौ। जबें नियुक्ति-पत्र ऐतै, तबें तें विश्वास होतौ। इखनी जो, सुती रहें। जों विहनकी गाड़ी पकड़ै लें चाहें, तें हमरे साथ निकली चलियैं, नै तें खाय-पीवी कें सुस्ता सें निकलिएं, बरबज्जी गाड़ी सें। आरो सुनें, गाड़ी सें उतरी कें सीधे घोंर जैवे। मसूदन मंदिर आरो मनार पहाड़ देखलें नै जैय्यें। फूल के बीहा-शादी बिना कोय भांगटों, दिक्कत के होय जाय, तबें जोंन देवता-देवी के जोंल चढ़ाना होतौ, चढ़ैतें रहियें, तेल-सिनूर करना होतौ, करतें रहियें।''

सत्ती नें लाल दा के बात चुपचाप सुनी लेनें छेलै। ओकरों चेहरा पर जे खुशी उपटी ऐलों छेलै, ऊ नीचें उतरें लागलों छेलै, जेना आँच पर उबलतें दूध के नीचें सें सुलगतें लकड़ी हटाय लेलों गेलों रहें। बिछौना तक पहुँचला के बादो ओकरों चित्त शांत नै हुऍ पारलै। हालाँकि लाल दां जोंल चढ़ावै आकि तेल-सिनूर के बात कोय पुरानों बात के आड़ लैकें नै कहलें छेलै, मतुर सत्ती के मोंन वही घटना सें जाय कें बंधी गेलों छेलै। खटिया पर चित्त लेटली वैं देखलकै, एकदम घुप्प अन्हरिया छै, ऐंगना दिस लालटेन लैकें जानाहौ मुश्किल। चिमनी चनकै के भय छेलै। अन्दाज तें छेवे करलै कि ऐंगना के बाद कोंन ठियां कुइयां छै, से ओकरों मना करला के बादो, विनय ऐंगना दिस बढ़ी गेलों छेलै, जेना अन्हरिया में ओकरा सबकुछ दिखैतें रहें। कुइयां में बालटी उलटावै-पलटावै के आवाज सें वैं जानलें छेलै कि विनय कुइयाँ तांय पहुंची गेलों छै, फेनु कुइयां के पाटों पर बालटी राखै के आवाजो होलों छेलै। ऊ निश्चिन्त होवे करतियै, कि विनय के मुँहों सें बेकल करी दैवाला—माय गे, माय गे—के चीख निकलें लागलों छेलै। दोनों ऐंगना से लोग दौड़ी पड़लों छेलै, आशु बाबू सें पहिलें हुनकों पत्निये हफसली-धपसली पहुँचली छेलै।—की होलै, की होलै?—कुहराम मची गेलै। गाँव-टोला के कै लोगो आवी गेलों छेलै, आपनों-आपनों टार्च लेनें। सत्ती तें विनय कें संभालै में छेलै आरो विनय तें सत्ती के गोदी में जना छटपट-छटपट।'

आँखी आरो ओकरों कानों में एक-एक दृश्य, एक-एक आवाज उतरें लागलों छेलै...

''देखों, देखों, आस-पास झाड़ी में कुछ छै तें नै?'' कोय बोललों छेलै। कि तखनिये आशु बाबू के नजर बालटी के पानी पर पड़लों छेलै। छरविन्न रं कोय करिया जमीठ कीड़ा पानी पर तैरवों करी रहलों छेलै। हुनकों चेहरा पर केन्हों भय आरो परेशानी हठासिये उभरी गेलै। की हुनी हौ कीड़ा कें देखथैं सब बात बूझी लेलें छेलै आरो आपनों तीन बैटरीवाला टार्च लेलें बँसबिट्टी दिस झब-झब निकली गेलों छेलै। लौटलै, तें कुछ लोंत-पात लैकें। जल्दी-जल्दी पीसी-घसी कें वहीं तरहत्थी पर लगाय देलें छेलै, जेकरा विनय होने डोलाय रहलों छेलै; जेना गुलेल सें घायल कबूतर आपनों पखना फड़फड़ैतें रहें। लहर तें उतरी गेलों छेलै, मतुर विनय के चेहरा तें दिन-प्रतिदिन करियैले जाय रहलों छेलै, आरो ओकरों जिनगी लें सत्ती रोज मसूदन मंदिर में माथा टेकी आवै, तें कभियो मनारो के विष्णु मंदिर में माथा टेकी आवै, मतुर होलै की? कुछुवो तें नै। विनय बचें नै पारलै। मतुर यैमें भगवानों के की दोष? दोष भैसुरो कें कैन्हें देवै। हुनी तें विनय के देहों के विख दूर करै लें की-की नै कोशिश करलकै। ढेकी-माय के बोलै के की? ऊ तें कभियो कुछ बोली दिऍ पारें—मतुर हेन्है कथी लें बोलतै। जे हुऍ, ढेकी-माय जों ई कहै छै कि समय रहतै जों दादा ई बोली देतियै कि विनय कें भागलपुर लै जाना जरूरी छै, तें कातो बाबू सें दिखाय देतियै। मतुर हुनी तें यही जिद पर रहलै—यहीं ठीक होय जैतै। कातो बाबू आरो अमूलो बाबू की करतै? मानलियै, कि हुनका दुनु कुछ नै करें पारतियै, मतुर दादाहै की करें पारलकै? अकारथ में विनय के प्राण चल्लों गेलै, घास-फूस के लेप लगाय-लगाय कें की होलै ! ढेकी-माय जबें ई कहलें छेलै कि यैमें हमरा तें कुछ आरो बात लागै छै, बड़का खर्च—आरो बड़का खर्चा; के मतलब छै, खेत-बारी बेचै के नौबत। शायत यही लें हुनी भागलपुर में इलाज के बात टारी देलें रहें।... तखनी ढेकी-माय के बात टारी तें देलें छेलियै, मतुर हौ बात हमरों सीना सें निकलें कहाँ पारलै, पोकोही रं मनो के कोना-कोना में फैलते रहलै। ऊ आबें छूटी तें गेलों छै, मतुर एकदम्में चोखाय गेलों रहें, यहू कहाँ छै। महीना भरी हमरों आंखी के लोर नै सुखलों छेलै, आरो एक दिन हेनों सुखलै, कि देहों के लहुओ तांय जेना सूखी गेलों रहें...

एत्तें-एत्तें बात याद करथैं, सत्ती के भरमैलों आँख एकदम्मे खुली गेलै, आँख खुली गेलै, तें कंठ सें सिसकियो निकली ऐलै। सिसकियो हेनों कि ओकरों कानो कें पता नै चललों होतै, मतुर अनुकंपा के कानों सें ऊ सिसकी छुपें नै पारलें छेलै। वैं आपनों सब ध्यान खींची कें सिसकी पर लगाय देलें छेलै। सोचलकै, ई भ्रम नै हुएँ पारें, पर ऊ नै तें उठलै, नै कुछ बोलवे करलै। ओकरा मालूम छै, कि रात-बेरात कोय किसिम के सिसकी आवें कि हँसी, नै टोकना चाही। हवा-बतास के रूप में प्रेतो उड़तें रहै छै।

सिसकी थमी गेलों छेलै, तहियो अनुकंपा नै उठलै, चुपचाप करवट लैकें सुतै के कोशिश करतें रहलै। एक दाफी तें ओकरों मनों में होलों छेलै कि काहीं सत्तिये तें कोय बातों कें याद करी कपसी नै पड़लों छै, कैन्हेंकि सिसकी के आवाज वहा दिसों सें ऐलों छेलै।

विहानै सत्ती के जाय वक्तियो तांय वैं ओकरा सें कुछुवे नै पुछलें छेलै, नै सत्तियैं अनुकंपा सें कुछ कहलें छेलै। बस लालदा आरो बोदी के गोड़ छूवी कें दरवाजा दिस बढ़ी गेलों छेलै। ई पहलों दाफी हेनों होलों छेलै कि माय साथें फूलो नीचें उतरलों छेलै, आरो पहिलें दाफी एक दूसरें देखलें छेलै कि लोर दोनों आँखी के कोरी में काजल नाँखी ई छोरों सें ऊ छोरों तांय फैली गेलों छै।

(१७)

गाड़ी एक जोरदार ब्रेक के साथ रुकलै, तें गाड़ी सें बैठलों सवारी सिनी समझी गेलै कि तालापुल आवी गेलों छै। हेना कें जखनी जसपुरा सें गाड़ी खुलै छै, तखनिये सें गाड़ी में बैठलों लोग ओंघना छोड़ी दै छै, नै तें समझों तालापुल पर गाड़ी जे रं रुकै छै, ओकरा सें ओंघैवाला के माथों अगला सीटों सें टकरानाहै छै, आरो काहीं बेसी नीनों में रहें, तें टेटनों फुलनै छेलै। यैसें बचै लेली गाड़ी पर ओंघैवाला सवारी अगला सीटों कें हाथों सें पकड़लें आकि सीटों पर हेने बैठै कि ठेहुनों ठो आगूवाला सीटों सें जाय कें

सट्टी रहें—ताकि कत्तो झटका सें गाड़ी कैन्हें नी रुकें, माथा में चोट नै लागें। रस्तो में कोय हेनों जग्घों के निशानियो तें नै छेलै कि लोगें ऊ देखी कें समझी जाय कि तालापुल नगीच आवी गेलों छै।

हों, सावधानी लें ड्रायवर आपनों सीटों सें लागलों हार्न कें जरूरे कस्सी-कस्सी दबाबें लागै आरो ई काम तें ड्रायवर जसपुराहै सें शुरू करी दै, ताकि तालापुल पर हिन्नें-हुन्नें बैठलों पसैंजर एक ठियां आवी जाय। मतुर सत्ती तें जानी कें खिड़की लुग बैठलों छेलै कि दूरहै सें तालापुल कें देखें पारें। आरो तालापुल के नगीच ऐत्हैं, ऊ सावधान होय गेलों छेलै। गाड़ी रुकलै, तें आपनों पोटरीनुमा झोली थामलें गाड़ी सें नीचें उतरी ऐलै।

उतरलै, तें सीधे काली मंदिर दिस बढ़ी गेलै। थान के कुइयाँ पर जाय कें बालटी-उधैन लेलें छेलै, गोड़-हाथ धोलें छेलै आरो थानों पर राखलों धुपौड़ी के राख चुटकी सें उठाय के गेठी में बांधी लेलें छेलै। घुमलै, तें देखै छै, देवदासी ओकरे इन्तजारी में कनेली गाछी के नीचे ठाढ़ी छै।

"अरे तोंहें, देवदासी? यही गाड़ी सें उतरला की?"

"नै बोदी, सिंहेसर मालिके के खेत जोगी रहलों छियै, तोरा देखलियौं, तें हिन्नें आवी गेलियै। बड्डी दिनों पर देखलियौं। कहीं बाहर छेलौ की? गाड़ी सें उतरलों छौ।"

"हों, लाल दा के यहाँ छेलियै।"

देवदासी कुछ बोलतियै कि तखनिये आपनों कानों पर हथेली राखी लेलकै। असल में जोर के आवाज ओकरा बर्दास्त नै होय छै। वैं देखलें छेलै कि खलासी स्वास्तिक नाँखी छड़ निकाली कें इंजिन में लगाय कें घुमैयैवाला छेलै, आरो पाँच-छों बार अमैठतियै कि गाड़ी गों-गों करी कें गरजी उठतियै, आरो यहा शोर ओकरा बर्दास्त नै होय छै। गाड़ी गरजी कें आगू बढ़ी गेलै, तें देवदासीं पुछलकै, "एत्तें दिन तें तोहें काहीं नै रुकै छौ, बोदी की फूल के बीहा-शादी लैकें तें....?"

सत्तीं देवदासी के चेहरा देखतें कहलकै, "साँझै घोंर अय्यों, सब बात बतैभौं, हों फूल के शादियो-बीहा लै कें बाहर छेलियै।"

"साँझे कथी लें बोदी, इखनिये कैन्हें नी? हम्मू साथें चलै छियौं, आबें जोगबारें खेत जोगतै, खाय-पीयै के समय तें होय्ये चललों छै। हो वें, मालिक के नौकरवों तें आविये रहलों छै।" देवदासी नें नौकर दिस ऊँच्चों

सुर करी कें कहलें छेलै, ''आबें खेत जोगियें टुनटुन, हम्में घोंर चलै छियौं।'' आरो ऊ सत्ती के झोली आपनों हाथों में लै लेलें छेलै।

''चलों बोदी; कत्तें दिन होय गेलै, तोरा सें बातचीत करलें।''

आरो दोनों कच्ची रास्ता पार करी कें दौलतपुरवाला बाँध पकड़ी लेलें छेलै। दोनो में सें कोय्यो अकेली होतियै, तें एत्तें हौले-हौले नै चलतियै, मलकिये मलकी कें चलतियै, मतुर इखनी दोनों के कदम एकदम रुकी-रुकी कें बढ़ी रहलों छेलै। देवदासी एक्के साथ कत्तें-कत्तें बात पूछी लेलें छेलै आरो सत्ती एकेक करी कें सब सियारतें कहलें जाय रहलों छेलै, ''हम्में की, फूल के शादी करें पारतियै देवी, वहू में नौकरीवाला; सब लालदा के करलों-धरलों छेकौं। हों, दहेज के टाका तें हमरै जुटाना छेलै, लाल दा कहाँ सें दिएँ पारतै। जहाज रं परिवार कें एक मास्टरी पर चलाय रहलों छै, वहू भागलपुरों हेनों शहरों में—किराया के मकान लैकें। आपनों बच्चा-बुतरू के पढ़ाय-लिखाय साथें अमर के पढ़ाय तक हुनके बल्लों पर नी। तबें, देवी, तोरों दादाहौ तें सरंग सें हमरों सुख-दुख देखिये रहलों छौं नी। हुनियो तें हमरा हर विपत्ति सें उबारतें रहलों छै, आगुओ उबारत्हैं रहलात।'' आरो एतना बोली कें ऊ भसमवाला गेठी आपनों माथा सें लगाय कें फेनु कान्हा सें लटकाय लेलें छेलै।

''बोदी, दहेज के बाद, आरो खर्चा तें होवे करतै। बीहा-शादी तें पहाड़ रं भारी होय छै, असकरे के उठावै पारें ! किसिन भगवान आदमी थोड़े होय छै।''

देवदासी सें सत्ती-घर के हालत छुपलों नै छेलै, यै लेली वैं ई पूछी बैठलों छेलै, जेकरा वैं बुराहौ नै मानलें छेलै, आरो वहा रं सुस्तैलों आवाज में कहलें छेलै, ''गाँव में हेनों कोन टोला होतै, जेकरों लें अमर रों बाबूं आपनों जिनगी रहतै कुछ-कुछ करलें नै होतै। आय हमरों घरों में यज्ञ होतै, तें की देहो-समाँगों सें कुछ नै करतै। टाका-पैसा, अनाज थोड़े माँगवै, ननद; ऊ तें जेना होतै, बारात; सिनी के हाथ धुलैवे करवै नी।''

ई बात कहतें-कहतें सत्ती के गल्लों कुछ भारी होय गेलों छेलै, तें देवदासीं तुरत बातों कें लोकतें कहलें छेलै, ''है की बोलै छौ, बोदी, तोरों घोंर लेली तें सौंसे गाँव ठाढ़ों छै। भूलें पारै छै कि गुलाब दा के बाबां, बावाहैं नै, परबाबाहौं, जब तांय टोला के दस घरों कें पूछी नै आवै कि खाना बनलों

छौं की नै, तब तांय आपनों घरों में अन्न नै ग्रहण करै, है बात की सौ-पचास बरसों के थोड़े छेकै, बोदी, बस बीस-पच्चीस बरसों के तें बात छेकै। आरो तोंही केकरों लें की नै करलें छौ, बोदी। जेहनों आपनों छोटों-छोटों दोनों भाय कें लानी कें सेवा-सुसुरसा करलें छौ, के करै छै हेनों। तोहें तें सिद्ध करी देलें छौ कि बड़ी बहन छोटों भाय लें दूसरी माय होय छै। ई वक्ती आखिर दोनों भाइयो तें मदद करवे नी करतौं। बाप रे बाप, हम्में आपनों आँखी से देखलें छियै, तोरों मंझला भाय के देह-हाथ रोगों सें केन्हों होय गेलों छेलै। धन्य कहौ बड़ों दा के, कहाँ-कहाँ सें जड़ी-बूटी लानै और धन्य तोरों रं बहिन—की रं घाव कें धोय-धोय कें जड़ी-बुटी लगाय छेलौ। तें, दोनों छोटों भाय की हौ सब भूली गेलों होतौं? जों भूलिये गेलों होतौं, तें की, दौलतपुर छै की नै ! टाकाहै की धोंन-दौलत होय छै, बोदी? दिलो दौलत होय छै, आरो जों दिल छै, तें सब कुछ हासिल, जों यहा नै छौं, तें सब रहतौं कुछ नै।...की खाली भाइये के? टोला के हेनों कोंन घोंर होतै जेकरा दुक्खों में तोंय समांगों सें साथ नै देलें छौ, टोलाहै के? गाँव भरी के कहों नी। है बात गाँव-टोला भूललों नै छै, बोदी। जरूरत पड़तै, तें गाँव भरी ऐंगना में ठाढ़ों मिलथौं, जेकरों शायत जरूरते नै पड़तै....मतुर है हम्में कहाँकरों बात कहाँ उठाय कें लै आनलियै। तबें तें एकरों मतलब यही न होलै बोदी, कि ई महीना के खतम होतै-होतै गीत-नाद शुरू ! फेनु महीना खतम हुवै में कत्तें दिन आरो छेवे करै? दस दिन, जे देखत्हैं-देखत्हैं फुर्र होय जैतै, दिन तें चील के उड़ान बूझों। होनै कें गोसांय-देवता के गीत तें कल्हें-परसू सें शुरू होय जैतै; नै बोदी? ई अलग बात छै कि गोसांय-देवता के गीत गावै वक्ती शबरी-माय के ऐंगना में अभाव जरूरे खलतै।''

''कैन्हें, की भेलै शबरी-माय कें?'' सत्ती हठासिये चौकी पड़लों छेलै।

''होलों तें कोय खास नहियें छेलै, बस विहान होथें गाँव छोड़ी देलकै।''

''तहियो?''

''घरों में कचकचों तें करिये नी रहलों छेलै, पुतुह्वैं। कभी हड़िया अलग करी लै, कभियो भाय साथें नैहरा भागी जाय, आरो कभियो रात भरी शबरी सें कचकचों करतें रहै, एक दिन सुनलियै कि पुतुह्वें एत्तें शबरी-माय

कें सुनैलकै कि वैं घरे छोड़ी देलकै। रास्ता में जे भी मिललै, ओकरा यही कहतें गेलै कि आपने पेट भरना छै नी, ऊ तें कोय गाँव में केकरो दुआरी पर रही कें होय जैते। नौड़पने करना छै तें केकरौ कन जग्घों मिली जैतै। खाना बनाय के हुनर छै, तें मुँहों में दू दाना चल्ले जैतै, आरो ठिक्के में वैं गाँव छोड़ी देलकै, लौटलै नै। लोगें तें यही बुझलें छेलै कि दू, तीन दिन बाद घोंर लौटी ऐतै, लेकिन शबरी-माय फेनु घोंर नै ऐली। बुढ़ापा रों देह, जानें केकरों दुआरी पर केना खटतें होती।'' कही कें देवदासी एकदम सें चुप होय गेलों छेलै आरो सत्तियो। बस चलतें रहलै, चुपचाप। यहाँ तक कि सत्ती के घोंर के नगीच आवी गेलों छेलै।

देवदासी रुकलै आरो आपनों अंचरा दोनों हाथों के बीचों में लैकें सत्ती के सामना गर्दन झुकाय लेलें छेलै, तें सत्तियों आपनों हाथ आशीर्वाद के मुद्रा में ऊपर उठाय देलें छेलै।

(१८)

सत्ती के गाँव लौटवों भर छेलै, कि टोला-टोला में अनुमान रों कथा-खिस्सा रंगें लागलै। जत्तें लोग, ओत्है बात, ''चिंता फिकिर सें केन्हों करियाय गेलों छेलै बेचारी। बोदी, आबें निष्फिकर होलै, तें मनो हलफलैलों लागै छै। कोय मिलै छै, तें केन्हों हुलासों सें मिलै छै, चाहे कोय रहें कि। यहा बोदी, आठ-दस महीना सें केन्हों झाड़-झंखाड़ होय रहलों छेलै।''

''से तें ठिक्के कहै छैं, वासमती; भगवाने सब्भे के दिन घुरावै छै। तोहें आठ-दस महीना के बात करै छैं, हम्में तें सत्ती बोदी कें जिनगी में वहा दिनों सें ढेव मारतें देखलें छियै, जोंन दिन गुरुदादा के ठठरी उठलों छेलै; गोदी में चार-चार ठो बुतरु। अन्तरे की होतै चारो भाय-बहिन में? बेसी-सें-बेसी दू सालों के अन्तर। यही नी। मतरकि हियाव देखों बोदी के। बच्चा-बुतरु के दुख देखलकै, तें यहू भूली गेलै कि हुनकों माथा पर नै आबें सिन्दूर छै, नै हाथों में चूड़ी। खुरपी-कुदाल उठाय लेलकै आरो आपनों बारी सें लैकें

घरों के दीवारी पर लोंत-पात उगाना शुरू करी देलकै। की पूसों के ठंड आरो की बैशाखों रों घाम। बोदी के रंग सिनुरिया आम नाँखी छेलै, वही धूप आरो ठंडा सें कारों लागें लागलों छेलै। खेती-बारी में हुनकों है मेहनत देखी कें कोयरी टोला के सवासिनो सिनी दंग रहै।''

''ठिक्के बोलै छों। बीड़ियो तांय बनाय के काम करलकै; केकरों वास्तें? बुतरुवे सिनी लें नी। ओकरहौ पर देखों, एक बेटा जुआन होय सें पहलें मुँह मोड़ी गेलै। करेजों कूटी कें रही गेलों छेलै, बोदी। शायत एत्तें नै टुटतियै, जत्तें मंझला बेटा के नुकसान सें टूटी गेलों रहै। जे भी कहों, भैसूर आरो बड़ी गोतनी लागले रहलै, बोदी के पीछू-पीछू, वहू दू-चार महीना नै, सालो-भर, जब तांय, सत्ती बोदीं अपना कें ठीक सें संभाली नै लेलकै।

''बड़ों घरों के यहा तें पहचान होय छै, बासमती। बड़ों घोंर, की जात आरो धोंन सें बनै छै, शील सें बनै छै, जे वैद्य बाबां पैलें छै, आरो वहा रं हुनका बोमाँओ मिललों छै। कटियो टा कोय कम-वेस नै। जो हेनों नै रहतियै, तें की समझै छैं, सत्ती बोदी है जहाज संभालें पारतियै? कत्तों हियाववाली कैन्हें नी रहें। जनानी तें जनानिये छेकै, विपत्ति में मरदाना के मदद नै मिलें, तें समझों बीच गंगा में नाव के पेंदा में छेद। नाव कें भाँसन्है छै, डूबन्है छै।''

''देखलौ नै, जोंन दिन बोदी काँखी में पोटरी समेटलें आपनों दुआरी पर उतरलों छेलै, केना हुलसी कें बड़ी बोदी ऐलों छेलै, द्वार खोलै लें, तखनी तें हम्में वाँही छेलियै, विसु के बाबू के दवाय लानै लें गेलों छेलियै। शायत बराण्डे सें बड़ों दां बोदी कें एकपैरिया रास्ता सें ऐतें देखी लेलें छेलै, से हमरा कहलें छेलै—देखै छियै, बलजीत-माय आवी रहलों छै, तोहें एक दवाय लै जा, दू दवाय सँझकी वक्ती आवी कें लै जैय्यों—आरो हुनी बड़की बोदी कें बोलाय कें सत्ती बोदी के आवै के बात बतैलें छेलै। घंटा भरी तें हम्में वहाँ रुकले होवै। ओत्ते दिनों के बाद छोटी बोदी आवी रहलों छेलै, विना सामना सें देखला घोंर केना निकली जैतियै।'' टिकुलियां हाथ चमकाय-चमकाय कें कहलें छेलै।

''नै पूछों दीदी, कोंन टोला के दू-एक जनानी एकेक करी कें नै ऐलों छेलै आरो सत्ती बोदी हुलसी-हुलसी सबकें बैठै लें कही रहलों छेलै। भला ओत्तें-ओत्तें जनानी कें कहाँ बैठैतियै। एकटा बड़ों रं खटिया निकाली

कें ऐंगनाहै में बोदीं बिछाय देलें छेलै, वै पर वहो सुगनियो बैठली छेलै, जेकरा ऊ घरों में कभियो पुरानों होतें नै देखलें छियै। ठीक कहै छियौं दीदी, आरो गाँव के तें नै कहें पारियौं, मतुर आपनों गाँव अभियो वहा रं—वही गाँव छेकै। कहै के सत्ती बोदी सबकें खटिये पर बैठै लें कही रहलों छेलै, मतुर जे भी जनानी आवै, बस देहरी पर जमी कें बैठी रहै, आरो देहरियो की भरैवाला छेलै, उत्तर, दक्खिन, पच्छिम तीनो दिस देहरिये-देहरी। गनगनाय रहलों छेलै बोदी के ऐंगनों। हेनों दिरिश शायते हम्में ऊ घरों में कभियो देखलें होभै, पूजा-पाठ के बात अलग छै। आरो पहिलों दाफी यहू देखलियै कि बड़की बोदी सें हुनी हर पांचे मिनटों में की रही-रही बात करै, जेना कहीं कोय भेदे नै रहें, दीदी।''

''भगवान करें, यही बात हुएँ, मतर बासमती, आबें समैय्ये बतैतै कि ई असमय के बारिश कत्तें नमी दिएँ पारतै; दिएँ पारतै कि छिमिहन के बर्बादि करी कें छोड़तै।''

''तोरों शंका बेकारो नै कहलों जावें सकें। है तें हम्मू जानै छियै कि सत्ती बोदी के मोंन आय तांय कोय नै जानें पारलें छै। है नै कि हुनी काँही सें केकरों प्रति दुराव भाव राखै छै, है तें कभियो नै, भगवान करें सब जनानी के सोभाव हेने हुएँ, मतुर कोय बात बोदी के मनों में जों कुछु के गत्थी जाय, तें ई बात हुनी कभियो भूले नै पारै, आरो यही हुनका जेठों-बैशाखों के हवा-बतास बनाय दै छै। आरो तखनी केकरों नै देह-हाथ झुलसी जाय।''

''आबें एत्तें बात कथी लें सोचना छै। सत्ती बोदी कें अगहनी धान रं लहलहावें, आरो की। घोंर-परिवार लें बोदी भले कुछ रहें, गाँव-टोला लेली ई बोदी तें मरला धानों पर झमझम बरखा।''

''से तें सहिये में। आरो एक बात जानलौ कि नै?''

''की?''

''चमत्कारे कहों। हिन्नें ई बोदी गाँव लौटलै आरो दोसरे दिन शबरियो-माय। छेकै नी चमत्कार ! कहै छै, सत्ती बोदी आपन्है सें बोलाय लें गेलों छेलै, भला बोदी आपन्है सें जाय, तें रुसै-गोस्सावै के समैये कहाँ बचै छै। ऊ तें हम्में कल्हे जानें पारलौं कि फूल के बीहा पक्की होय गेलों छै आरो है वक्ती शबरी-माय के गीत नै गूंजें, तें वहा भेलों कि बिना गोटा फुलैलै, अमराई के बिना मंजरलै आरो कोयली के बिना बोललै, चैत में

पाहुनगिरी।''

बासमती के ई बोलना छेलै कि सब्भे एक्के साथ आपनों-आपनों मुँहों पर अँचरा राखी, ठठाय कें हाँसी पड़लै।

(१६)

आय थुबड़ों छेकै, कल्हे बीहा के दिन। दू दिन सें सत्ती के आँखी में पुरनका एक-एक दृश्य घूमी रहलों छै—अठारों साल पहिलकों आपने बीहा के दृश्य...केना लालदा काँशों रों जामों में डंडीवाला पाँच-पाँच पान, पाँच सुपाड़ी, छोहारा, काजू, किसमिस, नारियल, कागजी बादाम, चाँदी रों पान, चाँदिये रों सुपाड़ी आरो जैमें पाँच सिक्का राखलें, एकरों साथे लड़का के पाटवस्त्र, लाल करधनी, दुल्हा-माय के साड़ी, धान-दुबड़ी साथें पिसलों हरदी, घी, पाँच प्रकार के मिठाय, पाँच प्रकार के फोंल लेलें नाऊ-पुरहैत साथें यहाँ गाँव निकली गेलों छेलै; यही ऐंगना में केना छड़ौला लिखलों गेलों छेलै, जेकरा पर सिन्दूर के टिक्का, वही पर पिठाली सें पोतलों कलश राखलों गेलों छेलै, कलश पर आमों के पल्लव, धूप-दीप। सत्ती आपनों होयवाला दुल्हा कें देखलें छेलै, जे पाटवस्त्र पिन्ही कें वहीं पर आवी कें बैठी गेलों छेलै आरो पंडी जी स्वास्ति पाठ करै में निमग्न।

वहा सब तें अभियो होय रहलों छै—आरो वहा रं फूलमती के बाहर निकलवों बंद होय गेलों छै।

आय तें थुबड़ों छेकै। वर पक्षों के ओरी सें जे पाँच चित्ती कौड़ी आरो गिरहों लागलों हरदी ऐलों छै, ऊ हरदी के उपयोग आय उबटन लेली होतै। मतर ऐंगन भरी जनानी के नजर जों कहीं पर रही-रही टिकी जाय छै, तें वैद्य आशु बाबू के पत्नी पर, यानी गाँव भरी लें बड़की काकी, बड़की माय, बड़की बोदी आरो सत्ती के गोतनी यानी प्राती-माय—लाल पाड़ के हरदियानों साड़ी में एत्तें फवी रहलों छै कि मत पूछों। टोला भरी के अलग-अलग घरों के पाँचो ऐभाती में प्रातीये माय सबसे ज्यादा शोभी रहलों

है, सत्तर बरस के होय गेलों है, तें की। की माँगों में सुरका सिनूर आरो गोड़ों में लाल टेस रंग। खाली शर्बते पीवी के सबटा विद पुराय में लागलों है, मजकि जरिये टा की मुँहों पर शिकन दिखी जाय। प्रातीये माय, माँटी के चुल्हा पर माँटी के बर्त्तन राखलें छेलै, फिरु पाँचो ऐभाती मिली कें कड़ाही में उबटन के मसालो कुटलें छेलै।

सत्ती ऐंगना में बिछलों खटिया पर बैठलों-बैठलों सबकुछ देखी रहलों है, रही-रही कें कुछ-कुछ बतैवो करी रहलों है।

वैं देखै है—उबटन के मसल्ला सिलपाटी सें पीसलों जाय रहलों है, तें एकदम सें विभोर होय जाय है।

सरसों तेल में उबटन मिलाय कें ऊ पीतलिया थाली पर राखी देलों गेलों है आरो वही थाली में पाँच-पाँच सुपाड़ी, पान, मिठाय, साथें सिनूर, फूल, बेलपत्तर साथें, शिव-पार्वती रों मोर-पटवासी।

सत्ती के नजर चारो दिस टुकनी रं उड़ी रहलों है। कभी नया चुल्हों पर लब्बों बर्त्तन में पुरहैत के खीर बनैवों, तें कुलदेवता कें भोग लगैवों आरो जल्दिये ओकरों नजर मड़वा पर बैठली फूलमती पर जाय कें ठहरी जाय है, जेकरों आँखी कें पांच ऐभातिन पान पत्ता सें मुनलें होलै छेलै। कमली माय, साथें अझोला फूल के हाथों पर उबटन फेरी रहलों छेलै, आरो जेठानी शंख फूकै में बेहाल।

सत्ती के कानों में अठारों साल पहिलकों उलू उलू के ध्वनि गूंजी उठलै, तें ओकरों आँख आपने आप बंद होय जाय है। बीतलों बात घुरी-घुरी आवै है—लाल पाड़ के साड़ी में ऊ लजौनी बनलें दौलतपुर उतरली छेलै। ससुराली के आपनों घोंर के आपनों ऐंगन ! जेठानिये विदकरनी बनली छेलै—ऐलता सें गोड़ रंगलों, सुरका सिनूर आरो लाल-पीरों साड़ी में दगदग गोरी-लारों केन्हों शोभी रहलों छेलै।

सत्तीं एक-दू दाफी आपनों आँख झपकैलकै, जेना नींद कें तोड़ै के कोशिश करतें रहें। नजर घुमाय देखैलकै, की रं अमूल, अजय, अमरजीत, मडवा बनावै में संझकिये बेरा सें लगी गेलों है, मडवा के बीच में धान बिछैलों गेलों है, जै पर जल सें भरलों कलश, फेनु कलशों पर आमों के पल्लव, ...

देर रात तांय जेठानी साथें गोतिया भरी के ऐभातिन गीत-नाद सें

रात कें जगैतें रहलों छेलै।

नै चाहतौं, सत्ती कें आपनों बीहा के याद रही-रही कें आवी जाय छै; लालदा के दोनों छोटकी बेटी सुशीला आरो उमा हैय्यो जोड़ी बनलों छेलै। जबें पीठाली आरो सिनूर सें रंगलों ढकनी में चोंर, हल्दी, चित्ती कौड़ी राखी कें दोसरों ठकनी सें ओकरा हरदियानों कपड़ा सें बंद करी हैय्यो जोड़ी के कमरों में बांधलों गेलों छेलै, साथे साथ पटवासी पहनैलों गेलों छेलै, तें केना दोनों खिलखिलाय पड़लों छेलै...चचेरी मंझली बोदी नाक के ओरी सें लैकें माँग तांय सुरका सिनूर लगाय कें बिलोकी बुललों छेलै, चचेरिये छोटकी बोदीं सूप के चारो किनारी कें लाल रंगों सें रंगलें छेलै, हुनिये सूपों में पान, सुपाड़ी, मिठाय, उबटन, आरतो पत्ता, धान, दुबड़ी, शिव-पार्वती के मोर-पटवासी, सिनूर, राखी कें हौ सब पाटवस्त्र सें ढकलें छेलै...जखनी पाँच ऐभातिन साथें हैयो जोड़ी शिव-मंदिर दिस निकललों छेलै, ओकरों फोटू तें अभियो आँखी में साफ-साफ छै।

सत्ती कें ऊ सब कुछ याद ऐलै कि केना कोहवर में पीठाली सें ओकरों तरहत्थी आरो पाँचो औंगरी के छाप, पाँच जग्घों पर उतरवैलों गेलों छेलै; केना ओकरा सें ऐभातिन सिनी के खोयछा चूड़ा-बुनिया सें भरवैलों गेलों छेलै; केना खाली मड़वा कें गोबर सें निपलें छेलै; केना छड़ौलों लिखलें छेलै आरो फेरु याद ऐलै कि केना लाल दा, भुखले रही कें नान्दीमुख पर बैठलों छेलै, हुनकों सिवा पाँच पुश्त के नाम आरो के जानतै होतै।

सत्ती, नै ऊ घरभरी भूललों छै, नै हस्तक बटाय, नै बसोरों भात के रसम, जेकरा लाल बोदीं पूरा करलें छेलै, नया चूल्हा पर मिट्टी के नया बर्तन आरो वही बर्त्तन में विलोकी में मिललों चौर-दाल पकैलों गेलों छेलै, बसोरों साड़ी में लाल बोदी के हौ हुलास केना भूलें पारें, ऊ द्वार पर बारात लागलों छेलै आरो मूरीवाली दादी के कंठ सें गीत झरें लागलें छेलै,

कौनी नगरिया सें ऐलै बरयतिया हे, रस भीजी-माँती
अवध नगरिया से ऐलै बरयतिया हे, रस भीजी माँती

कि तखनिये शबरी-माय के गीत एंगनों में लहराय गेलै, गोंसाय गीत शुरू होय गेलों छेलै,

संझाहै बड़की हे मैया
संझवैये घर जाय कें हे

कथी केरो दियरा हे मैया
कथी केरों बाती हे
कथी केरों तेल हे मैया
जरै सौंसे रात हे
सोना केरों दियरा हे मैया
रेशम सूत-बाती है
सरसों के तेल हे मैया
जरै सौंसे रात हे
जरै जे लागलै दियरा
झलकै छै वाती हे
खेलें लागलै सातो बहिनो
चार पहर रात हे।

सत्तीं ऐंगना के चारो दिस आपनों आँख घुमैलकै। सँझकी बेरा बीती गेलों छेलै, आरो मड़वा लुग बैठली ऐभाति सिनी शबरी-माय के सुरों में सुर मिलाय रहलों छेलै। कम-सें-कम पाँच गोसांय गीत तें गैले जैतै। ऊ वहीं पर बैठली-बैठली गीत के पंक्ति दोहरैलें छेलै,

खेलें लागलै सातो बहिनो
चारो पहर रात हे।

(२०)

फूलमती टोला भरी कें कनाय आपनों ससुराल चल्लों गेली, मतुर ओकरों गेला पर गाँव भरी में जे हँसी-ठट्ठा के फुलझड़ी-पटाखा छुटी रहलों छै, ऊ रुकै के नामे नै लै छै।

है बात नै छै, कि ऐकरों जानकारी सत्ती, आशु बाबू आकि आशु बाबू के कनियैनी कें नै छै। छै आरो खूब छै, मतुर ई बातों पर नाराज होय के बदला हिनकौ सिनी कें हँसी आवी जाय छै, तें मुँहों पर हाथ रखी कें भीतरे-भीतर हँसी लै छै।

बात ई छेलै कि बारात जोॅन गाँव सें ऐलोॅ छेलै, वहीं गाँव के हाई इस्कूली में फूलमती के पंचामृत मामा यानी कि सत्ती के लाल दादा, मास्टर छेलै, बड़ा रौववाला मास्टर आरो ऊ गाँव के हेनोॅ कोय छवारिक नै छेलै, जे हुनकोॅ चटिया नै होतै।

''जबें बारात दुआरी पर पहुँचलै, तें बाराती के संख्या देखिये कें आशु बाबू के माथोॅ चकराय गेलै। करार होलोॅ छेलै कि बाराती में पच्चीस ठो सें बेसी आदमी नै ऐतै आरो आवी गेलोॅ छेलै पचास सें बेसिये। वहू में बूढ़ोॅ-बुजुर्ग तें आठ-दस सें बेसी नहिये होतै, बाकी सबठो एकदम छोॅर-छवारिक। आबें ई छोॅर-छवारिक कें की मालूम कि ऊ सब जोन दुआरी पर बाराती बनी कें उतरलोॅ छै, ऊ घोॅर माट साहब पंचामृत बाबू के मंझलकी बहिने के घोॅर छेकै, आरो फूलचंती माट साहबे के भैगनी। बाप रे, बाप, जखनी दुआरी पर बारात लागलै, तखनी ऊ सब के नखरा देखतियैं, ई लान, हौ लान, ई नै छै, हौ नै छै! हेने लागी रहलोॅ छेलै; जेना घरोॅ के दीवार छप्परे तोड़ी-ताड़ी कें राखी देतै।

ई बात के खबर पंचामृत बाबू कें लगना छेलै कि आशु बाबू के दुआर छोड़ी, जनवासा दिस लपकी कें चलिए तें देलकै। अरे की कहियौ, हौ दिरिश के बारे में। टीन बजैला पर बानर कें छप्पर-सें-छप्पर आकि गाछी-सें-गाछी पर उछलतें तें देखले होभैं, ओन्है कें छौड़ा बाराती सिनी उछल-कूद करी कें हिन्नें-हुन्नें भागना शुरू करलकै; मत पूछें, कोय, विसविट्टी दिस भागलै, कोय नद्दी दिस, जेना बानर केकरो हाथोॅ में गुलेल देखी लेलें रहें।'' कहतें-कहतें सिद्धी एकदम ठठाय कें हँसी पड़लै। तें साधुओ कें नै रहलोॅ गेलै। गुलेलवाला बातोॅ सें जेना ओकरोॅ पेटोॅ में बाघी पड़ी गेलोॅ रहें।

''अरे तोरा सिनी तें एतन्है नी जानै छै, आगू के आबें हमरा सें सुन'' माधो मिसिर नें आपनोॅ दोनों आँख नचैतें हुएँ कहलें छेलै, ''बाराती के खाय के टैम होय गेलोॅ छेलै, मतर बाराती के छौड़ा सिनी कथी लें घुरी कें ऐतै। कुछ जे पंचामृत बाबू के चेला नै छेलै, ऊ तें घुरलोॅ छेलै आरो जतना पूड़ी, कचौड़ी, बुनिया लै जावें सकै छेलै, लेलें छेलै, मिट्टी के गिलासोॅ में तरकारी लेलें नदी पहुँचलोॅ छेलै। भागलोॅ बाराती सब वही सब खाय-पीवी नदिये के रेतोॅ पर आपनोॅ-आपनोॅ गमछी-चादर बिछाय कें सुती रहलै, आबें जरूरत छेलै तकिया के'' कहतें-कहतें माधो मिसिर ठठाय कें हाँसी पड़लै।

''अरे यैमें हाँसै के तें होनों बात नै छै।'' सिद्धि कहलकै, तें माधो बोललै, ''हाँसे के की बात छै? जानै छैं, हौ छौड़ासिनी तकिया बनाय लेली जे लकड़ी बिछी-बिछी आनलें छेलै, ऊ सारा परकों बचलों-खुचलों जरलों लकड़ी छेलै। बिहानै पता लगथै, तें सब नद्दी के धारा में बतख नाँखी मूड़ी गोती-गोती कें नहाय रहलों छेलै। मत पूछें, ऊ दिरिश।'' आरो ई कथा पर माधो सार्थे सिद्धि, मंगलिया, चेथरी आरो सकीचन खूब ठठाय पड़लों छेलै।

'वहीं सें नी, जे खाना बाराती वास्तें बनलों छेलै, ऊ टोला-पड़ोसों के लोग थरिया भरी-भरी लै गेलों छेलै, सत्ती बोदी कें कत्तें दुख तें होलों छेलै।''

''मतुर बोदी सें बेसी तें हुनकों लालदा दुखित होय कें गेलों छै।''

''से बात तें तोहें ठिक्के कही रहलों छैं।''

''लड़की विदाय के ठीक दोसरों दिन के बात छेकै। सब कें आचरज होय रहलों छेलै कि अमर के पंचामृत बाबू आखिर अभी तांय रुकलों होलों कैन्हें छै? जों सरसतियां है बात विंदेसर कें नै बतैतियै कि छोटकी बोदी अमर कें कमल मिसिर के यहां छिपाय ऐलों छै, तें बातो खुलतियै की?''

''एकरों भनक कुछ हमरौ लागलों छेलै, बात की छेकै?'' मंगलिया गोड़ पसारतें बोललै।

''बात ई छेलै कि पंचामृत बाबूं अमर के बीहा के बात चलाय देलें छेलै, ओकरों दहेजों सें जे रकम मिलतियै वही सें फूलमती के बीहा में होलों खर्च आरो दहेज के बकाया टाका कें चुकाय के बात छेलै। हुनी यहू नै चाहै छेलै कि वैद्य दादा के जमीन में बंटवारा हुएँ, जे पुस्तैनी, खेतिहर जमीन छेकै, हौ, वैद्य दादाहै के पास रहें, मतुर सत्ती बोदी है सब एक्को बात लें तैयारे कहाँ छेलै। बोदी कुछ बोललै तें नै, बस अमर कें कमल मिसिर कन दू दिनों वास्तें बिठाय ऐलै। पंचामृत बाबू कें बात समझै में देर नै लागलों छेलै आरो हुनी हौ दिन बिना खैले-पीले दुआर छोड़ी देलकै, एकदम भोरे-भोर। जानैवालां तें जानिये लेलकै। जानतियै केना नै, आखिर अमर के दू दिन कमल पाठक के यहाँ नुकाय कें रहै के राज कै दिन छुपतियै?'' अब तांय पालथी मारी बैठलों माधो मिसिर नें गोड़ सीधा करतें कहलें छेलै।

''आरो वहा दिन सें बड़ी बोदी के ई घरों में आन-जान भी कम होय गेलों छै, दिखावै के कत्तो बड़की बोदी आरो लपकी बोदी एक दूसरा के घोंर ऐतें-जैतें रहें।'' मंगलियां आपनों माथों पर हाथ फेरतें कहलें छेलै।

''होना कें जे कहैं, मंगलिया; अमर आरो बलजीत के मनों में जरियो टा भेद नै ऐलों छै, बड़का बाबू सें दोनों के पहिलके नाँखी व्यवहार छै, बलुक कुछ बढ़िये कें। आखिर एत्तें पढ़लें-लिखलें छै कथी लें, आबें तें अमरजीत कें सरकारी नौकरियो लागैवाला छै, गाँव भरी में यही बात महीना भरी सें घुमी रहलों छै; आखिर कैन्हें नी होतै, ई तें गाँव भरी में पहिले दाफी होतै कि कोय छवारिक सरकारी नौकरी में जैतै, वहू में बिहारों के नै, दिल्लीवाला सरकारों के नौकरी में। सुनै छियै, रेल चलैतै। बड़का बात तें छेवे नी करें, मंगलिया। यहाँ तें मोटर हाँकैवाला ड्रायवर के मिजाज देखवे करै छैं, की रं गनगन करै छै, तबें रेल चलावैवाला के मोंन केन्हों होतें-होतै, सोच्है पारै छै।''

''माधो, जों अमरजीत बौंसी, भागलपुरवाला रेल चलावै, तें मजा आवी जाय। की मजाल, कि कोय टीटी सी, बी टी सी हमरा सिनी सें टिकिट माँगी लौ। मजे आवी जाय। रोज फिलिम देखी कें कचकचिया लौटियै।''

''कचकचिया नै, दौलतपुर बोलें, बेवकूफ।'' माधो झिड़कतें कहलकै, ''सुनै छियै, दहेजों में ढेरे टाका मिलैवाला छेलै, बड़काहै मामा ठीक करलें छेलै। सब बात पक्कियो होय गेलों छेलै।''

चेथरीं कोय बातों पर कटियो टा ध्यान देले बिना कहलें छेलै, ''तें सत्ती बोदी हेना कैन्हें बगदी गेलै?''

''अरे, कै दाफी तोरा बतलैवौ कि लछमी दां भरलों सभा में हाथ उठाय कें कहलें छेलै, कि हुनी आपनों कोय बेटा के दहेज नै लेतै।''

''अरे, तें ई बात गोस्साय कें बोलै के की जरूरत छै, आरो कोंन ई बात जेनरल कॉलेज के छेकै, जेकरा याद रखला सें सरकारी नौकरी मिलिये जैतै।''

चेथरी के उखड़लों मिजाज देखी कें मंगली नरमैतें हुएँ कहलकै, ''से तें नहिये छै, मुदा गाँव, टोला में पहिलों दाफी हेनों प्रतिज्ञा कोय करलकै, तें ओकरा भुलैलों केना जावें पारें।

''से तें नहिये, मतर हमरा लागै छै, है जे कुछ होलों छै, आरो

ओकरों जे नतीजा निकलतै, ओकरूहौ लोगें याद राखतै।'' अजनसियां आपनों मूड़ी तनी-तनी दायां-बायां हिलैतें हुएँ कहलें छेलै।

''आबें हमरा सिनी कें यै बातों सें की लेना-देना छै, आरो जों कुछ मतलबो छै, तें सत्ती बोदी सें, हिनकों लाल दा आकि हरा दा सें की लेना-देना। देखलैं, हमरा सिनी कें मोंन देखिये कें बोदी ऐंगना में मछली परोसै सें मनाहियो नै करलकै, की रं टूटी पड़लों छेलै खवैय्या—बीस सेर के एक रोहू आरो खवैयो बीसे। परोसै भर के देर छेलै आरो जेना मछली-अंडा कें पंचोल कीड़ा चट करी जाय, होन्है झोर सहित कुटिया—सब मिली कें चट करी ऐलों छेलियै। अरे, बाप रे बाप, पहिलों दाफी तोरों घटोत्कच नाँखी गलफरों खुलतें-बंद होतें देखलें छेलियौ।'' कही कें सिद्धि हँसलै, तें मंगलियां लगले कहलकै, ''आरो तोरों मुँह तें सीपी रं सिटलों छेल्हौ, की? आँख बंद करी मुँहों में हेनों डाललें जाय रहलों छेल्है, जेना हवनकुंड में आपनों गणेशी, मंतर पढ़ी-पढ़ी हविश डालै छै। मछली आरो सिद्धी; जेना विलाय आगूं सुंघठी।''

अबकी सिद्धी कुछु नै बोलें पारलें छेलै, बस एतन्है टा हौले-हौले बोललों छेलै, ''घोंर जो। मौगी, खटिया बिछाय कें बैठली होतौ'' आरो नद्दी दिस सिधयैले कि मंगलियां ओकरा रोकतें कहलकै, ''एतना तें बतैतें जो, सिद्धि कि है मछलीवाला सहयोग केकरों दिसों सें छेलै?''

''अरे, केकरों दिसों होतै, वैद्य दा छोड़ी कें आरो के है इंतजाम करलें होतै। तोहें की समझै छै, विरिज नारायण बाबां करलें होतै। अरे, ठनका सें खाली जंगल-खलिहान जरें पारें, ओकरा सें चूल्हों नै जरै छै।'' ओकरों उत्तर सुनी कें माधो तक कें हंसी आवी गेलों छेलै।

(२१)

ई बाँही के कोय फुसरी नै छेलै, कि अंगा सें छिपाय जैतियै, ई तें

कपारों परकों टेटनों छेलै, जे पचकै के बदला दिन-दिन बढ़ले जाय रहलों छेलै।

महीना भरी सत्ती गाँमे में रहलों छेलै, केकरो ऐंगन-दुआर ऐवों-जैवों लगभग छुटिये गेलों छेलै। घरे के काम में मोंन लगैलें राखै। नै हुऐ तें बारी सें मिट्टी कोड़ी लै आनै आरो ओकरामें भूसों आरनी मिलाय के देर तांय पिटना सें पिटतें रहै, नहाय में भले जत्तें देर होय जाय। फेनु जगह-जगह सें फाटलों भीत भरिये कें नहाय लें जाय। पुरानों घोंर; कै साल सें तें हिन्नें-हुन्नें सें ढनमनैलों-भसकलों दीवारी पर माँटी के लेपो नै चढ़ैलों गेलों छेलै।

सत्ती सोचलें छेलै, फूलमती के बीहा सें पहिलें वैं जरूरे भीत आरनी भरवाय लेतै, होलै तें माँटी सें ढोरवैय्यो लेतै, मतर आरो सब सरंजामों में ऊ हेने उलझलों रहलै कि एकरों दिस ध्यानो नै गेलै। आबें जबें आरो कोय काम नै दिखावै छै, तें पाँच-छों रोजों के बाद दू-चार बाल्टी माँटी कोड़ी लै आनै छै; एक दिन गूंथै छै आरो दोसरों दिन दीवार के दरार, छेद कें मूंदना शुरू करी दै छै। असल तें बड़के कोठली के चिंता छेलै, जेकरों चारो कोना के चारो दीवार, जे साल, दू साल पहलें एकदम सटलों-सटलों रहै, ऊ वर्षा-पानी के कारण ऊपर-ऊपर सें अलग-अलग दिखावें लागलों छेलै। पहिले तें ओकर्है भरना जरूरी छेलै, से ओकरों दिन आसानी सें कटी जाय।

अकेली होतियै, तें आपनों लें खानाओ नै बनैतियै, मतर घरों में दू-दू बेटा छेलै, भला चूल्हा-निवारण केना होतियै।

सोमवारी, मंगलवारी के उपास तें ओकरों जगजाहिर छेलै, मतर है कोय्यो नै जानै छेलै, कभियो-कभियो तीन-तीन दिन तांय वै मुँहों में कुछ नै दै, खाली थोड़ों-सा गुड़ आरो लोटा भर पानी। तभियो चेहरा के चमक होन्हे, कि कोय्यो कुछ पकड़ै नै पारै।

तखनी उपास में रही जाय के कारण छेलै, आबें तें बड़ों बेटा एत्तें पढ़ी-लिखी लेलें छेलै कि ऊच्चों इस्कूलो के लड़को कें पढ़ावें पारें।

भोरे आरो साँझ दू बेरा सत्ती के ऐंगन में छोटों रं इस्कूले लागै छै। दू-तीन टोलों के चार-पाँच घरों के बुतरु आवी जाय छै, आरो मूड़ी हिलाय-हिलाय कें घंटा भरी अक्षर घोकतें रहै छै। विहनकी वक्ती अक्षर-ज्ञान करैलों जाय छै,

क करमैता,
ख खरखांही,
ग गलसेदी
घ घटाही,
ङ पुकारी,
च चरवाहा,
छ छटपहिया,
ज जतकुट्टा,
झ झपलेलों,
ञ इनरासन आसन-वासन

सें लैकें, आगू के अक्षर-ज्ञान चलत्है रहै,

य यजमानी, र रसगुल्ला,
ल सें लकड़ी, व वसूल्ला
स सरकंडा, ह हरमुनियम
चार नचनियां दू-दू कनियां,
एक बराती गाव पराती।

आरो सँझकी वक्ती एक सुर में मूड़ी हिलाय-हिलाय कें बुतरू पहाड़ा रटै—

एक एका कोठी रोजन्नी,
दू दूतिया चाँद,
तीन तिकौनी,
चार बेल
पांच पंडा,
छों सें रस,
सात समुन्दर,
आठ कुनीला,
नों विग्रह,
दस मासे,
ग्यारह चनरमा,
बारह आदि

तेरह भुवन,
चौदह हजार,
पन्द्रह तिरीश,
सोलह सिंगार,
सत्रह संत,
अठारह पुरैत,
उन्नीस काया,
बीस बोर,
जाहीं मन होलों वाहीं घोंर।

घरों के ई माहौल देखी कें सत्ती कें आरो कुछ दिस ध्याने नै जाय, जाय तें बस कुछुवे देर लेली। यहू बात छेलै कि भोरे-साँझ के ई पढ़ाय सें ओतना टा टोला-पड़ोस सें चौर-दाल, तरकारी आरनी आविये जाय कि ओकरा खाली आँचे भर के चिंता करै लें लागै। ऐंगनों तें साँझकिये सें झकझक करें लागै, जे आवै—लालटेन लइये कें आवै।

मतर आयकल सत्ती के जे चिंता बेसी बढ़ी गेलों छै, ऊ अमरजीत के बीहा के बात लैकें। ओकरे बड़की बहिन के छोटका बेटा हीरू ऐलों छेलै। कही गेलों छै, "मौसी, ई घोंर छुटी गेलौ, तें यही बूझिहै, कि हेनों घोंर आरो हेनों लड़की फेनु दोसरों नै मिलतौ। की सोचै छैं, ऊ परिवार ई घरों में बेटी देवो करतियै की; ऊ तें बिना दहेज के बीहा के बात छै, यै लेली मोंन बनैलें छौ। होना कें दहेजो दैकें होनों लड़की मिली जाव, तें भागे बूझें, मौसी। जल्दिये बतैय्यैं, जे सोचवे। लड़कीवाला रुकै लें तैयार नै छै, तीन जगह लड़का देखलें छै, सब कमियां, दू तें रेलवे में कामे करी रहलों छै, अमरजीत कें तें लागतौ—दिल्ली दूरे बूझों। कै किसिम के जाँच होना बाकिये छौ; तब्हैं नी। आरो हों, मौसी, हम्में रुकवौ नै। जानवे करै छैं, सरकारी नौकरी में एक्को दिन के छुट्टी मुश्किल।"

सत्ती कें आपनों फैसला यही रविवार कें सुनाना छै, बस आरो दू-तीन दिन बचलों छै। एक दाफी तें ओकरों मोंन करलै कि वैं, भैसूर सें ई संबंध में सलाह-मशविरा करी लै।

एक दाफी तें मिलै लें घरों सें ऊ निकलवो करलै, मतुर डेढ़िया तांय ऐतें-ऐतें रुकी गेलों छेलै। मने-मन सोचलें छेलै, "जों इखनी हुनका सें

ई मामला में सलाह-मशविरा करै छियै, तें सवा बीघा जमीन के फैसला वक्ती हमरहै बात उठावै में झिझक होतै, आरो जेठ तें कभियो भी नै चाहतै कि ओकरों बारे में कोय बातो उठावें, जबकि ऊ जमीनो कें लैकें फैसला रुकें केना पारें ! एतना भर सोचना छेलै कि तखनिये वैं डेढ़िया पर राखलों आपनों गोड़ ऐंगनों दिस खीची लेलकै, ई बुदबुदैतें, ''बीहा-शादी कें लैकें जे भी फैसला करना छै, आखिर हमरै करना छै। लाल दा तें ऐतै नै, जानले छै आरो फेनु हुनका बोलावै के साहसो के करतै, केकरा नै मालूम छै कि हुनी अमर के बीहा कहीं आरो पक्की करी रहलों छेलै। लड़कीवाला अच्छा दहेजो दैलें उतावला छेलै—उतावला छेलै, तें लड़की जरूरे दब होतै, नै तें दहेजो खूब दै आरो खूबसूरत लड़कियो, हेनों कहीं होलों छै की!''

ऐंगन लौटी कें वैनें ऐंगनाहै में पढ़ैतें अमर कें हेना देखलें छेलै जेना कभियो देखले नै रहें—दाढ़ी-मूँछ सब निकली ऐलों छै, एकदम घन्नों-घन्नों तें नै, मतुर आबें बीहा में देर करना ठीक नै, हीरू सें हों कही दै छियै, देखा सुनी के ही नै, लिखा-पढ़ी के भी। कांही कोय भाँगटों नै लागी जाय, यै लेली देखा-सुनी के दिन ही लिखा-पढ़ी के बातो होय जैतै। की होतै, लाल दा जों ऊ घड़ी में नहिंये होतै। बीहा में हुनका आवै लें विवश करी देवै। की होतै, घंटा भरी बहुत कुछ बोलतै। लाल दा छेकै, बाप नाँखी करलें-धरलें छै। आरो फेनु हुनी नै जानै छै कि जों हम्में हेनों करी रहलों छियै, तें आपनों लेली नै, अमर के बाबू के मनों के शांति लेली। हुनी जहाँ भी होतै, आपनों संकल्प पूरा होतें देखी कें कत्तें विभोर होय जैतै।

एतना सोचिये कें सत्ती चित्त सें प्रसन्न होय उठलै, आरो बड़का कोठरी में बिछैलों खटिया पर आवी कें बैठी रहलै। ऐंगन में बच्चा सिनी नया खोड़ा घोकना शुरू करी देलें छेलै,

एक हुट्ठे साढ़े तीन
दू हुट्ठे सात
तीन हुट्ठे साढ़े दस
चार हुट्टे चौदह
पाँच हुट्ठे साढ़े सत्रह
छः हुट्ठे इक्कीस
सात हुट्ठे साढ़े चौबीस

आठ हुट्ठे अट्ठाइस
नौ हुट्ठे साढ़े एकतीस
दस हुट्ठे पैंतीस

(२२)

''तोहें समझै नै छौ, हमरों गेला सें बीहा के रौनके उजड़ें लागतै। भूपेन के माय, तोहें बूझै छौ कैन्हें नी, कि अमर के बीहा पक्की करै में जे-जे तोरों भतीजा सिनी छेल्हौ, ऊ तें बीहा-घोंर की, बारातियो में शामिल नै होथौं। हम्में कुछ नहियो बोलवै, तहियो लोगों कें यहा लागतै कि बहुत कुछ बोली रहलों छियै। तोहें जैय्ये रहलों छों, जा आरो जरूरे जा। स्वाति कें लागतै, नै दादा, तें बोदी तें ऐलै, ओकरों मोंन कें बड्डी संतोष मिलतै। अमरजीतो कें लागतै, बड़की मामी आवी गेलै, तें आबें कुछ भेद-ऊद नै रहलै। स्वाति के मजबूरी हम्मू समझै छियै, आरो हर स्त्री कें, आपनों पति के देलों वचन कें निभावै में मदद करना चाही। आन लोगें जे बूझौ, हमरा कुछ दुख नै छै। हम्में तें स्वातिये के पारिवारिक शांति लें ऊ सब करी रहलों छेलियै। जावें दौ, वैं जे भी करी रहलों छै, तें आपनों हित सोचिये कें।'' पंचामृत बाबूं बड़ी शांति के साथ अपनी कनियैनी सें कहलें छेलै।

आरो हुनी बीहा में ठिक्के नै गेलों छेलै। सौंसे गाँव में ई बातों कें लै कें कुकुआरों मची गेलों छेलै कि सत्ती बोदी के अपनी बड़की बोदी तें ऐलों छै, मतर बड़का मास्टर मामा नै ऐलै। लोगों साथें आशु बाबुओ यहा अनुमान लगैलें छेलै कि इखनी नै, तें बराती जाय के दुओ घंटा पहलै पंचामृत बाबू जरूरे पहुंची जैतै, मतर जबें गाँव के सड़क सें गुजरैवाली अखिरलको मोटर गाड़ी भोंपू बजैतें गुजरी गेलों छेलै, तें अनुमान आरो कानाफूसी आरो तेज होय गेलों छेलै।

''हुएँ सकै छै, अमर के बड़का मामा सीधे भागलपुरे में बाराती में मिली जाय। होलों रहें कि हुनका छुट्टी नै मिललों रहें।''

''हों, यहू हुऍ पारें। हुवै के तें ढेरे बात हुऍ पारें। जानवे करै छैं, हुनी फूल के ससुराल गेला के बाद एक दिन यहाँ रुकी गेलों छेलै, आरो कथी लें—आबें ई बात गाँव सें छुपलों नै छै। आखिर सोच्हैं, वैद्य काकां, मास्टर साहब के एत्तें बड़ाय कैन्हें करी रहलों छेलै।''

हेनों चौबाय तब तांय उठतै रहतै, जब तांय ऐंगना में अमरजीत के बारात विदाय के गीत नै गूंजें लागलै,

घर सें बाहर भेलै सोहाना रे बने
बने, सिर केरों मोरिया, अजब रे, बने
अम्मां परेखै तोरों मुख रे, बने
बने, राम उड़हुल दुनू ठोर हे बने
घर सें बाहर भेलै सोहाना रे बने
बने, अंगहे के जोड़वा सोहाना रे बने

गाँव के बच्चा-बुतरु आरो छौड़ी सिनी सब्भे दुआरी दिस दौड़ी पड़लै। मोर पिन्हलें, धोती में दुल्हा बनलों अमरजीत सच्चे में कत्तें सुन्दर लागी रहलों छेलै।

गीत पर गीत आरो जेन्है ऐभाती सिनी के बीचों सें शबरी काकी के गीत उठलै,

बाबा साजै बरियात रे बने
बने, मामा लुटावै बंगाला पान रे बने

कि सत्ती के आँख हठासिये डबडबाय उठलै। ओकरा ख्याल ऐलै, आय जेठे बेटा के बीहा में नै तें ओकरों बाबुए छै, नै तें ओकरों बड़का मामा, दोनों में से कोय नै। मतुर वैं लोर कें आँखी के ऊपर आवें नै देलें छेलै। अँचरा सें आँखी के कोर पोछी कें सवासिन सिनी के पीछू होय गेलों छेलै।

गाड़ी के भीतर हौ छवारिक सिनी आरो एकाध अधवैसू बैठलों छेलै, जे साफ-सुथरा धोती, कमीज, फुलपैंटों में छेलै, बाकी बचलों तें गाड़ी के छत्ते पर सट्टी-सुट्टी कें बैठी रहलों छेलै, जेकरों धराने से पता लागी रहलों छेलै कि ओकरा बीहा सें एतन्है भर मतलब रहें कि भोजों में जमी कें ठाँसी लेना छै। हेनों लोगों में पनरों सें बीस बरस के छवारिक बेसी शामिल छेलै, जेकरों या तें कन्धा पर आकि माथा पर एक गमछी तें जरूरे छेलै आरो

लगभग सब्भे टा हाफपैंटे में, जे गाड़ी के कुछ दूर गेला पर हेने लागी रहलों छेलै; जेना मोटर गाड़ी के ऊपर कटहल सें भरलों, गोछियैलों बोरिया सिनी धरलों रहें।

गाड़ी भोपूं बजैतें आँखी सें ओझल होय गेलों छेलै।

सत्ती तब तांय डेढ़िया पर मुरुत नाँखी ठाढ़ी रहलों छेलै, जब तांय आरो सवासिन साथें बारात कें अरियातैवालाहौ घुरी नै ऐलों छेलै। जाय वक्ती तें पचीसो ऐभातिन सें कम नै होतै, मतुर घर लौटतें-लौटतें बस तीने टा बची रहलों छेलै, एक तें सत्ती के बड़की बोदी, ओकरी जेठानी, आरो हबीब के बाबू मसूद्दी चाचा, जे बरात साथें गाड़ी तक तें गेलों छेलै, पर गाड़ी खुलत्हैं, दुआर तांय आवी कें घोंर लौटी गेलों छेलै। बाकी तें रास्ताहै से आपनों-आपनों घोंर दिस ससरी गेलों छेलै।

शायत अनुकंपा कुछ पूछवे करतियै कि सकीचन के माय पूछी बैठलकै, "मर, अमर के बड़का बाबू कें बराती में नै देखलियै। हुनी पहिले कोय आरो गाड़ी सें निकली गेलों छेलै की?"

तें, सत्ती ओकरो दिस बिन देखलें कहलें छेलै, "हुनकों तबीअत खराब छै नी, यै लेली नै ऐलात। एक बीहा हेनो, सकीचन के माय, जे बिना बूढ़ों-पुरानों के बिनाहै। फेनु पुरैत तें साथें गेले छै नी, आरो फेनु कोय साथ छै कि नै छै, हमरों भगवान तें साथ होवे करतै।" कहतें-कहतें ओकरों आँख एकदम छलछलाय उठलै। वैं आँखी कें संभारें नै पारलकै, जे अभी तांय लोरों कें संभारी राखलें छेलै।

अनुकंपा ओकरा लैकें ऐंगनों सें कोठरी आवी गेलै। साँझ उतरी ऐलों छेलै। गाँव-टोला में शांति फैलें लागलों छेलै, जों गूंजी रहलों छेलै कांही कुछ, तें शबरी के कंठ, जे अभियो तांय मड़वा के नगीच बैठी कें अकेले गीत गावी रहलों छेलै,

संझा बोलथीं माई हे
किनका घर जैवे हे
के लेतै संझा मनाई हे
दुलरैइते बाबू घर हम्में हो जैवै
दुलरैती देवी लेतै संझा मनाय हे

जबें सत्तीं रतजग्गी लें कोय जनानी कें रोकवे नै करलें छेलै, तें

कोय डोमकच खेलै वास्तें रुकवे कथी लें करतियै। होन्हौ कें सबकें मालूम छेलै, ई घरों में कोय मरदाना रहौ कि नै रहौ, असकलिये कोय जनानिये कैन्हें नी रहें, कोय डोंर-भय के बाते नै छै। होनौ कें ई बस्ती में कोय चोरी-डकैती के बातो दूरे छै। हिन्नें सें कोय डकैत निकलवो करै छै, तें ई घरों सें दस बाँस हटिये कें। हेने एक समय में ई घरों के मालिक के रुतवा रहलों छै। आबें खगी गेलै, तें की होय छै।

तें एकरा सें की? डोमकच नै होतै—सकीचन-माय कें रहलों नै गेलै। ऊ मने-मन बोललै, "कोय चोरी-चपाटी के भय रहें कि नै रहें आरो कोय साथ दौ कि नै दौ। जबें ऊ यहाँ छै, तें डोमकचो होतै, आरो वैं फाँड़ों कस्सी कें ऐंगना में पूरब दिस मुंह करी हाथ चमकाय-चमकाय गावें लागलै,

अनारवती डुमरी, तोरों डुमरा कहाँ गेलों गे
केना बेचै छैं सुपती मौअनियां, केना बेचै छै डलिया

फेनु जल्दिये सें समीचन-माय पूरब दिस आवी कें पछिये मूं करी उत्तर में बोलै लागलें छेलै,

अन्नी-दुअन्नी सुपती मौउनिया
टाका बेचै छी डलिया
डोम्मां गेलै पर देस
के बटिया, हम्में ऐलैं
हटिया।

सत्ती कें अनुकंपा हाथ पकड़ी कें ऐंगन लै आनलें छेलै, तें देखलकै सकीचन-माय माथा पर एक डलिया लेलें गोड़ हुन्ने फेकी-फेकी गैवो करी रहलों छेलै,

जेठो नै ऐवौ वैशाखों नै ऐवौ
ऐवौ कातिक महीना

दोनों ननद-बोदी, वहीं ठां दू मचिया खींची कें बैठी रहलै। सकीचन माय कें तें जेना मोरों के पंख लागी गेलौ रहें।

(२३)

के जानै छेलै समय एत्तें जल्दी-जल्दी बीतें लागतै। सत्ती के तें यहू नसीब नै होलों छेलै कि वैं हाथोंहाँड़ी देखें सकें आरो अमर नौकरी पर जाय लें धड़पड़-धड़पड़।

असल में होलों छेलै ई कि नौकरी के कागज तें आवी गेलों छेलै, दस रोज पहिले, मतर पोस्टमास्टर साहब आपनों घोंर चल्लों गेलों छेलै। आबें शहर के तें डाकघर छेकै नै कि एक डाकिया बीमार रहें, तें दोसरों डाकिया तैयार मिलै छै। ई तें गाँव के डाकघर छेलै। बस लै दैकें एक्के आदमी, ओकरहै चिट्ठी छाँटना छेलै आरो फेनु बाँटनाहौ छेलै। पोस्टमास्टर रहवो करै, तें चिट्ठी होन्हौ कें तीन-चार दिन बादे बँटावै, यहाँ तें पोस्टमास्टरे घोंर गेलों छेलै, जब तांय ऐतियै नै, तें चिट्ठी केना मिलतियै।

डाकघर खुल्ला होतियै, तें केकरौ नै केकरौ वहाँ भेजियो देतियै—यहां तें डाकघरे दस रोजों से बंद छेलै। जबें नौकरीवाला सरकारी पत्र मिलतै, तें ज्वायन करै वास्तें तीन दिन बचलों छेलै आरो जाना छेलै, राँची। घोंर भरी के हाथ-गोड़ फूलें लागलों छेलै, आबें एत्तें जल्दी केना सबकुछ सड़ियैलों जैतै!

अभी जे कनियैन के हाथों के मेंहदियो नै छुटलों छेलै, ओकरों हाथ-गोड़ों में पंख लागी गेलों छेलै। होना कें घरों में सड़ियाय वास्तें चीजे की छेलै, तभियो जतन्है टा छेलै। सड़ियाना तें छेवे करलै, फेनु लुरगरी बहू होय के परिचयो तें देनाहै छेलै। रास्ता भरी वास्तें खाय-पीयै के समानो बनाना-समेटना छेलै। मतर अमरजीत ई सब बातों सें उदासीन, माय कें मनावै में लागलों होलों छेलै, "देख माय, तोहें असकल्ली यहाँ रहिये कें की करवे? बेकारे बच्चावाला जिद लैकें बैठलों छैं कि डीह छोड़ी कें हम्में परदेस में रहै नै पारहौं। हम्में पूछै छियौ, की राखलों छै, ई डीह आरो ढाबर में? बाबू के नै रहला के बाद कोंन कटियो टा सुख देलें छै, ई घरें। हम्मूं घर सें बाहिरे रहलां आरो तहूँ भाय-भौजाय कन, हमरा सिनी लें मुँहें जोगै में बाहरे-बाहर रहले। घरों के कोंन कोना सलामत छै, कखनी कोंन बरसातों में ढनमनाय जाय, कहनौ मुश्किल।"

अमरजीतें मनों के बात राखी देलें छेलै, मतर सत्तीं कुछ नै बोललों

छेलै। पुतोहू के कोय कपड़ा-लत्ता नै छुटी जाय, से घरों के कोना-कोना, अलगनी आरनी पर घुराय-फिराय कें नजर फेरी रहलों छेलै।

''कुछ बोललैं नै माय !'' अमर नें फेनु आपनों बात राखलकै, तें अबकी ऊ चुप नै रहें पारलै। खटिया पर बैठली-बैठली आपनों दोनों हाथ कें एक साथ पीछू करलकै आरो ओकरे बल्लों पर देह कें सीधा करतें कहलकै, ''तें आबें की चाहै छैं, कि जोंन घरों में तोरों बाबू के छाया भोरे सें साँझ तांय टहलतें रहै छै, ऊ घोंर आरो छाया के साथ छोड़ी, हम्में एक मुट्ठी सुख लें, तोरों साथ परदेसों में बसी जांव। ई जिद् छोड़ी दे, बेटा। आरो जों जान्है लें चाहै छै, तें जानी लें, ई मनों में बस एक्के किंछा छै, कि जोन माँटी पर तोरों बाबू के ठठरी समैलों छौ, वही माँटी में हमरो ई ठठरी समावें। एकरा सें बढ़ीकें आरो सुख की होतै, हमरों लें। तोहें नौकरी पर जाय रहलों छों, पुतोहू कें रोकी नै रहलों छियौं, हों, जों तोरों इच्छा हुऔ, तें बलजीतो कें साथ लै जो। जों तोरों पुण्य-फल सें यहू पढ़ी-लिखी कें कोय रोजगार पकड़ी लै छै, तें बुझवै, तोरों बाबू रों जे मोंन छेलौं, ऊ पुरी गेलै।'' एतना कही ऊ चुप होय गेलै। अमरजीतो आगू कुछ नै कहलकै, यहू लें कि वैं माय के जिद जानै छै; नै तें नै, हों तें हों। फेनु यहू बात छेलै कि सत्ती के आँखी के कोर ई सब कहतें-कहतें डबडबाय उठलों छेलै, शायत वहीं सें वै दोनों आँख मुनी लेलें छेलै, जे अमर सें छुपलों नै रहें पारलों छेलै।

अमरजीत कोठरी सें बाहर निकली ऐलों छेलै, तें देखलकै, घोष बाबू ऐंगना के बाहर हिन्नें-हुन्नें बड़ी तेजी सें घुमी रहलों छेलै। देखलकै, तें ऊ बाहर निकली ऐलै। गोड़ छूवें लागलै, तें घोष बाबूं ओकरों दोनों हाथ पकड़लें कहलकै, ''कल्हे विहाने नी निकलवा, बेटा?''

''हों, बड़का बाबू ! जत्तें जल्दी भागलपुर पहुंची जाँव—कैन्हें कि ट्रेन तें वांही सें मिलतै।''

''से तें छै, बेटा। मय्यो कें साथ लै जाय रहलों छों नी? यहाँ असकल्ली रही, कोय-नै-कोय बातों कें लैकें आरो खिन्न रहतौ। वहाँ नैकी बो साथें रहतै, तें मोंन बहाल रहतै। बलजीतो कें भी साथ लै जाय रहलों छै तें?''

''कल्हे सें माय कें कही रहलों छियै। एकदम सें नै मानी रहलों छै। तोहें तें माय के जिद जानवे करै छौ। हों, बलजीत कें साथ जरूरे लै जैवै,

यहाँ रहिये कें की करतै यैं, बड़ों शहर में रहतै, तें बड़ों पढ़ैयो संभव होय जैतै, आरो कोय-नै-कोय नौकरियो मिलिये जैतै।''

''एकदम ठीक सोचलें छों, बेटा। मतुर हम्में तें कहभौं, अभी रात भर समय छै, माय कें केन्हौ मनावै के कोशिश करों। आबें हमरों की। देखवे करै छों, की रं देह होलों जाय रहलों छै। बलजीत माय यहाँ रहतै, तें मोंन दू घरों के चिंता में बँटलों रहतै। करै पारवै की, ऊ तें आगू के बात छै। जों तोहें माय कें लै जाय छों, तें एक घरों के चिंता सें बचलों रहवै।'' आशु बाबूं बड़ी निरीह आँखों सें अमरजीत कें देखलें छेलै।

''हम्में भोररियां तांय कोशिश करत्हैं रहवै, बड़का बू। जों माय नहिंये मानलकै, तें तोरा बेसी फिकिर करै के जरूरत नै छै। खाली भोरे-साँझ दू दाफी पुछारी करी लियौ। माय कें खाय-पीयै के दिक्कत नै होतै। समांग छेवे करै, सब कुछ करी लेतै। आरो कुछ दुख होतै, तें यही महीना भर। फेनु तें सोचन्है नै छै। वहाँ गेला पर हम्में जेन्हैं व्यवस्थित होय छियै, कोशिश करवै कि माय कें वहीं लै जैय्यै। इखनी नै चाहे छै, तें ओकरों मोंन तोड़ी कें नै जैवै।''

''यहू तोहें ठिक्के कहै छों। अच्छा बेटा, आबें जा—आराम करी ला। दू दिन के जगरना बनी जैथौं। बिहानै नीन नै खुलें, तें जगाय लीयों, बेटा। बुढ़ारी के देह छेकै नी। सुतलों बुझी कें निकली नै जैय्यों।'' घोष बाबूं अमरजीत के माथा पर हाथ राखलें छेलै आरो आपनों दुआरी दिस बढ़ी गेलों छेलै।

हुनको आपनों दुआरी दिस जाना छेलै कि सत्ती घरों सें बाहर निकली ऐलै। असल में वैं अमर कें जेठ सें बात करतें सुनी लेलें छेलै, मतर की बात होय रहलों छेलै, वही जानै के खयाल सें वैं ओकरा कोठरी में बुलाय कें आहिस्ता सें पूछलकै, ''की कही रहलों छेलौ, बड़का बाबू?''

''कहतै की, तोरों शुभ-लाभ के चिंता करी रहलों छेलै, आरो की? तोरों तें मनों में हमेशे उल्टे बात चक्कर काटतें रहै छौ।'' अमरजीत के सुर नहियो बदलला के बादो बदललों होलों छेलै।

ई सुनी कें सत्ती के मोंन होलै कि वैं कही दै—आखिर मरदाने नी छेकैं, बेटा; माय केरों बात की समझवे, बापे के बात सही लागतौ, आरो बेसी से-बेसी कनियैनी के बात—मतर वैं आपनों जुवान कें अमेठी कें राखी देलें

छेलै। ठोर तांय नै पटपटैलै। ऊ क्षण भरी चुप्पे रहलों छेलै, फेनु बाहर निकलतें हुएँ कहलकै, ''हमरों लाभ-शुभ के बारे में सोचै के केकरौ जरूरत नै छै। हुनी सरंगों पर भले रहें, दुख-विथा वक्ती हुनी उतरी कें नीने में सब कुछ समझाय-बुझाय जाय छै। बस आपनों ख्याल राखियों, बेटा। आँखी सें बड्डी दूर रहवा। भागलपुरों में रहै छेला, तें जखनी मोंन छटपटावै, तोरा देखै लें दौड़ी पड़ियौं। आबें तें वहू मुश्किल।'' कहतें-कहतें ओकरों ठोर लटपटाय गेलों छेलै।

''तें ठीक छै, नै जैय्यें। आबें तें निश्चिन्त; आरो तोहें हमरों लें चिंता एकदम नै करियें, हम्में असकल्ले नै होवै, तीन-तीन आदमी होवै। बस एतन्है तोहें करियैं, कि घोंर ढनमनावौ नै।''

(२४)

सत्ती आय कै दिनों सें सोची रहलों छै कि आखिर हौ राति अमर नें है कैन्हें कहलकै—बस एतन्हैं तहूँ करियैं कि घोंर ढनमनावें नै। तखनी तें हम्में यहा सोची लेलें छेलियै कि घरों के दीवारी बारे में बोली रहलों छै। नै, ओकरों कहै के मतलब कुछ आरो छेलै। तें, वहूँ यही बूझै छै कि घोंर में जे कुछ भितरिया अशांति चली रहलों छै, वैमें हमरे हाथ छै।

ई सोचत्हैं ऊ मनेमन बड़बड़ाय उठलै, ''जों यही बात सही छै, तें तहूँ जानी ले, अमर; कुल खानदानों के इज्जत सोचिये कें आय तांय सब कुछ बर्दास्त करी लेलियै, नै तें गोदी के बच्चा सिनी कें पालै-पोसै लें हमरा नैहरा सें लैकें ससुरारी तक के लोगों के मुँह नै पोछै लें लागतियै आरो जों आपने घरों में नौड़ी रं रहलियै, तें केकरों लें? तोरे सिनी लें नी। हुनी गोदी में चार-चार ठो बुतरु दै गेलै, यही लें नी सबके मुंह जोगैलें लागलै, नै तें राँढ़ होला के बादो, दू शाम पेट भरवो कोंन मुश्किल छेलै, बेटा !

''अरे, तोरो सिनी के पालवों कोंन बड़का बात छेलै, जों आपनों जिद् पर अड़ी जैतियै। आय तांय तोरा सिनी सें ऊ बात कें छिपैतें ऐलों

छियौ, जे तोरों बाबूं हमरों सपना में आवी-आवी कें कहते रहलौ। तोरों परबाबा कें एह्हे जमीन महाशय जी के धरम कचहरी सें मिललों छेलै कि मत पूछों। हौ सब के देखभाल करनाहौ मुश्किल। अमर, तोरों बाबू के तें बस एक वहा पढ़ना आरो पढ़ैबों। जमीन दिस कभी ताकवो नै करलकौ।

"आरो जबें तोरों बाबां देह तेजलकौं, तभियो तोरों बाबू के ध्यान ऊ दिस नै गेलौ। के जानै छेलै, हमरों ऊपर हेनों बज्जड़ खसी जैतै, नै तें तखनिये हम्में जमीनों के खाता-खसरा आपनों जिम्मा नै करी लेतियै। आबें तें बस ओतने टा जमीन हम्में जानै छियै, जे तोरों बड़का बाबू हमरा बताय छौं। मतर एतन्हे टा जमीन होतै की? हुनी तें बतावै छै, आबें जमीन के नामों पर बस पछियें वीरान पड़लों सवा बीघा जमीने छै, आरो जे छेलै, ऊ तें फूल के बीहा में बिकिये गेलै।

"ई बात आरो कोय पतियाय लौ, तें पतियाय लौ, हम्में नै पतियावें पारौं। वहौ दिन हुनी सपना में ऐलों छेलै, आँख लगलों नै होतै कि नींद चाँक होय गेलै। लागलै, कोय ऐंगना में खड़ाऊँ पर बुली रहलों छै। देखलियै, तें झूठ नै छेलै। हुड़का पकड़ी कें हुलकलियै, कि आखिर ऐंगना में हिन्नें-हुन्नें के घूमी रहलों छै? यही सोची हम्में डेढ़ियो दिस देखलियै, तें देखलियै कि ऐंगना सें लागलों कोय दुआर आरो दीवार काँही नै छै, एकदम चारो दिस उदामों। भकचकी मिटाय लेली हम्में आपनों कोठरी देखलें छेलियै, तें कोठरियो कहाँ छेलै—नै दीवार, नै धरान, नै छप्पर। कहाँ सें हमरा में हौ हियाव आवी गेलों छेलै कि हम्में हौले सें ऐंगना आवी गेलों छेलियै, तें देखलियै, हुनी हमरा ईशारा करी नद्दी दिस बढ़ें लागलों छेलै। हम्मू रुकलों नै छेलियै, हमरा झटकतें ऐतें देखी कें हुनी आपनों गोड़ रोकी लेलें छेलै; जेना मंत्र के प्रभाव होय गेलों रहें, हमरों गोड़ जहाँ के तहाँ रुकी गेलों छेलै। ऊ दिन पहिलों दाफी हम्में हुनका एकदम निरयासी कें देखलें छेलियै—होने देह, काँही कोय अन्तर छै, अन्तर छेलै, तें बस यही कि एक्के धोती में हुनकों सौंसे बदन लिपटलों होलों छेलै। छाती-बाँही तें खुल्ले छेलै, हौं, कान्हा सें धोती के छोर जरूरे छाती तक लटकी रहलों छेलै.....।

"हम्में कुछ पुछतियै कि तखनिये हुनकों दायां हाथ उठलों छेलै आरो वही हाथों के तर्जनी सें हुनीं पूबारी बंसबिट्टी सें लैकें उतराही बँसबिट्टी तांय कुछ बताय के कोशिश करलें छेलै। अभी घूमी कें हम्में

पूवारी के बँसविट्टी दिस देखवे करतियै कि देखै छियै, हुनी वैठां नै छै। एक क्षण लेली हमरों देह-हाथ सुन्न हेनों होय गेलों छेलै। देखलियै चारो दिस अन्हारे-अन्हार, काँही कोय हमरा देखी नै लें, तें धतपतैलों लौटी पड़लियै। घोंर तें होने छै, कन्हौ सें कुछ उदामों नै। जों कुछ छेलै, तें बस यही कि दुआर एकदम खुल्ला छेलै, जेना कोय दोनों किवाड़ खोली कें बाहर निकललों रहें।

''तें, की हुनी हौ दिन यहा बताय लें ऐलों छेलै, कि हमरा सिनी के जमीन वहाँ सें लैकें वहाँ तांय पड़ै छै? जों हेनों, तें की होय गेलै, ऊ जमीन? यही नी कि हिनकों देह छोड़ला के बाद दादां थोड़ों-थोड़ों करी कें ऊ सब बेचतें गेलै कि केकरो भनक तांय नै लागें। एक्के दाफी बेचतियै, तें कुकवारों होवे करतियै। बात हमरों कानों तांय पहुँचतियै, यही लेली सब काम टुकनी-पाँखों के आवाज रं निपटैलों गेलों होतै।

''आबें घरों के आगू के जमीन केना बेचतियै, तें हमरा दीदी सें कहवाय देलकै कि घरों के दीवारी सें सटलों जे जमीन छै, हौ अमर के बाबूं आपनों कमाय सें किनलें छेलै, होना कें दियोरें किनलें तें छेल्हौं दादाहै के नामों पर, मतुर दादा के कहना छौं—ई जमीनों पर बोमाँए के हक बनै छै, से लै के कुछ चाहो नै छें।

''हम्मू जानै छियै कि दादा कें चाह कैन्हें नी छै, यही लें नी, कि खाता-खसरा आरो जमीनों के बारे में हम्में कोय खोज-खबर नै लौं। हौ तें नहिये लेवै, कैन्हेंकि नै तें ऊ सबके बारे में हम्में जानै छियै, आरो नै खाताहै-खसरा मिलै छै, मिलियो जाय छै, तें की पढ़ें पारवै, फेनु के पढ़ी कें बतैतै? कैथी जानवे के करै छै—ई गाँव में, एक दादाहै छोड़ी कें? जों जानवो करतें होतियै, तें कोय बतैवो करतियै की? सौंसे गाँव के हुनी वैद्य छथिन, सबकें हिनकों दुआरी पर आनाहै छै, के बैर लैकें जिनगी रोगों के बीच गुजारै लें चाहतै? वहूमें एकठो राँढ़ के न्याय मिलें, यही वास्तें ! यैमें केकरौ कोय फायदा होतियै, तें बातो अलग छेलै।

''आबें देखौ नी, जोन दिनों सें हम्में सवा विघिया जमीनों के बात उठैलें छियै, की रं, दीदीं हिन्नें हुलकवौ छोड़ी देलें छै। विनमा माय सें खाली केन्हौ कें कहलवाय देलकै कि अमर के बड़काबू के छाती में कुछ दरद रहै छै, से घरों सें बाहर निकलौ नै पारै छियै, बोमाँओ के ऐंगन कै दिनों सें नै

जावें पारलें छियै।

''आबें दीदी नै आवें पारी रहलों छै, तें बात बीमारिये के खाली नै हुएँ पारें, बात तें कुछ आरो होतै। दादा तें आपने वैद्य छेकात, छोटों-मोटों रोग तें हुनी देहों के नसे दबाय कें दूर करी लै छोंत। तबें हमरा तांय घुमाय-फिराय कें खबर पहुंचवाय के की अरथ?

''सब झूठ हुएँ पारें मतुर अमर के बाबू हमरा सें झूठ नै बोलें पारें। बहुत कुछ देखिये-सुनी कें हुनी हौ रात, हमरा सब कुछ बताय लें आवी गेलों छेलै। लाल दा कें है सब की मालूम। एक दाफी बताय के कोशिशो करलियै, तें उल्टे हमरा समझाय देलकै—''तोहें आपनों देवता हेनों भैसुरों पर शंका करै छैं, कुल आरो कपड़ा जोगलै सें जोगावै छै—आबें तें खैर लालदा सें कुछ कहै के रास्ताहै खतम होय गेलों छै। जे कुछ करना छै, ऊ हमरै। अमर के बाबू देहों सें नै छोंत, तें की, मनों सें तें छै। जों आय ऊ जमीन कें छोड़ी दै छियै, तें कल ई घरो पर दादा कब्जा जमाय लेतै, खाताहौ-खसरा के बारे में अमर कें पता नै लागें पारतै। अमर कें अकीले की छै ! उल्टे बड़काए बू के पच्छों में चल्लों जाय छै, कहै छै—हमरै सें भूल होय रहलों छै। घर में अशांति के जोंड़ हम्मिये छेकियै। सपनाहौ कांही सच होय छै, सपना तें मनों के रोग छेकै।

''आबें छेकै तें छेकै, आरो अशांति के जोंड़ छेकियै, तें छेकियै। कोंन हमरों शांत रहला से ऊ आवैवाला समय शांते होय जैतै। शांति तें रहतै, जबें हम्में जीत्ते जी अशांत रहियै। कुछुवो होय जाय, ऊ सवा बीघा जमीन पर हम्में आपनों हक नै छोड़ें पारौं। पंच बैठाय लें पड़ें, तें वहू बैठतै। कुल आरो कपड़ा खाली हमरै जोगै वास्तें नै छेकै। होन्हौ कें कोन मारे नैहरा आरो ससुरार सें अच्छा संबंध रही गेलों छै। सब केला-पत्ता के कपड़ा रं, कखनियो चिरावें पारें।

''आय नी दादा के तबीअत खराब छै, महीना भरी के बादे सही, हुनका सें एक दाफी जरूरे बात करवै। आबें कहै के जेकरा जे कहना छै, कहौ। जों कुछु नै, तें एक उपाय छेवे करै नी। झिटकिया बचले छै, हुनी की नै करलें छेलै, झिटकिया लें, एकरों घरे नै बसवैलें छेलै, घरो बनवाय देलें छेलै। झिटकिया के तें आवाजो नै दै छियै कि हाजिर आरो जबें हेनों समय में कुछ करै लें कहवै, तें केना नै करतै, जानो दैकें करतै।

''बस नद्दी के एक जोर सवा बिघिया जमीन दिस बढ़वाय देना छै, जोरिये के पानी सें आधों जमीन पटवाय देवै, जे कुछ उपजौ कि नै उपजौ, खेतों पर हक तें बनलों रहतै।''

''अहे बोदी, घोंर अन्हार बनाय कें कैन्हें राखलों छै'' सकीचन-माय एंगना में गोड़ राखथैं कहलें छेलै, ''अगे माय, संझवाती के बेरो तें होय चल्लों छै, लालटेन कैन्हें नी जरैलों छों, बोदी? किरासन तेल छौ तें? तबीअत ठीक छौं, तें? रुकी जा हम्मी जराय दै छियौं।''

सत्तियो के ध्यान ऐंगना दिस गेलै, तें ऊ धड़फड़ाय कें उठलों छेलै आरो कपड़ा बदलै लें एक कोना पकड़ी लेलें छेलै, तब तांय लालटेन के रोशनी देहरी सें टघरी कें ऐंगन दिस बढ़ें लागलों छेलै।

(२५)

दस दिन सें बेसिये होय रहलों होतै। आशु बाबू के दुआरी पर पहिलकों नाँखी आवै जावैवाला के कमी आवी गेलों छेलै। जों कोय ऐवों करै, तें कुछ देर बैठी कें लौटी जाय।

असल में आशु बाबू कें कुछ कहना रहै छै, तें आबें लेटले-लेटले इशारा सें कही दै छै, नै तें बस ओघरैले-पटैलों रहै छै।

सत्तियो ई बातों कें गमी रहलों छेलै। दिनों में दू-एक दाफी तें घरों सें बाहर निकलवे करै छेलै, आरो लौटै वक्ती एक दाफी कोनराय कें ऊ बरन्डा दिस जरूरे देखी लै छै, जैठां आशु बाबू के बिछावन लगाय देलों गेलों छेलै।

है नै कि बरन्डा पर हुनकों बिछावन नया-नया लगैलों गेलों छेलै, बीस बरसों सें हुनकों बिछावन यहीं पर लगै छै, एक चटाय पर मोटों रं सतरंजी आरो वही पर एक चद्दर। पहिलें ई बिछावन भोर होत्है मोड़ी कें राखी देलों जाय छेलै, मतर जहिया सें हिनको मोंन दब होलों छै, बिछावन नै उठै छै। खाली दू-एक दिन के बाद चद्दर बदली देलों जाय छै।

हौ दिन नै तें सकीचन-माय आरो नै शबरिये माय गाँव में छेलै, शायत दोनो केकरो नेतों पूरै लें आन गाँव गेलों छेलै—यहीलें सत्ती आपनों घरों में अकेले छेलै। हेनों बात नै छेलै कि ओकरा अकेला में कोय डोंर-भय लागै छेलै। असकरी तें ऊ सालों तांय रहलों छै, वहू वक्ती, जखनी नद्दी किनारा में केकरों लहाश जलतें रहै, आरो एक्के साथ कत्तें नी कुत्ता-सियार चिकरें-कानें लागै। तखनी एतना जरूरे हुऐ कि जेठ रात भर झुट्ठे के खाँसी सें बतैतें रहै कि डरै के कोय बात नै छै, हम्में जगलों होलों छियै। मतर आय ऊ भीतरों में रही-रही कें दहली उठै छै, जखनी जेठों के ऐंगना दिस सें कोय बिल्ली रों कानै के आवाज आवै छै। जखनी भिरगु मिसिर के यहाँ सें संझकी ऊ लौटी रहलों छेलै, तखनियो तें वैं भोकसी, करकी बिल्ली कें छपरी पर बैठली कानतें देखलें छेलै।

भगाय के ख्याल सें वैं हट-हट करलें छेलै आरो बिल्ली कें आपनों दिस देखत्हैं झुकी कें झिकटी उठाय के ढोंगो करलें छेलै कि बिल्ली ऊ सब देखत्हैं भागी जाय। तखनी ऊ भागी तें गेलों छेलै, मतर कुछुवे देरी के बाद फेनु घुरियो ऐलों छेलै।

बिल्ली कें भगाय के कोशिश में जेठानी के आवाज रही-रही कें गूंजी उठै छेलै।

"नै, दीदी कें हेनों हालातों में असकली छोड़ना ठीक नै, वही ऐंगना में रहना ठीक होतै। जबें दादा के तबीअत खराब छै, आरो घरों में कोय मरदानाहौ नै छै, एक बेटा टुनुआ, वहू गोड्डा में। सेठों कन नया नया नौकरी मिललों छै, ऐवो करतै केना। प्राती के रहलौ सें की। घोंर हवांक छै, तें दीदी केना नै डरतें होतै। आय बिल्ली के कानवों भी तें अलगे किसिम के छै, ठीक होने, जबें विनय बुखार सें हफड़ी रहलों छेलै, आरो एक ठो करकी बिल्ली परछत्ती पर रही-रही कें कानी जाय। ठीक ओकरे बिहानिये तें विनय नै रहलों छेलै। ई सोचत्हैं, ऊ धड़पड़ाय कें उठी गेलै, ई सोची कि वैं रात जेठे के ऐंगना में बितैतै; यैसें आरो कुछ होतै-नै-होतै, दीदी कें थोड़ों टा बोंल तें मिलवे करतै नी।

अभी ऊ आपनों ऐंगना सें बाहर निकलवे करतियै, कि झिटकिया, डेढ़िया पार करी ऐंगना में आवी बोललै, "काकी, तोहें हमरा बोलैलें छेलौ की? ऐतियै तें हम्में विहानिये, मतर सँझकी निर्गुणियां हमरा सें कहलकै, तें

झटकलों-झटकलों आवी रहलों छियौं। की बात छै, काकी? कथी लें याद करलौ?''

''कुछु खास नै। खाली गामों के हाल-समाचार जानै लें। आबें तें एक-दू घोंर छोड़ी कें केकरौ कन जावों-आवें नै पारै छियै।'' सत्ती नें असली बात कें एकदम छुपैतें हुएँ कहलें छेलै।

''गामों के हाल-समाचारे की, जेन्हों पहलें छेलै, इखनियो होने छै। हों, सुनै में ऐलों छै, वैद्य काका के तबीअत ठीक नै छै; आबें केन्हों छै? तोरों खबर मिललै, तें सोचलियै, एक पंथ, दू काज। तोरो काम करी ऐवै, आरो वैद्य काका के हालो समाचार जानी लेवै। आयकल दुआरिये पर एत्तें काम बढ़ी गेलों छै, कि हिन्नें-हुन्नें निकलै के फुर्सते कहाँ मिलै छै, काकी।''

''तोरा, जेठ के तबीयत खराब होय के बारे में के कहलकौं?'' एतना पूछी सत्तीं आपनों बायां हाथ के पांचो अंगुली मुंहों पर राखी लेलें छेलै।

''कहतै के, काकी, सौंसे गाँव में के नै जानी रहलों छै। गाँव भरी सें पूछतें ऐलों छियै। हुनकों बारे में कोय एक-दूसरा सें नै पूछतै, हेनों हुएँ पारें की? आरो तोरा है बात मालूम नै छौं कि हुनी दू-तीन दिन सें अन्न-जल भी लेना छोड़ी देलें छै।''

''की?'' सत्ती के आँख आरो अंगुली सिनी के बीच दोनों ठोर फैली कें रही गेलों छेलै। ऊ घुमलै आरो देहरी पर थकथकाय कें बैठी रहलै।

''की, तोरा है सब नै मालूम छौं, काकी?'' झिटकियां फेनु सें आपनों बात दोहरैलें छेलै।

''के कहतै, झिटकी ! केकरौ सें मिलवे करै छियै कहाँ, जे कुछु सुनैतै। पता नै की होय गेलों छै हमरा; जेना केकरौ पर कुछ विश्वासे नै रही गेलों रहें। जेकरा आपनों लाल दा हेनों भाय्ये पर विश्वास नै रहें, ऊ भला केकरा पर विश्वास करें पारें ! मतर तोरा तें हमरा पर विश्वास छौं नी, झिटकी?''

''की बोलै छौ, काकी! हम्में आपना पर विश्वास करौं कि नै करौं, तोरा पर विश्वास नै करौं, हेनों तें हुएँ नै पारें।'' वैंने आपनों दोनों कान दोनो हाथों सें पकड़तें हुएँ कहलें छेलै।

''तें, एक काम करों झिटकी, तोहें आय राती सें यही घरों में

रहियों। अभी दोनों ऐंगनों में कोय मरद नै छै, तोहें रहवौ, तें यहू घोंर देखाय जैतै, आरो दादाहौ के। दादा के तबीअत भले खराब रहें, मतर दीदी के तें प्राण निकलतें होतै—की करें, की नै करें। हम्में दू-चार दिनों वास्तें मनार सेवी आवै छियै। हमरा पूरा विश्वास छै, भगवान मसूदन हमरों लाज राखी लेतै, दुनियाँ के सब चीज डिगें पारें; मनार नै।'' सत्ती नें आपना पर एकदम नियंत्रण रखतें हुए कहलें छेलै।

दरअसल हेनों सब दुख तें वैं जुआनिये सें देखतें ऐलों छै, यै लेली घोर विपत्तियो में अपना पर नियंत्रण पावै के हुनर सीखी लेलें छेलै।

''काकी, अभी रात बीतै में दू पहर बाकी छै, तोहें इखनी आराम करों, आरो हम्में ऊ ऐंगना में चल्लों जाय छियौं। कुछ सोचिये कें घरों में कही देलें छेलियै कि कोय विशेष काम होलै, तें नहियो लौटें पारौं। काकी, तोहें कोय चिंता नै करों। कसम खाय कें कहै छियौं, हम्में पाँचो रोज, वैद्य काका के दुआरिये जोगतें रहवै, पाँचे की दसो रोज—जब ताँय तोहें लौटी नै आवै छों। होना कें आबें कोय भगवानों सें की कुछु मांगना, जेहनों कि काका के बारे में सुनलें छियै; तबें, सुनै छियै, मसूदन भगवान के दुआरी सें कोय निराशो नै लौटलों छै।'' ई कही कें झिटकिया, डेढ़िया सें बाहर निकली आशु बाबू के ऐंगनों आवी गेलों छेलै।

(२६)

सत्तीं आकाश दिस देखलकै। सरंग गजगज तारा सें भरलों होलों छेलै, आरो अन्हारो होने। ऊ आय आपनों मुँहों में कुछु अन्न नै राखलें छेलै, होन्हौ कें आय बुधवार छेकै, ओकरो वास्तें उपवास के दिन।

यही बुधवार के दिन छेलै, नै जानौं कहाँ सें हौ औघड़ ओकरों दुआरी पर आवी गेलों छेलै। चुट्टा ऊपर उठाय कें खनखनैलें छेलै, मतर सत्ती कें देखिये ऊ लौटी पड़लों छेलै, ई कहतें, ''बेटी, तोरों चित्त में एखनी कत्तें उथल-पुथल चली रहलों छौ आरो हेनों हालतों में हम्में तोरों देलों

अन्न ग्रहण नै करें पारौं। '' ई कही ऊ लौटवे करतियै कि घुमी कें फेनु बोललै, ''बेटी, तोहें आपनों ई हालतों से तभिये निजात पावें पारें, जबें तोहें बिना नागाहै बुध कें उपवास राखलों करवै। आरो सुनों, माँटी केरों चिंता नै करें; माँटी में तें सब्भे कें मिलना छै। तोरों पास तें सबसें बड़ों धोंन, तोरों छोटका-बड़का बेटा छेवे करौ, बेटी—ठठरी उठै तांय तोरों सेवा करैवाला। अलख निरंजन।'' आरो वहा दिन सें मन-मस्तिष्क के शांति वास्तें सत्ती बुधवार कें जल आकि शर्बत छोड़ी कें कुछुवो ग्रहण नै करै छै। तखनिये कोय आवाज सुनी कें ओकरों देह भुटकी गेलों छेलै।

सटाक, आरो फेनु केकरो ससरी कें धम्म सें गिरै के आवाज। सत्ती बुझी गेलै—झिटकियां जरूरे ऊ करकी बिल्ली पर साटों चलैलें होतै, आरो छपरी सें ससरी कें ऊ जमीनों पर गिरी पड़लों होतै।

''चलों घरों में शांति तें रहतै, अलखनों हेनों कल्हे सें कानी रहलों छेलै'' ऊ मनेमन बुदबुदैलै, आरो फेनु सरंग दिस देखलकै। अभी तारा के टिमटिमैवों आरो अन्हार में कोय फरक नै पड़लों छेलै। कि तखनिये बगरो सिनी उतरवारी कोठरी में जोरों-जोरों से चीखना शुरू करी देलकै।

''अगे माय, कहीं करकी बिलैया बगरो कें तें नै दबोची लेलकै! दू दिन पहले तें परछत्ती के खोता में बगरो-बच्चा सिनी के चीं-ची करतें सुनलें छेलियै, हुएँ सकें छै, मौका देखी बिल्लिया झपटी पड़लों रहें, धरान सें सटले तें छै खोता। धराने पर चढ़ी के धरी लेलें होतै बगरों कें।'' एतना सोचना छेलै, कि ऊ सबकुछ भुलाय कें सीधे उतरवारी घरों दिस लालटेन लैकें ध ातपतैले भागलै।

कोय्यो तें नै रहै छै, उतरवारी घरों में। एक दिसों के दीवार हेने ढनमनाय गेलों छै कि कखनियो भसकी जावें पारें आरो वहा दीवारी बल्लों पर धरान टिकलों होलों छै, से ऊ घरों में राती कोय नै सुतै, कोय बहुत जरूरिये काम होलों, तें कोय ऊ घोंर घुसै छै।

सत्तीं बगरो-बच्चा दिस लालटेन के रास उसकाय कें देखलकै, तें देखलकै कि बगरो के एक बच्चा नीचें भूसा के ढेरी पर गिरी गेलों छै, आरो दू टा बगरो हिन्ने-हुन्ने उड़ी कें शोर मचैवो करी रहलों छै।

ओकरों धड़कन इस्थिर होलों छेलै। वैंनें लालटेन कें एक दिस राखी कें बड्डी सावधानी सें बगरो-बच्चा कें चुटकी में लेलें छेलै आरो भूसा

के बोरिया पर संभारी कें आपनों गोड़ राखलें छेलै; फेनु दीवारी के सहारा लेतें ठाढी होय गेलों छेलै।

बड्डी संभली कें वैं चुटकी के बगरो-बच्चा कें खोता में उतारी देलें छेलै, आरो वहा रं दीवारिये के सहारा लेतें बोरिया पर सें नीचें उतरियो गेलों छै।

वैं लालटेन उठाय कें देखलकै, खोता में चीं-चीं के आवाज फेनु सें हुएँ लागलों छेलै, आरो धरानी पर बैठलों दोनों बगरो शांत होलै। बारी-बारी सें खोता दिस उड़ी के फेनु धरानी पर बैठी जाय। सत्ती कुछ देर तांय ई सब देखत्है रहलै आरो फेनु लालटेन देहरिये पर राखी कें भोरकवा उगै के प्रतीक्षा करें लागलै।

(२७)

पहाड़ों पर रहतें हुए सत्ती कें तीन दिन बीती रहलों छै। गांवों में ई बातों के लैकें खूब गलगुदुर होय रहलों छेलै, कि आखिर सत्ती बोदी गेलै, तें गेलै कहाँ? ई बात तें गाँव के अधिकांश लोगें जानै छै कि आबें बोदी वास्तें हुनकों लाल दा के द्वार बंद होय गेलों छै, आरो कोय भाय कन एत्तें दिन ठहरी जैवों, है तें हुऐ नै पारें। बेसी-सें-बेसी एक रात, दू रात। तीन-चार रोज तें बस लाले दा कन, आरो आबें वहू द्वार बंद। तें आखिर गेलों होतै कहाँ?

आरो सबमें ओत्तें तें नै, मतर साधो आरो सिद्धी के मंडली में ई बातों के लैकें दिन-रात चर्चा होय रहलों छै। जत्तें किसिम सें जे-जे अनुमान लगैलों जावै सकै छै, सब लगैलों जाय रहलों छै—

"हमरा तें लागै छै कि आपनों भाय के मोंन-मिजाज के खोज-खबर लैलें आपनों समधियारों में होतै, सीधे लाल दा कन तें जावें नै पारें, वहां सें हिनकों लालदा के घोंर छेवे करें कत्तें दूर, बस कोस भरी, अमर बतैलें छेलै, आरो बोदी तें पैदले पाँच कोस बूलें पारें। दिने दिन अपनी बड़की

बोदी सें मिली कें समधियारों लौटी जैतै होतै। पर समधियारा में कोय रहौ पारें कत्तें। बहुत, तें पाँच-छों रोज, वहू नै। देखियैं नी दसमे रोज यहाँ दिखतै, सत्ती नैकी बोदी।'' माधो मिसिर नें कान्हा सें नीचें लटकी ऐलों जनेऊ कें ठीक सें कंधा पर रखतें कहलकै, तें गुलगुलिया, भदेवा, अदरी आरो अनारसी नें एक्के साथ कहलकै, ''हुएँ पारें छै।''

कि तखनिये मंगलिया दायां हथेली कें ऊपर करतें कहलकै, ''रुकें, रुकें। एत्तें जल्दी निष्कर्ष पर नै पहुँची गेलों करें। जेना लागै छै, तोरा सिनी कें ई बोदी कें मोंन-मिजाज के बारे में कोय पते नै छौ। नैकी बोदी, कविराजिन बोदी नै छेकै—कपली गाय रं सिद्धि। सत्ती बोदी के मनों में बहुत कुछ उमड़तें-घुमड़तें रहै छै, जेकरा सिरिफ हुनिये जानै छै।''

''ई तें ठिक्के कहलैं'' सिरचनै समर्थन में मूड़ी हिलैतें कहलें छेलै, ''ऊ दिन देखलैं नै, कविराज दा, कत्तें समझैतें रहलै, नैकी बोदी कें, कि पंचामृत बाबू कें पंचैती करै वास्तें बुलाय के जरूरते की छै, मतर मानलें छेलै की? लै आनलें छेलै आपनों लालदा कें। वहू कत्तें छोटो बात वास्तें—डाँड़ हौ दिशों सें नै, है दिसों सें हुनकों खेत में जैतै।''

''हौ दिन वैद्य दा के मनों कें कत्तें धक्का लागलों छेलै, मतर, सब कुछ सही लेलें छेलै।'' सिद्धि बहुत देर के बाद आपनों मुँह खोललें छेलै, जे अभी तांय साधो सें बतियाय रहलों छेलै।

साधो नें मूड़ी कें कंठो तांय दू-तीन बार लानतें-उठैतें सिद्धि के बात के समर्थन करलें छेलै, तें कपिल बोली पड़लै, ''मूड़ी गांती कें की हामी भरी रहलों छैं, खखसी कें कहै नी 'हों।'' डोंर लागै छौ, नैकी बोदी सें की? की भोजों में खैलों मछली कुछ बोल्है नै दै रहलों छौ?''

''यैमें डरै के की बात होलै। जे सच छेकै, ऊ तें सच्चे छेकै, ओकरा हम्मू कहवै, तहूं कहवैं, आरो वैदराजिन बोदियों कहतै।''

''सिद्धि, गलत की कही रहलों छै'' सिवनें सिद्धि के बात लोकतें कहलकै, ''है ठीक छै कि सत्ती बोदी के वेवहार हमरा सिनी के प्रति कभियो भी, कटियो टा भी खराब नै रहलै, मतर यही बात जेठ आकि जेठानियो के प्रति हुनकों रहलै, है के कहें पारें। वसोवासी जमीन के बेचै वक्ती ओत्तें जे कुछ होलै, केकरा सें छुपलों छै।''

''जमीनवाला विवाद रुकवे कहाँ करलों छै। आबें सवा बीघा जे

जमीन बचलों छै, ओकरै पर नैकी बोदी के दाँत गड़लों छै, आधों हिस्सा के बखरा चाहै छै। है बात कें लैकें भीतरे-भीतर वैदराजिन बोदी की कम दुखित छै, बोलै कुछ नै छै, ई अलग बात छेकै।'' साधूं, अबकी मूड़ी ऊपर करतें कहलें छेलै।

''सुनै के तें यहाँ तक सुनलें छियै, महीना भरी पहिलें हुनी झिटकिया कें बोलाय कें कहलें छेलै, जोर के धार जेना हुऍ तेना, खेतों तांय लै जो।' अजनसिया बोललै, तें अब तांय सब के मुँह ताकतें गुलगुलियां बीचे में टोकतें पूछलकै, ''है तोरा के कहलकौ? भदेवाहैं कहलें होतौ, एक नम्बर के लुतरलग्गा। की एकरा झिटकियां आपनों मुँहों सें बतैलें छै आकि सत्ती वोदियें? झूठ-झूठ के केकरौ पर ढेंस आकि लांछन लगैवौ ठीक नै। बेसी तोरा सिनी बोलवे, तें पुरवासखी होय जैतौ। कोनो कल्पवास पर नै गेलों छै, नैकी बोदी।''

पुरवासखी के बात सुनत्हैं सब चुप्पी धारण करी लेलें छेलै, तें गुलगुलिया आगू बोललै, ''हों एतना जरूरे कभियो कहलें छेलै कि हौ जोर, जों ऊ जमीनो तांय केन्हौ कें होतियै, तें खेत के किस्मते बदली जैतियै। है बात तें सत्ती बोदीं हमरै सें कहलें छेलै। है कोय चोरका बात थोड़े छेकै। तें, एकरों अरथ ई कहाँ निकलै छै कि हुनी झिटकिया सें जोर वहाँ तायं बहवाय के बात सोची रहलों छै। अरे, तोरासिनी नै बूझें पारवैं नैकी बोदी कें। एत्तें दुक्खों के बादो केन्हों इस्थिर छै। कटलों ठूंठ गाछ के देखलें छै, जेकरों खोड़ासिनी में सुग्गा-मैना आरनी हुलकतें रहै छै—बोदी कें वहा समझें।'' ओकरों बोली में झाँस आवी गेलों छेलै।

''गुलगुलिया, जरा नरमैय्ये कें बोलवैं, तें कुछु घटी जैतौ की? अरे, एक बात तें तहूं सोचें, जबें हुनी है बात तोरा सें कहें पारें, तें एकरा में कोंन अचरज कि यहा बात झिटकिया कें नै कहलें होतै। अच्छा, ई तें बताव कि नैकी बोदी लें पहिलें तोहें आपनों कि झिटकिया?'' मंगलिया गुलगुलिया के चेहरा पर आपनों नजर गड़ैतें हुऍ कहलें छेलै।

''से तें नहिये।''

''तें, फेनु तोहें पच्छ कथी लें लै छैं !''

''पच्छ के बात नै छै, यहाँ तें बाते पर बात निकली रहलों छै नी। जे असली बात छै, ऊ तें हटी चुकलों छै'' गुलगुलिया नें विषय कें घुमैटतें

हुऍ कहलें छेलै, ''बात तें छेलै कि आखिर नैकी बोदी गेलों होतै कहाँ? हमरा तें लागै छै कि हुनी नै तें समधियारा में होतै, नै आपनों लाल दादाहै कन होतै, होतै हुनी हिन्नैं-हुन्हैं कहीं।''

''हिन्नैं-हुन्हैं की? बँसबट्टी आकि बारी में?'' अरदसिया दायां हाथ के औंगरी सब चमकाय कें बोललें छेलै।

''अरे मुरुख, हिन्नें-हुन्नें के मतलब छेकै, या तें बौंसी में होतै या फेनु मनार पर्वते पर हुऍ पारें। याद छौ नी, जबें विनय होनों बीमार पड़लों छेलै, तें दिन में एक-दाफी मनारों पर जरूरे चल्लों जाय। मसूदन मन्दिरों के पिण्डा पर माथों टेकै लें।''

''तोरों बात सहियो हुऍ पारें, मतुर तखनी तें कारण छेलै; बेटा के प्राण के सवाल छेलै; इखनी भला कथी लें जैतै?'' अरदसियां पुछलें छेलै।

''वैद्य दा लेली !''

''भला वैद्य दा लें कथी लें जैतै? कोंन मारे, हुनकों प्रति सत्ती बोदी के मनों में कोय्यो सुभाव छै !'' कपिल नें टोकलें छेलै, तें गुलगुलिया बोललै ''यहा तें तोहें नै समझें पारलें छैं, कपिल। कहलियौ नी, नैकी बोदी के मनों के गति तें देवताहौ नै समझें पारें। एकदम बदरकटुओं रौद। तबें यहू छै कि वैद्य दा लेली हुनकों मनों में जे श्रद्धा छै, ऊ फलगु नद्दी के पानी रं बूझें। दिखावै तें नै छै, बस बहै छै भीतरे-भीतर। आरो कैन्हें नी बहतै, जखनी लछमी दा के इन्तकाल होलों छेलै, वैद्य दां की रं दोनों घोंर संभाली लेलें छेलै, जरियो टा भेद नै करलें छेलै। है बात जबें हमरै सिनी नै भूलें पारलों छियै, तें नैकी बोदी की भूलें पारतै। तखनी हमरों सिनी के उमरे की होतै। बेसी सें बेसी अमर सें साल दू साल बड़ों। ''खैर जे भी हुऍ'' माधो बातों कें संक्षिप्त करतें कहलें छेलै, ''भगमानों सें मनावें कि तोरो सत्ती बोदी मनारे पर रहें, आरो हुनी आपने मनों से घुरियो आवै, कैन्हें कि केकरो मनैला आकि बुलैला पर तें हुनी ढेर आवैवाली छै, आरो जों सचमुचे में हुनकों बारे में जानै के किंछा राखै छैं, तें चल झिटकिया लुग। सब नहियो जानतें होतै, तें कुछ-नै-कुछ जरूरे जानतें होतै।''

''जानना तें चाहवे करियों।'' अजनसिया ई कहतें आपनों चूतड़ झाड़तें उठलों छेलै, तें सब्भे उठी कें दखिने दिस सिधयाय गेलों छेलै।

(२८)

सत्ती धड़फड़ाय कें उठलों छेलै। ओकरा यही लागलों छेलै कि चारो दिसों सें दस प्रेत ओकरा हे पकड़ै लें हाथ फेंकतें रहें।

''की होलौं, दीदी?'' मठ के एक वैरागन नें ओकरा ई किसिम सें चौंकतें देखी कें पूछलें छेलै, ''की कोय बुरा सपना देखी लेलौ की? हम्में देखी रहलों छेलियै कि तोहें बैठले-बैठले घुमनियाय रहलों छेलौ। दिन भरी, है गुफा सें हौ गुफा के देवता कें पूजलें फुरै छौ, ओकरा पर एक दाफी शिखर के मनीरों में जरूरे जोंल चढ़ाय आवै छौ, भला कोय केना नै थकें ! ओकरा पर है वयस, कै दाफी तोरा कहैलियौं कि आश्रम में रही कें सबकें ध्यान करी लेलों करों। चन्दर बाबाओं तोरा कै दाफी सफा-सफा कही कें समझैलकौं, मतुर तोहें सफा कें जानाहै लें नै चाहै छौ।''

वैरागन बहुत कुछ बोललों गेलों छेलै, मतुर सत्ती कुछ सुनतियै, तबें नी। वैं एक दाफी मनारों के ऊपर नजर दौड़लकै, आरो लम्बा डेग भरतें पत्थल के बनलों सीढ़ी पर झब-झब चढ़ें लागलै। पता नै, केना कें ऊ नरसिंह गुफा लुग पहुँची गेलों छेलै, आरो वही सें पत्थले पर बनलों छोटों-छोटों सीढ़ी कें पार करी योगमठ के नगीच आवी गेलै। वाहीं सें वैं दायां सें बायां, पूरे दक्खिन कें देखलकै, बड़ी निरयासी-निरयासी कें; वहाँ कोय बोहों आवै के निशान नै छेलै, चीर नद्दी तें होने शांत बनलों बही रहलों छेलै, आरो पार के बस्ती, टोला, गाछ, बिरिछ सब-के-सब वहा रं छेलै, जेना बिहैला के बाद वैं पहिलों दाफी ई मनारों सें देखलें छेलै।

वैं दोनों हाथों सें दोनो आँख हौले सें मलतें हुएँ दौलतपुर कें देखलकै, मने-मन बोललै, ''यहाँ सें हमरों ससुरालो केन्हों साफ-साफ दिखाय छै। बस्ती भले नै दिखावै, हौ विशाल बोंर गाछ सें तें हम्में आपनों घोंर कें पहचानै सकै छी। हुनी कहलें छेलै, जो यहाँ सें हम्में आपनों गाँव के कोय आदमी कें हाँक लगैयै, तें ऊ आदमी हमरों हाँक सुनी लेतै।

''आरो जों कुछु होनो होलों होतियै, तें कुहराम नै मची गेलों होतियै। सौंसे मनार आरो एकरों सबटा गुफाओ कुहरामों सें गूंजतें होतियै। जरूरे हमरा भरम होय गेलै, तखनी भरमैलों नै होवै, नींदे लागी गेलों होतै, आरो हौ सब देखी लेलियै।'' निचिन्त रं होलै तें आहिस्ता-आहिस्ता चली कें

योगमठ के पथल-छतरी के नीचें बैठी गेलों छेलै।

''बाप रे, हौ केन्हों भयानक सपना छेलै।'' वैं मठ के दीवारी सें कोकड़ी टिकैतें हुएँ, कुछुवे देर पहलकों दिरिश कें याद करलकै; ''देखत्हैं, देखत्हैं आकाशों में की रं घन्नों-घन्नों मेघ घुमड़ी ऐलों छेलै, जबकि अखाड़ो के अभी दूर-दूर तांय दरश नै छै। झोंड़ पड़ना शुरू होलै, तें चीर नद्दी तें देखत्है-देखत्हैं खौलें लागलै। कम-से-कम ससुराल में गोड़ राखला के बाद सें तें वैं हेनों बोहों चीर में कभियो नै देखलें छेलै। बोहों आवै छै जरूरे, गाँव आरो बस्ती कभियो नै डुबैलें छै, मतुर आयकों सपनावाला बोहों तें भगवान मसूदने जानै कि सतयुगों में होने ई नद्दी उमड़ै छेलै कि नै। उमड़तौ होतै, की पता। हुनी बतैलें छेलै, ई चीर वहा क्षीरसागर छेकै, जै पर भगवान विष्णु के शेष नाग के शैय्या लागलों रहै। क्षीर सागर सूखतें गेलै, आरो नद्दी बनी गेलै। तें, ई नद्दी जों वही रं फेनु सें सागर बनिये उठै; प्रकृति के कोंन ठिकानों। कखनी खाई पहाड़ बनी जाय आरो पहाड़ कखनी खाई। तबें ऊ सपना झूठ केना हुएँ पारें? आयकों सपना में देखलों, कल आँखी के देखलों बनी जाय'' आरो एतना सोचत्हैं सत्ती फेनु सें सीधा होय कें बैठी गेलै।

''हे भगवान, केन्हों ऊ दृश्य छेलै'' की हेनों हुएँ पारें—ई सोचत्हैं ओकरा कंपकंपी छुटी गेलों छेलै, ''चीर के बोहों पहलें डाँड़ी से होलें ऊ जोर तांय पहुंचलों छेलै आरो फेनु सब आरी-बारी तोड़तें पहलें तें खेतों में घुसलों छेलै आरो वहीं सें ऐंगना में बोहों के लहर उतरना शुरू होय गेलों छेलै। लगै छेलै; जेना तलवार के धार रहें, गाछ-बिरिछ कें काटतें घरों कें तरी सें ही काटी कें राखी देलें छेलै।

''जेठानी ऊ धार में बहें लागलों छेलै, ई देखी टुनुआ के कनियैनी हेलतें हुएँ, हों, ओकरा हेलवे नी कहें पारौं, दीदी कें भरी पाँजों पकड़लें छेलै आरो ठामें के आमों गाछी कें धरी लेलें छेलै। हमरों दिस केकरों ध्यान छेलै, जों दादां नै देखतियै, तें तालाहै पुल में समाय कें रही जैतियौं। हौ तें जेठों दां आपनों धोती कस्सी कें बाँधिये पुल में छलांग लगाय देलें छेलै, आरो हमरा बचाय लेली, गिरलों बांस लैकें हेलें लागलों छेलै। भैसूर नगीच आवी रहलों छेलै, तें देहों पर कपड़ा झब-झब राखें लागलियै, कि नींद खुली गेलै।''

सपना के ऊ सब बात याद करी कें सत्ती जानें कोंन दुनियां में

हेराय गेलै—अमर के बाबू देह तेजी देलें छेलै। तखनी हमरों की रं दशा होय गेलों छेलै, है बात सालो बाद देवदासी ओकरा बतैलें छेलै, नै देहों के सुध, नै कपड़ा के; बच्चा-बुतरू तें हमरों हालत देखिये कें मुँह सुखैलें रहै आकि कानल्हैं रहै। हौ वक्ती जेठे दा तें आपनों घरों के चिंता छोड़ी, दीदी कें भेजी-भेजी, हमरों खोज-खबर लेतें रहै। दीदी कें भेजै की, हुनी तें दिन-रात हमरे लुग बैठलों रहै। जेठों दा के भेजलों दबाय दीदिये कें पिलाना छेलै, खिलानौ छेलै, तें हुनकै। तंत्र-मंत्र सें लैकें किसिम-किसिम के दवाय-दारू। देवदासी बतैनें छेलै—है कहों कि की नै जेठें तोरा लें करलें छेलौं, तबें तोहें रास्ता पर ऐलों छेलौ।''

''मतर है कोय बतैलों बात तें नै छैकै, ऊ तें हमरों आँखी सें देखलों छेकै। लोगें तें यहा कहै छेलै— ई तें केकरो नजरी के बाण लगलों छेकौं, माय की ठीक हुऍ पारथौं, कोय कुछ, तें कोय कुछ। माय के सौंसे देह केन्हों चित्ती सें भरी गेलों छेलै! हम्में लाल दा सें कही-सुनी कें माय कें दौलतपुर लै आनलें छेलियै। जेठें देखलें छेलै, बड़ी देर तांय, आरो फेनु अमर कें बोलाय कें कहलें छेलै—कनेली पंडित कें हमरों नाम कहियैं, यहू कहियैं कि एक बड़ों रं कंतरी, मोटों दलों के, बड़का बाबू मांगलें छौं, कल्हे भेजी दियौ! दोसरे दिन एकदम भोरे-भोर माय वहा कंतरी पर अमर के सहारा लेलें चुकूमुकू बैठी रहलों छेलै। जेठें मने-मन मंतर पढ़ना शुरू करलें छेलै आरो एकरों साथे कंतरी रसें-रसें आपनों जग्घा पर घूमें लागलों छेलै, एकदम होने; जेना कंतरी मट्टी में गढ़लों घूमतें रहें। आपनों जग्घा पर कंतरी ओत्ते देर घूमी कें रुकी गेलों छेलै, जत्तें देर पाँच बेरी जोरों-जोरों सें साँस लै आरो छोड़ै में लागै छै। चार दिन तांय हेने होतें रहलों छेलै। पाँचवों दिन कंतरी घूमी कें चार टुकड़ा में बँटी गेलों छेलै आरो दोसरों दिन के बिहानिये सें माय के शरीर केला के गब्भा नांखी चिकनों हुऍ लागलों छेलै। ई तें हमरों आँखी के देखलों छेकै। माय मरै सें बची गेलों छेलै, तें जेठे के पुण्य-प्रतापों सें आरो देवदासी कहै छै—जों हम्मू बची गेलियै, तें जेठे के कारण। भला वैं कथी लें कुछ लगाय-भिड़ाय कें कहतै?''

देवदासी के बात याद ऐल्हैं ओकरा लागलै कि कड़कड़िया धूप पर दूर-दूर तांय मेघ बिछी गेलों रहें, पानी तें नै, मतर बरफे रं शीतल हवा चौवाय बनी कें बहें लागलों रहें। कि तखनिये ओकरा खयाल ऐलै—की रं

जेठें खाना-पीना छोड़ी देलें छेलै, कमजोरी सें मुँह तांय नै खुलै छै, आरो हम्में यहाँ भगमानों सें दादा के औरदा मांगी रहलों छी, जबेंकि वहाँ रही कें हमरा सेवा करै के जरूरत छै। इखनी तें दीदियो कें हमरों होने जरूरत छै। आरो हम्में मनारों पर बैठी कें की करी रहलों छियै। सत्ती बुदबुदैलै, ''हे भगवान. ..भला कथी लें, की-की सोची, हम्में की-की करतें रहलियै। हमरों सोभाव हेन्हों छै कि जे हमरा लें एत्तें सोचै छै, हम्में ओकरे विरुद्ध बनी जाय छियै। नै तें की लाल दा के मोंन हेना उचाटतियै, आरो जे बेटा लें हम्में ऊ सब करलियै, वही कोंन हमरा सही बतैलकै ! तबें सही तें जेठे नी। हुनी हमरों की-की बात नै सहलकै, मतर कभियो नै आपन्है सें, नै दीदिये सें कुछ कहवैलकै। आरो एक हम्में, कि आपनों बात ऊँच्चों राखै के फेरा में सब कुछ अनसुना करतें रहलियै। यहाँ तांय कि झिटकिया सें, जमीन तांय जोर खोदवाय के भी बात सोची लेलियै....कहीं हेनों तें नै कि हौ बात बाते-बातों में झिटकिया करी देलें रहें कि डाँड़ कें छीलतें-छीलतें खेतों तांय पहुंचाय दैलें रहें—ई सोची कि वैद्य का के पूरा घोंर तें हुनकों बीमारिये लैकें ओझरैलों छै, आरो यही मौका छै.....हे भगवान जों केन्हों कें ई बात जेठ, आकि दीदिये कें मालूम होय जाय, तें हुनका सिनी पर की गुजरतै, कुछुवो गुजरें पारें...एतना सोचत्हैं ऊ योगमठ सें बाहर निकली गेलै आरो सीधे पापहरणी तांय उतरै लें हिन्ने-हुन्नें रास्ता सें तेज-तेज निकलें लागलै, जेना ऊ चलतें नै रहें, मनारों पर ससरतें रहें।

पापहरणी तांय ऊ एक्के साँस में उतरी ऐलों छेलै। पापहरणी देवी कें दूरहै सें सिर नवैलें छेलै आरो पूवारियेवाला रास्ता पकड़ी लेलें छेलै, जे रास्ता पकड़ी कें तीन दिन पहिलें ऊ यहाँ ऐलों छेलै। अभी तें गोधूली बेराहौ नै होलों छेलै; डेढ़ कोस नापाहै में कत्तें समय लागतियै, तभियो सत्ती आपनों चाल नरम नै करलें छेलै। सोचलकै—नाथ मंदिर होले निकली जांव, तें अच्छा।

अभी ऊ नाथ मंदिर के नगीच पहुँचलो नै होतै कि ओकरों सामना में वही औघड़ ठाढ़ों दिखैलै, जे कै साल पहिलें ओकरों दुआरी सें बिना कुछ लेलें लौटी गेलों छै। सत्ती ऊ दिस बढ़तियै, कुछ बोलतियै, एकरों पहिले ऊ बोली पड़लों छेलै, ''माँटी के की चिंता करवों, सबकें माँटीहै में मिलना छै। अलख निरंजन!'' एतना कही ऊ नाथ मंदिर के नीचे उतरी गेलों छेलै। सत्ती

सें कुछ बोललों नै गेलों छेलै, बस होन्हे झटकलों आगू बढ़ी गेलों छेलै।

(२६)

अय्ये वैद्य आशु बाबू कें पत्थ पड़लों छै। कै दिनों के बाद खाय के रुच होलै, तें मूंग के पानी रं दाल में पुरानों चौर के भात मत्थी कें हुनकों आगू में राखलों गेलों छेलै, आरो कल्हे-कल्हे उठाय कें हुनी वहा पीवी लेलें छेलै।

दीदी के पीठ पीछू सत्ती रात भरी बैठले रहलै, जेठानी गोतिनी के सहारा पावी झुपनियैतें रहली छेलै, मतर सत्ती नै सुतली छेलै; जेना नींद आँखी के चीज नै रहें, मनों के बात रहें। ई बीचों में ऊ आपनों ऐंगन गेवो करलै, तें जेना हुलकी भरै भर।

आय तेसरों दिन छेकै। भोरकवा उगै पर ऐलै, तें ऊ आपनों ऐंगन आवी गेलै। है बात छुपलों नै छेलै कि सत्ती घोंर लौटी ऐलों छै। जानी तें लेलें छेलै गाँवभरी तभिये, जबें ओकरों घरों के पिछुवाड़ी में झबरलों कचनार गाछी परकों चिड़िया सिनी खूब देर तांय चहचहैतें रहलों छेलै।

आरो जखनी बँसबिट्टी आरो बरों गाछी पर भोरकों चुनमुनैवों शुरूवो नै होलों छेलै, तखनिये सें सत्ती के ऐंगनों में टोला-टोला के जनानी सिनी के ऐवों-जैवों शुरू होय गेलों छेलै।

जे नै आवें पारलों छेलै, वहू ओकरों बात केकरौ सें नै केकरौ सें करी रहलों छेलै। पनसोखा माय तें सबकें एक्के बात कही रहलों छेलै—"वैद्य दा के मोंन तें वहा दिन सें बदलें लागलों छेलै, जोंन दिन नैकी बोदीं मनारों पर वास करै के बात हमरा बतैलें छेलै। गाँव के सीमाना पर पहुँची कें हुनी सुग्गी माय कें जगैलें छेलै, आरो कहलें छेलै, हमरों घोंर दिनों में एक झपट जरूरे झाँकी अय्यों, ननद। कुछ दिन मनारो पर वास लेली जाय रहलों छियै।"

पनसोखा माय के बातों के कोय विरोध तें नै करलकै, मतर

शिवरानी काकी, जरूरे बीचों में बोली देलें छेलै कि, ''जे भी हुएँ, बड़की बोदी के धीरज आरो हौ सेवा केना भुलैलों जैतै, जिनकों आँख एत्तें-एत्तें रात नै सुतें पारलै, नै जीहा कोय सुआद जानें पारलकै। कनियाय होय के धरम निभाय देलकै बड़की बोदीं। तबें यहू बात तें सोचैवाला छेवे करै कि जोंन दिन सत्ती बोदी के गोड़ मनार छोड़ी कें यहाँ पड़लै, वही दिन वैद्य दाँ पत्थ खाय छै, ई कुछ तें मानै जरूरे रक्खै छै।

सूरज दू बाँस सें ऊपर चढ़ी ऐलों होतै। इखनी सत्ती के ऐंगना में दू-चार बूढ़ी छोड़ी कें आरो कोय जनानी नै छै। बाकी जे लोग हिन्ने-हुन्ने देहरी, मचिया, खटिया पर बैठलों होलों छै, ओकरा में माधो, मंगलिया, अदरी, सिमरन, कपिल, सिद्धि, झिटकिया आरो साधो तें छेवे करै, ई सब सें अलग तीन हेनों लोग छै, जेकरा ई गाँव में पहिले दाफी देखलों जाय रहलों छै।

हों, अजनसियां जरूरे ई तीनों कें भोरियैं गाड़ी सें उतरतें देखलें छेलै, तखनी लोटा लेलें ऊ बँसबिट्टी दिस जाय रहलों छेलै। गोड़ तें छेलै बँसबिट्टिये दिस, मतर नजर वहा तीनो लोगों पर—कैन्हेंकि ऊ सब गामे दिस आवी रहलों छेलै। वैं यहू देखलें छेलै कि जखनी ऊ तीनो आदमी गाड़ी सें उतरलों छेलै, तखनी सुग्गी माय वही आमी गाछ के नीचें ठाढ़ी छेलै। सुग्गीमांय तीनो आदमी कें देखल्हैं, ऊ सब के नगीच गेलों छेलै आरो फेनु ऊ तीनो आदमी सुग्गी-माय के पीछू-पीछू बढ़ें लागलों छेलै।

तखनी अजनसियां ई बातों कें लैके कोय खास माथा-पच्ची नै करलें छेलै, ई सोची कें कि एत्तें बड़ों गाँव छै, केकरों कन कुटुम-उटुम ऐल्है रहै छै, तें माथों लड़ैवों की?

आरो इखनी जबें वहा तीनों आदमी कें यहाँ सत्ती बोदी के ऐंगन में देखलकै, तें ओकरों माथों ठनकलों छेलै। एक दाफी तें यहा सोचलकै कि हुएँ नै हुएँ, बोदी सवा बिघिया जमीनों कें हथियाय लेली ही कोय लब्बों व्यूह रचलों छै। यहू सोचलें छेलै कि बोदी ओकरा सिनी कें कोय-न-कोय फेर में जरूरे फसाय देतै—यै लेली यहाँ सें निकल्हें में भला छै। मतर केकरो हिलतें-डुलतें नै देखी कें वहू पुतला बनले रहलै, मतर सोचतें तें चलले गेलै कि कल ओत्ते भोररिये कैन्हें सत्ती बोदी भटकली-भटकली यशपुरा दिस चल्ली जाय रहलों छै? ई बात इखनी समझें पारी रहलों छियै।

ई बात खाली अजनसिया के मनों में नै उठी रहलों छेलै, वहाँ पर जौरों होलों मंगलिया, बदरी, सिद्धि आरो साधुओ के मनों में उठी रहलों छेलै, फेनु के कहें पारें कि माधो के भी मनों में यही बात नै उठतें होतै। मतर सब चुप छेलै।

चुप रहै के कारनो शायत यही बात होतै कि जों सवा बिघिया जमीन कें हथियैय्ये के बात छै, तें हेनाकें सबकें बोलाय के बाते कहाँ उठै छै, ऊ तें एकांतिये में गुपचुप-गुपचुप होतियै। तबें सत्ती बोदी के बारे में कुछुवो कहना मुश्किल; कखनी की करी बैठें।

कि तखनिये तीनो में सें एक आदमी ठाढ़ों होलै। ओकरो ठाढ़ों होत्हैं सबके ध्यान ओकरे दिस होय गेलै। सब एकदम शांत, सबके मुँह कुछ ऊपर होय कें खुली गेलों छेलै।

''तें आपने सिनी सुनियै'' ऊ आदमी बोलना शुरू करी देलें छेलै, ''होना कें तें दिवंगत मास्टर लक्ष्मी घोष के विधवा पत्नी स्वाति जी के इच्छा ही काफी छै, यैमें गाँववाला के सहमति आरो असहमति के कोय जरूरते नै छै; तभियो जबें हिनकों इच्छा छै, तें आपना सिनी के बीचों में, हिनको है वसीयतनामा पढ़ी कें सुनैलों जाय छै। होना कें आपने सिनी चाहों तें ई वसीयत खुद्दे पढ़ो पारै छों, जे कैथी अक्षर जानै छों; नै तें सब्भे के सहुलियत वास्तें हम्में संक्षेप में ई वसीयतनामा के बात सुनाय दै छियौं।

''ई वसीयत में लिखलों छै कि हम्में यानी स्वाति घोष आपनों स्वेच्छा सें आपनों हिस्सा के घोंर-बारी आपनों जेठानी के नाम करी रहलों छियै, आय सें ई घोंर आरो बारी के कोनो कोनाहौ पर हमरों आकि हमरों कोय संतानों के कोय्यो अधिकार नै होतै। चूँकि है सम्पत्ति हमरों मालिकें हमरों नाम करलें छै, यै लेली हमरों इच्छा के विरुद्ध हमरों कोय संतान कभियो कुछ नै बोलें पारें। ई हमरों अकाट्य आरो अंतिम इच्छा छेकै।'' ई कहला के बाद ऊ आदमी आपनों हाथ के कागज एक दिसों सें दूसरों दिसों के सब आदमी कें देखलें छेलै, जे कागज में सत्ती घोष के अंगूठा के दू-दू छाप छेलै।

कोय कुछ नै बोली रहलों छेलै, कुछ बोलै नै पारी रहलों छेलै। ऊ आदमी के बैठत्हैं सबके नजर एक कोना में बैठली स्वाति पर टिकी गेलै। सबनें देखलकै, वहाँ कोय सत्ती बोदी नै, तुलसी चौरा पर सूखी कें काँटों

बनलों तुलसी पौधा बैंगनी आरो हरा रंगवाला पता सें ढकमोरी ऐलों छै, जेकरों रोआं-रोआं रोमांचित। खिलखिलैलों शिशिर हाथ हिलाय-हिलाय कें सबके सुआगत में विभोर छेलै। ■■

डॉ. अमरेन्द्र : एक परिचय

■ काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, आलोचना की विधाओं में अब तक साठ से अधिक पुस्तकों का सृजन ।

■ तीन दर्जन से अधिक प्रसारित रेडियो नाटक की पांडुलिपियाँ इधर-उधर पड़ी हुई।

■ प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तक और ग्रन्थों में दर्जनों लेखों का प्रकाशन।

■ सम्प्रति : वैखरी (हिन्दी), पुरबा (अंगिका) पत्रिकाओं का सम्पादन ।

■ सम्पर्क : लाल खां दरगाह लेन, सराय भागलपुर-८१२००२ (बिहार) ।
मो. ८३४०६५०६७९, ९९३९४५१३२३
ई-मेल : dramrendra.ang@gmail.com
website : www.dramrendra.com